20 अगस्त, 2020 * वर्ष-29, पृष्ठ संख्या 60, अंक-8

राजस्थान सुजस

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

Rajas @75

स्वाधीनता पर एकाग्र

ध्वजारोहण

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने शासन सचिवालय में सचिवालय कर्मचारी संघ की ओर से आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर उन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए एवं पौधारोपण भी किया।

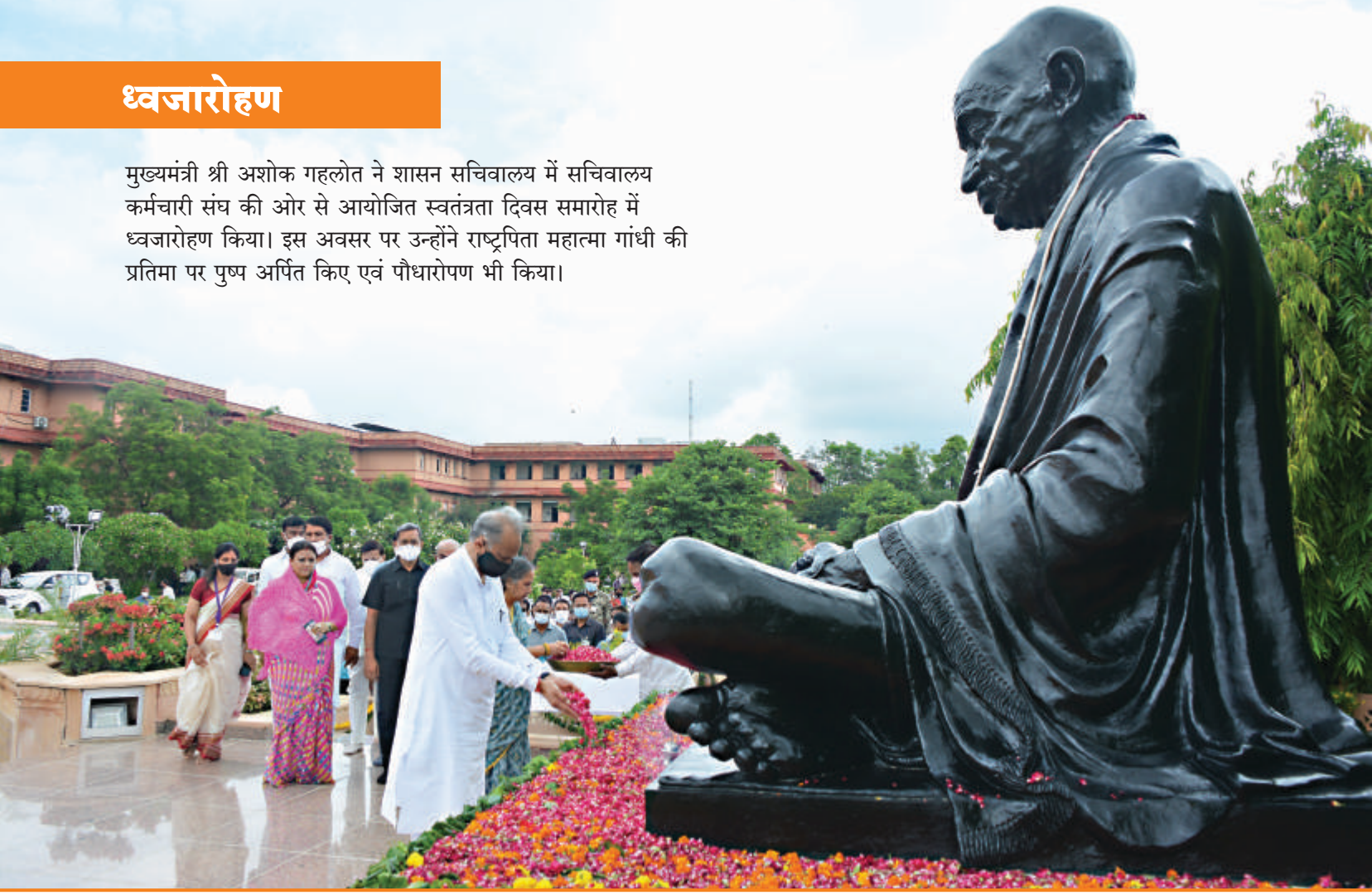

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने स्वतंत्रता दिवस पर 15 अगस्त को सिविल लाइंस स्थित मुख्यमंत्री निवास पर ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री कार्यालय एवं मुख्यमंत्री निवास के अधिकारी-कर्मचारी एवं सुरक्षाकर्मी भी उपस्थित थे।

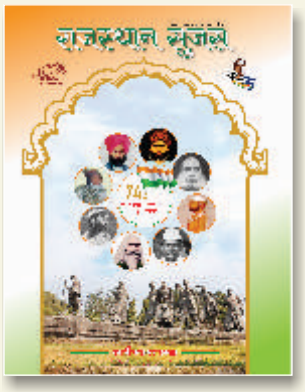

प्रधान सम्पादक
महेन्द्र सोनी, आईएएस
आयुक्त, सूचना एवं जनसम्पर्क

सम्पादक
डॉ. राजेश कुमार व्यास

उप सम्पादक
आशाराम खटीक

कला
विनोद कुमार शर्मा

आवरण
सुजस

राजस्थान सुजस में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं एवं आंकड़े परिवर्तनशील हैं। आवश्यक नहीं कि शासन उनसे सहमत हो। प्रकाशित आलेख एवं व्यक्त विचारों, तथ्यों की सम्पूर्ण जवाबदेही स्वयं लेखक की है। सुजस में प्रकाशित सामग्री का विभाग किसी भी रूप में उपयोग कर सकेगा।

ग्राफिक डिजाइनिंग
रेनबो ऑफसेट प्रिन्टर्स, जयपुर

सम्पर्क
सम्पादक
राजस्थान सुजस (मासिक)
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
सचिवालय परिसर
जयपुर - 302 005

e-mail :
publication.dipr@rajasthan.gov.in
editorsujas@gmail.com

Website :
www.dipr.rajasthan.gov.in

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान का मासिक

वर्ष : 29 अंक : 08 **20 अगस्त, 2020**

इस अंक में

लोकतंत्र को मजबूत बनाएं

07

इंदिरा रसोई योजना

11

आदिवासी क्षेत्रों का ...

13

सम्पादकीय	4
राज्यपाल ने किया झण्डारोहण	5
स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं	6
लोकतंत्र के समक्ष मौजूद चुनौतियां ...	10
इंदिरा रसोई योजना	11
आपदा से निपटने के लिए तैयारियों के निर्देश	12
जरूरतमंद वर्ग की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होगी	14
गंभीर मरीजों की समुचित देखभाल ...	15
1056 करोड़ रुपये लागत के कार्यों ...	16
मेडिकल एज्यूकेशन सोसायटी का ...	17
राजस्थान न्यायिक सेवा में एमबीसी ...	17
पुलिस, जेल व होमगार्ड को ...	17
कृषि क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ाने पर जोर	18
निःशुल्क दवा एवं जांच सैंपल लिए जाएंगे	19
चिकित्सा शिक्षा में करीब 300 करोड़ रुपये ...	20
राज्य सरकार की मंशा कोरोना से ...	21
'कोरोना डिफिटर्स' के प्लाज्मा दान ...	21
विश्व प्रसिद्ध सांभर झील संरक्षण	22
विभागीय विकास कार्य तीव्र गति से हों	22
देश का पहला-अनूठा जागरूकता अभियान	23
कोरोना से बचाव के लिए जन ...	24
स्वतन्त्रता संग्राम में राजस्थान	25
नसीराबाद से बजा था बिगुल ...	28
प्रजामंडल आंदोलन से प्रजातंत्र की नींव	31
स्वाधीनता संग्राम के भामाशाह योद्धा	36
अगस्त क्रान्ति	38
राजस्थान में भारत छोड़ो आन्दोलन	42
बीकानेर का अविस्मरणीय योगदान	44
राजस्थानी कवियों का योगदान	46
पत्र-पत्रिकाओं का योगदान	50
आजादी के राजस्थानी तराने	52
सागरमल गोपा की वीर गाथा	52
विश्व की सबसे बड़ी ड्राइंग	57

राजस्थान सुजस के आगामी अंक के लिए मौलिक, अप्रकाशित सामग्री भिजवायें। कृपया अपने आलेख एवं फोटोग्राफ सम्पादक को e-mail : editorsujas@gmail.com पर अथवा डाक से भेजें।

पूरब में स्वतंत्रता का ...

26

क्रांतिकारी बारहठ परिवार

32

मारवाड़ के आऊवा में ...

54

जन-कल्याण के लिए प्रतिबद्ध सरकार

प्रदेश में 74वां स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। स्वाधीनता दिवस उन शहीदों को स्मरण करने का पुनीत पर्व है जिन्होंने देश को आजाद कराने में अपनी जान तक की बाजी लगा दी थी। देश से ब्रिटिश साम्राज्य को पूरी तरह समाप्त करने के लिए ही देशभर में आजादी के लिए स्वतंत्रता सेनानियों ने आंदोलन किया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के नेतृत्व में 'भारत छोड़ो आंदोलन' से पूरा देश स्वाधीनता संग्राम के लिए एकजुट होकर आगे बढ़ा। युवाओं को भी बड़ी संख्या में इस आंदोलन ने अपनी ओर आकर्षित किया।

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित राज्यस्तरीय समारोह में ध्वजारोहण करते हुए आजादी के बाद देश के सामने आई चुनौतियों की चर्चा करते हुए परस्पर सद्भाव, भाईचारे से रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि समय-समय पर आई चुनौतियों का मुकाबला करते हुए हमारा देश निरन्तर आगे बढ़ता रहा क्योंकि हमारे लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हैं। लोकतंत्र यानी जनता का तंत्र। लोकतंत्र वह जीवन पद्धति है, जिसमें स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व के गुण समाहित होते हैं। भारतीय लोकतंत्र विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्रों में से एक है। लोकतांत्रिक व्यवस्था का उद्देश्य ही सुशासन के लिए काम करना होता है।

राजस्थान में इसी सोच के साथ मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में संवेदनशील, पारदर्शी एवं जवाबदेह शासन व्यवस्था के अन्तर्गत पिछले कुछ समय के दौरान आमजन के कल्याण के लिए निरन्तर कार्य किए गए हैं। कोरोना संक्रमण के विकट समय में राज्य सरकार ने गरीब, असहाय, बेसहारा एवं जरूरतमंदों को संबल देने के लिए राज्य सरकार ने अब तक 6 हजार करोड़ रुपये का विशेष आर्थिक सहायता पैकेज लागू किया।

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की पहल पर कोविड-19 संक्रमण के दौर में राजस्थान में बेहतरीन प्रबंधन कर आमजन को राहत पहुंचाई गई है। स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतरी के लिए निरंतर राज्य सरकार प्रयास कर रही है। इसी कड़ी में मुख्यमंत्री जी ने प्रदेश के विभिन्न जिलों में नए चिकित्सा महाविद्यालयों के संचालन के लिए गठित राजस्थान मेडिकल एज्यूकेशन (राजमेस) सोसायटी का पुनर्गठन करने और सोसायटी के तहत 210 पदों के सृजन का निर्णय किया है।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत जी के निर्देश पर प्रदेश के लोगों को कोरोना के संक्रमण की रोकथाम और बचाव के लिए भी विभिन्न माध्यमों से निरन्तर प्रेरित किया जा रहा है। कोरोना जागरूकता अभियान के अंतर्गत मुख्यमंत्री जी के निर्देशों पर सार्वजनिक माइक सिस्टम की मदद से लोगों तक कोरोना का बचाव संदेश बेहतर तरीके से पहुंचे, इसे भी सुनिश्चित किया गया है। राज्य के सभी जिलों में आमजन तक कोरोना जागरूकता संदेश पहुंचाने के लिए प्री रिकॉर्डेड ऑडियो से तथा व्यक्तिश: उद्घोषणा द्वारा जागरूकता संदेश का प्रसार किया जा रहा है। इस कार्य के लिए सभी जिलों में सेंट्रलाइज कोरोना जागरूकता संदेश भी भिजवाए गए हैं। कोरोना का खतरा अभी खत्म नहीं हुआ है। इससे बचाव हेतु बिना मास्क पहने घर से बाहर नहीं निकलना है, आपस में दो गज की दूरी बनाए रखनी है, बार-बार हाथ धोने हैं और सार्वजनिक स्थानों पर नहीं थूकना है। जागरूकता ही बचाव है, इसे ध्यान में रखते हुए ही राजस्थान को कोरोना से बचाव में हम सभी को भागीदारी निभानी है।

स्वाधीनता दिवस की 'सुजस' के पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं। आईए, समृद्ध, संपन्न और खुशहाल राजस्थान में हम सभी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

महेन्द्र सोनी
आई.ए.एस.
आयुक्त, सूचना एवं जनसम्पर्क

समृद्ध, विकसित और खुशहाल

राजस्थान के लिए हो सभी की भागीदारी

राज्यपाल ने किया झण्डारोहण

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने 15 अगस्त को यहां राजभवन में स्वतंत्रता दिवस के मौके पर झण्डारोहण किया। इस अवसर पर राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने राजभवन परिसर स्थित राजकीय विद्यालय के छात्र-छात्राओं को मिठाई वितरित की। कोरोना महामारी के चलते राजभवन में सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए संक्षिप्त एवं सादगीपूर्ण झण्डारोहण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र और प्रदेश की प्रथम महिला श्रीमती सत्यवती मिश्र ने स्वाधीनता दिवस पर राजभवन परिसर के उद्यान में पारिजात का पौधा रोपकर प्रदेश के राजकीय विश्वविद्यालयों में हो रहे पौधारोपण कार्यक्रम की शुरुआत की।

राज्यपाल श्री मिश्र का प्रदेशवासियों को 74वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं देते हुए संदेश भी जारी किया गया। संदेश में मुख्य रूप से लोकतंत्र की मजबूत नींव के साथ विश्वभर में भारत के ऊंचे मस्तक की चर्चा की गई है। साथ ही आजादी के पावन अवसर पर यह संकल्प लेने का आह्वान भी किया कि संविधान एवं लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप मन, वचन और कर्म से आचरण करने पर स्वाधीनता की सार्थकता सिद्ध हो सकती है।

राज्यपाल श्री मिश्र के संदेश में यह भी उल्लेख किया गया है कि कोरोना से मुकाबला करने में कुशल प्रबन्धन के कारण राजस्थान सरकार की सर्वत्र सराहना हुई। माननीय प्रधानमंत्री जी ने भी राज्य सरकार के कोरोना प्रबन्धन की प्रशंसा की। संदेश में प्रदेशवासियों का आह्वान भी किया गया है कि वे कोरोना महामारी से बचाव के लिए जारी सभी दिशा-निर्देशों की शत-प्रतिशत पालना सुनिश्चित करें और अपने आस-पास के लोगों को भी इसके लिए सावचेत करें। राज्यपाल के संदेश में राजस्थान को समृद्ध, विकसित और खुशहाल बनाने में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने का आह्वान किया गया है। ●

74 वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

मिल-जुलकर रहें अपने परिश्रम एवं प्रयासों से देश-प्रदेश को आगे बढ़ाएं

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी हैं।

श्री गहलोत ने कहा कि यह दिन हमें देश की आजादी के लिए अपना तन-मन-धन न्योछावर करने वाले महान् स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष, त्याग, समर्पण और उनकी शहादत की याद दिलाता है। हम सब उनके इस बलिदान के प्रति नतमस्तक हैं। श्री गहलोत ने कहा कि स्वतंत्रता के बाद देश ने आगे बढ़ने के लिए लोकतांत्रिक मार्ग चुना। हमारे देश में लोकतंत्र लगातार सशक्त और समृद्ध हुआ। यह स्वस्थ प्रजातांत्रिक मूल्यों के पोषण की हमारे महान् नेताओं की सोच का परिणाम है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आजादी का सही अर्थ यही है कि हर व्यक्ति को उसके अधिकार प्राप्त हों और सभी के साथ न्याय हो। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा के प्रति वचनबद्ध है। प्रदेश में अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से आमजन के जीवन में गुणात्मक सुधार लाया जा रहा है।

श्री गहलोत ने इस अवसर पर प्रदेशवासियों का आह्वान किया कि हम सभी मिल-जुलकर रहें और अपने परिश्रम एवं प्रयासों से देश-प्रदेश को आगे बढ़ाने में भागीदारी निभाएं। यही हमारी अमर शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ●

लोकतंत्र को मजबूत बनाएं

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि आजादी के बाद देश के सामने कई चुनौतियां आईं लेकिन देश इन चुनौतियों का मुकाबला करते हुए आगे बढ़ता रहा क्योंकि हमारे लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हैं। महात्मा गांधी, पं. नेहरू, सरदार पटेल, डॉ. अम्बेडकर और मौलाना आजाद जैसे महान् नेताओं ने इस लोकतंत्र को मजबूत बनाया है। सरकारें आती रहीं जाती रहीं लेकिन देश में लोकतंत्र कायम रहा। इस लोकतंत्र को मजबूत बनाए रखने की जिम्मेदारी हम सभी की है, क्योंकि लोकतंत्र बचेगा तभी देश बचेगा।

श्री गहलोत 15 अगस्त को 74वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में आयोजित राज्यस्तरीय समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने स्टेडियम में ध्वजारोहण कर परेड का निरीक्षण किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि देश जब आजाद हुआ तब यहां देश में बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य एवं शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाएं भी नहीं थीं। हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने अपनी दूरदर्शिता से भारत को आत्मनिर्भर बनाने की नींव रखी। उन्होंने बड़े-बड़े बांधों का निर्माण करवाया और औद्योगिक विकास को गति देने के लिए कई कारखाने स्थापित किए। उन्होंने एम्स, इसरो, आईआईटी जैसे उच्च स्तरीय संस्थानों की स्थापना की। इंदिरा गांधी, राजीव गांधी और डॉ. मनमोहन सिंह जैसे दूरदर्शी सोच रखने वाले नेताओं की नीतियों एवं विजन से भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी और हमारा देश विकास के इस मुकाम तक पहुंचा।

श्री गहलोत ने कहा कि इस मुल्क में विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय और जातियों के लोग रहते हैं। विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं। इतनी विविधता के बावजूद हमारे नेताओं ने सर्वधर्म समभाव, समाजवाद एवं धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों के साथ इस देश को एकजुट एवं अखण्ड रखा। इन सिद्धांतों पर चलते हुए हमें धर्म एवं जाति के नाम पर नफरत फैलाने वाली ताकतों को मुंहतोड़ जवाब देना होगा, ताकि देश में अमन-चैन बना रहे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि देश में अधिकार आधारित युग की शुरुआत महत्त्वपूर्ण कदम था इसी से देशवासियों को खाद्य सुरक्षा, सूचना एवं शिक्षा का अधिकार तथा मनरेगा के रूप में

रोजगार का अधिकार मिला। स्व. राजीव गांधी देश में सूचना क्रांति लेकर आए उसी का परिणाम है कि आज हर हाथ में मोबाइल है। लोगों को घर बैठे देश और दुनिया की जानकारी मिल रही है। राजीव गांधी सेवा केन्द्रों के माध्यम से गांवों में भी आईटी के माध्यम से आम जनता से जुड़े जरूरी काम हो रहे हैं।

श्री गहलोत ने कहा कि कोविड-19 संक्रमण के इस दौर में राजस्थान ने बेहतरीन प्रबंधन कर आमजन को राहत पहुंचाई है। सजगता-सतर्कता तथा प्रदेशवासियों के सहयोग का ही परिणाम है कि राजस्थान कोरोना के हर पैरामीटर पर बेहतर स्थिति में है। सरकार ने जरूरतमंद तबके को राहत देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। कोरोना संक्रमण के विकट समय में गरीब, असहाय, बेसहारा एवं जरूरतमंदों को संबल देने के लिए राज्य सरकार ने अब तक 6 हजार करोड़ रुपये खर्च किए हैं।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर देश की रक्षा के लिए प्राण न्योछावर करने वाले शहीदों, स्वतंत्रता सेनानियों तथा जांबाज सैनिकों को याद किया और कहा कि उनके त्याग और बलिदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता।

इस अवसर पर आर्मी एवं सेंट्रल पुलिस बैण्ड की ओर से बैण्डवादन एवं लोक कलाकारों ने लोकगीतों और नृत्य के साथ ही देशभक्ति गीतों की प्रस्तुति दी। आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ताओं, नर्सिंगकर्मियों, चिकित्सकों, सफाई कार्मिकों एवं पुलिसकर्मियों ने कोरोना योद्धा के रूप में 'हम होंगे कामयाब' गीत की आकर्षक प्रस्तुति दी। अंत में राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन हुआ। कार्यक्रम में राज्य मंत्री परिषद् के सदस्य, विधायक, अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी-कर्मचारी सहित अन्य गण्यमान्य उपस्थित थे। ●

लोकतंत्र के समक्ष मौजूद चुनौतियों का दृढ़ता से मुकाबला करें

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की रहनुमाई में ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों के लम्बे संघर्ष के बाद हमें अंग्रेजों की गुलामी से आजादी मिली। आजादी के बाद देश में लोकतंत्र कायम हुआ। हम सभी का कर्तव्य है कि वर्तमान परिस्थितियों में लोकतंत्र एवं संवैधानिक मूल्यों के समक्ष मौजूद चुनौतियों का दृढ़ता से मुकाबला करें और इन्हें नुकसान पहुंचाने वाली ताकतों के खिलाफ एकजुट रहें। मुख्यमंत्री श्री गहलोत 74वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर बड़ी चौपड़ पर आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने यहां ध्वजारोहण किया और उपस्थित जनसमुदाय को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी।

श्री गहलोत ने कहा कि 1962 में चीन के साथ युद्ध, 1965 एवं 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध हो या कारगिल की लड़ाई, हमारे बहादुर सैनिकों ने अपने शौर्य का परिचय देते हुए दुश्मनों को मुंहतोड़ जवाब दिया। उन्होंने कहा कि श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री राजीव गांधी जैसे महान् नेताओं ने अपनी जान की कुर्बानी दे दी लेकिन देश को अखण्ड रखा। उन्होंने कहा कि इस पावन अवसर पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम आपसी सद्भाव बनाए रखेंगे तथा मुल्क को तोड़ने वाली ताकतों के बहकावे में नहीं आएंगे।

श्री गहलोत ने कहा कि हमारी सरकार संवेदनशील, पारदर्शी एवं जवाबदेह सुशासन देने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि कोरोना संक्रमण के इस विकट समय में सभी वर्गों को साथ लेकर लोगों का जीवन बचाने के साथ-साथ आजीविका को सुचारु करना हमारी पहली प्राथमिकता है। हमने कोरोना से लड़ाई के साथ-साथ स्वास्थ्य ढांचे को मजबूती दी है। जांच क्षमता बढ़ाई है और कोरोना से मृत्यु दर के मामले में हमारी स्थिति राष्ट्रीय औसत से बेहतर है। कोई भूखा न सोये के संकल्प को पूरा करते हुए हमारी सरकार ने हर जरूरतमंद को राहत पहुंचाई है।

इस अवसर पर ऊर्जा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला, परिवहन मंत्री श्री प्रतापसिंह खाचरियावास, शिक्षा राज्य मंत्री श्री गोविंद सिंह डोटासरा, विधानसभा में मुख्य सचेतक श्री महेश जोशी, विधायक श्री अमीन कागजी एवं श्री रफीक खान सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं गण्यमान्य उपस्थित थे। ●

सूचना एवं जनसम्पर्क मंत्री ने किया ध्वजारोहण

सूचना एवं जनसम्पर्क और चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस के अवसर पर अपने राजकीय निवास पर झंडारोहण किया। इस अवसर पर डॉक्टर शर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती वीरा शर्मा भी मौजूद थीं।

डॉ. शर्मा ने सुरक्षाकर्मियों की परेड की सलामी ली और उन्हें एवं कार्यालय के कर्मचारियों को अपनी शुभकामनाएं दीं।

इंदिरा रसोई योजना

आठ रुपये में जरूरतमंदों को शुद्ध-पौष्टिक भोजन

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के 'कोई भूखा ना सोए' संकल्प को साकार करने की दिशा में प्रदेश के नगरीय क्षेत्रों में इंदिरा रसोई योजना की शुरुआत की गयी है। देश की महान् नेता स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी के नाम पर मानव सेवा की यह योजना देश में अनूठी पहल है। इसमें गरीबों एवं जरूरतमंद लोगों को मात्र 8 रुपये में शुद्ध, पौष्टिक एवं स्वादिष्ट भोजन प्रदान करने की पहल हुई है।

जनसेवा की भावना, पारदर्शिता एवं जनभागीदारी के साथ लागू यह योजना मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा पूरे देश में निर्धन वर्ग को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने की दिशा में एक मिसाल है।

राज्य सरकार इस योजना पर प्रतिवर्ष 100 करोड़ रुपये खर्च करेगी। योजना के संचालन में सेवाभावी संस्थाओं एवं स्वयंसेवी संगठनों की भागीदारी सुनिश्चित की गयी है। जिला कलक्टर्स को निर्देश दिए गए हैं कि वे जल्द से जल्द ऐसी संस्थाओं का चयन करें। साथ ही, रसोई के लिए उपयुक्त स्थानों का चयन भी करें। ऐसी संस्थाओं तथा स्वयंसेवी संगठनों को प्रोत्साहित किया जाए जो निःस्वार्थ भाव से मानव सेवा के क्षेत्र में काम कर रही हों। मुख्यमंत्री ने भोजन की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए राज्य एवं जिला स्तर पर कमेटी गठित करने के भी निर्देश दिए हैं।

नगरीय विकास मंत्री श्री शांति धारीवाल के अनुसार देश के अन्य राज्य जहां इस प्रकार की योजना चल रही है वहां के अध्ययन एवं अनुभवों को शामिल करते हुए इंदिरा रसोई योजना की शुरुआत की गयी है। इसमें दोनों समय का भोजन रियायती दर पर उपलब्ध होगा। राज्य सरकार प्रति थाली 12 रुपये अनुदान देगी। प्रदेश के सभी 213 नगरीय निकायों में 358 रसोइयों का संचालन किया जाएगा जहां जरूरतमंद लोगों को सम्मान के साथ बैठाकर भोजन खिलाया जाएगा।

स्वायत्त शासन विभाग के शासन सचिव श्री भवानी सिंह देथा ने बताया कि प्रतिवर्ष 4 करोड़ 87 लाख लोगों को भोजन उपलब्ध कराया जाएगा। आवश्यकता के अनुरूप इसे और बढ़ाया जा सकता है। रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, अस्पताल, चौखटी आदि ऐसे स्थानों पर रसोइयां खोली जाएंगी जहां लोगों की सहज उपस्थिति रहती है। भोजन में प्रति थाली 100 ग्राम दाल, 100 ग्राम सब्जी, 250 ग्राम चपाती एवं अचार का मेन्यू निर्धारित किया गया है। स्थानीय आवश्यकता के अनुरूप मेन्यू व भोजन के चयन की स्वतंत्रता रहेगी। उन्होंने बताया कि कोरोना महामारी से बचाव के लिए रसोइयों में आवश्यक प्रावधान किए जाएंगे। योजना की आईटी आधारित मॉनिटरिंग की जाएगी। लाभार्थी को कूपन लेते ही मोबाइल पर एसएमएस से सूचना मिल जाएगी। मोबाइल एप एवं सीसीटीवी से रसोइयों की निगरानी की जाएगी। ●

राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की 22वीं बैठक

आपदा से निपटने के लिए तैयारियों के निर्देश

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने प्रदेश में मानसून को देखते हुए अत्यधिक वर्षा एवं बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए सभी तैयारियां रखे जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने जयपुर, कोटा एवं अजमेर में विशेष एहतियात बरतने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी जिला कलक्टर्स को राहत एवं बचाव कार्यों के लिए तैयारी रखने को कहा।

श्री गहलोत मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की 22वीं बैठक में प्रदेश में मानसून की वर्तमान स्थिति एवं बाढ़ नियंत्रण के लिए की गई तैयारियों की समीक्षा कर रहे थे। श्री गहलोत ने आन्ध्रप्रदेश की तर्ज पर कैचमेन्ट एरिया में छोटे-छोटे बांध बनाने की संभावनाएं तलाशने के निर्देश दिए।

बैठक में अधिकारियों ने बताया कि जयपुर शहर में जैसी जलभराव की स्थिति हुई थी वैसी प्रदेश में टोंक को छोड़कर अन्य शहरों में नहीं है। बाढ़ एवं आपदा की स्थिति से निपटने के लिए जयपुर में केन्द्रीय बाढ़ नियंत्रण कक्ष तथा प्रदेश के सभी जिलों में भी बाढ़ नियंत्रण कक्ष स्थापित किए गए हैं। बाढ़ प्रबंधन के लिए सभी जिलों में फ्लड कंटीन्जेन्सी प्लान बनाया गया है। जयपुर, कोटा एवं अजमेर में एनडीआरएफ की तैनाती की गई है। प्रदेश के 20 जिलों में एसडीआरएफ तथा सभी जिलों में नागरिक सुरक्षा बचाव दलों की तैनाती की गई है। जिला कलक्टर्स को आवश्यकतानुसार नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों की अतिरिक्त तैनाती करने के लिए अधिकृत किया गया है। सेना से भी समन्वय स्थापित किया जा रहा है। आपदा प्रबंधन सचिव ने बताया कि मौसम विभाग से प्राप्त चेतावनी एवं सूचना सभी जिला कलक्टर्स को नियमित रूप से प्रेषित की जा रही है। बाढ़ बचाव एवं राहत कार्यों के लिए जिलों को उनकी मांग के अनुसार राशि का आवंटन किया जा रहा है।

कोविड-19 की रोकथाम एवं बचाव के लिए एसडीआरएफ से विभिन्न विभागों एवं जिलों को आवंटित राशि 386.85 करोड़ रुपए का अनुमोदन भी किया। बैठक में बताया कि कोविड-19 संक्रमण की रोकथाम एवं बचाव के लिए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग को मास्क एवं पीपीई किट खरीदने के लिए 2.10 करोड़ तथा टेस्टिंग किट के लिए 35 करोड़ रुपए की राशि आवंटित की गई। इसके अलावा चिकित्सा शिक्षा विभाग को वित्तीय वर्ष 2019-20 में लैब, वेंटिलेटर एवं अन्य उपकरणों की खरीद के लिए 62.15 करोड़ रुपए दिए गए। वर्ष 2020-21 में एसएमएस मेडिकल कॉलेज में लैब, वेंटिलेटर एवं अन्य उपकरणों के लिए चिकित्सा शिक्षा विभाग को 120 करोड़ रुपए, एसएमएस मेडिकल कॉलेज, जयपुर एवं एस.एन. मेडिकल कॉलेज, जोधपुर में कोबास-8800 मशीन स्थापित करने के लिए 13 करोड़ रुपए तथा अतिरिक्त लैब एवं जांच उपकरणों के लिए चिकित्सा शिक्षा विभाग को 49.12 करोड़ रुपए की राशि आवंटित की गई।

कोविड-19 की रोकथाम एवं बचाव के लिए विभिन्न विभागों एवं जिलों को भी आवंटित राशि का अनुमोदन किया गया। इसमें बेघर एवं प्रवासी श्रमिकों के लिए राहत शिविर स्थापित करने एवं फूड पैकेट वितरण के लिए 98.38 करोड़ रुपए, अनटाइड फण्ड से जिला कलक्टर्स को 4.10 करोड़ रुपए, मास्क, पीपीई किट एवं सेनेटाइजर आदि की खरीद के लिए राजस्थान पुलिस को 1.25 करोड़ तथा स्वायत्त शासन विभाग को 1.75 करोड़ रुपए की राशि का आवंटन किया गया। पीएम केयर फण्ड से प्रवासी श्रमिकों के कल्याण संबंधी गतिविधियों के लिए जिलों को आवंटित 35.70 करोड़ रुपए के बजट आवंटन का कार्योत्तर अनुमोदन किया गया।

बैठक में बताया गया कि सूखा संवत् 2076 में कृषि आदान-अनुदान मद में बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर एवं हनुमानगढ़ जिले के फसल खराबे से प्रभावित 2 लाख 10 हजार 984 किसानों के खातों में 220.06 करोड़ रुपये हस्तान्तरित किए गए। टिड्डियों के प्रकोप के कारण रबी संवत् 2076 में फसल खराबे के लिए 8 जिलों के 77,593 किसानों के खातों में 129 करोड़ 51 लाख रुपये जमा कराए गए। सभी जिला कलक्टर्स को टिड्डी नियंत्रण के लिए किराये पर वाहन लेने, कीटनाशक छिड़काव एवं उपकरणों की खरीद के लिए 5.45 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया। पिछले साल आई बाढ़ से खरीफ सीजन की फसल में हुए खराबे के लिए 18 जिलों के 17 लाख 89 हजार 839 किसानों के खातों में 739.32 करोड़ रुपये हस्तान्तरित किये गए। ओलावृष्टि के कारण रबी संवत् 2076 में फसलों को हुए नुकसान के लिए 15 जिलों के 85 हजार 506 किसानों के खातों में 79.06 करोड़ रुपये की राशि जमा कराई गई। ●

127 करोड़ के 41 कार्यों का शिलान्यास एवं लोकार्पण

आदिवासी क्षेत्रों का होगा तेजी से विकास

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि आदिवासी समुदाय के उत्थान के लिए योजनाएं बनाने में राज्य सरकार ने कोई कमी नहीं रखी है। टीएसपी क्षेत्र सहित टाडा और माडा क्षेत्र में विकास कार्यों को बढ़ावा दिया जा रहा है। बिखरी हुई आबादी के विकास में आगे भी कोई कमी नहीं रखी जाएगी।

श्री गहलोत विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर 9 अगस्त को जैसलमेर से वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से 127.85 करोड़ रुपये के 41 कार्यों के शिलान्यास एवं लोकार्पण के बाद संबोधित कर रहे थे। जनजाति क्षेत्र में विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री ने 98.76 करोड़ रुपये के 28 कार्यों का शिलान्यास और 29.09 करोड़ रुपये के 13 कार्यों का लोकार्पण किया।

मुख्यमंत्री ने पूरे आदिवासी समाज को विश्व आदिवासी दिवस की बधाई दी और कहा कि सभी की भावनाओं का सम्मान करते हुए हमने इस दिन प्रदेश में अवकाश घोषित किया है। हमारा उद्देश्य है कि इस दिन आदिवासी समाज की समस्याओं पर विचार-विमर्श हो, अभी तक की उपलब्धियों पर चर्चा करने के साथ ही भविष्य की योजनाओं की रूपरेखा भी तय की जाए। उन्होंने कहा कि मुझे खुशी है कि आज हर ग्राम पंचायत में क्षेत्रीय आदिवासी समाज के लोगों ने समाज की समस्याओं पर चिंतन-मनन किया।

श्री गहलोत ने श्री मावजी महाराज, श्री गोविंद गुरु, वीरबाला कालीबाई एवं मानगढ़ के शहीदों को याद किया। उन्होंने भरोसा दिलाया कि जनजाति क्षेत्रों सहित पूरे प्रदेश में बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सड़कों के विकास में कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। उन्होंने जैसलमेर में जनजाति छात्रों के लिए 50 बेड की क्षमता का छात्रावास खोलने की भी घोषणा की। उन्होंने कहा कि बाड़मेर एवं जोधपुर में भी जनजाति छात्रों के लिए हॉस्टल खुलेंगे। जोधपुर में जनजाति छात्रों के लिये कोचिंग सेन्टर खोला जाएगा ताकि उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार किया जा सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आदिवासी क्षेत्र के विकास के लिए हमारी सरकार सदैव तत्पर रही है। हमारी पिछली सरकार के समय रतलाम से डूंगरपुर वाया बांसवाड़ा ब्रॉडगेज रेल लाइन का सपना पूरा करने के लिए राज्य सरकार ने 200 करोड़ रुपये रेलवे को दिए थे, जमीन अवाप्ति भी हुई थी और तत्कालीन यूपीए चेयरपर्सन श्रीमती सोनिया गांधी ने उसका शिलान्यास भी किया था लेकिन सरकार बदलने के बाद यह काम अधूरा रह गया।

श्री गहलोत ने कहा कि देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के जमाने से ही सबसे पिछड़े लोगों, वनवासियों एवं आदिवासी समाज को मुख्य धारा में लाने और उनके विकास के लिए प्रयास शुरू किए गए थे। पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी एवं श्री राजीव गांधी का भी आदिवासी समाज से विशेष लगाव था। स्व. राजीव गांधी ने प्रधानमंत्री बनते ही राजस्थान सहित विभिन्न राज्यों के आदिवासी क्षेत्रों का दौरा कर पिछड़े क्षेत्रों के विकास का संदेश दिया था।

वीसी के दौरान डूंगरपुर पंचायत समिति, बांसवाड़ा की छोटी सरवन सहित अन्य पंचायत समिति में बैठे सरपंचों से मुख्यमंत्री ने संवाद भी किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री एवं अन्य अतिथियों ने जैसलमेर जिले के जनजाति समुदाय के 12वीं एवं 10वीं कक्षा में उच्च अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे जनजाति क्षेत्र विकास राज्य मंत्री श्री अर्जुन सिंह बामनिया ने कहा कि जनजाति क्षेत्र के छात्र-छात्राओं को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कराने के लिए सर्वश्रेष्ठ कोचिंग संस्थानों से टाई-अप किया जा रहा है। ●

जरूरतमंद वर्ग की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित होगी

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि गरीब एवं जरूरतमंद तबके की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना हमारा दायित्व है। उन्होंने निर्देश दिए कि इसके लिए राजस्थान में देश का सबसे अच्छा पीडीएस सिस्टम विकसित किया जाए ताकि हर पात्र एवं जरूरतमंद व्यक्ति को समय पर राशन मिल सके और गेहूं का उठाव एवं वितरण समय पर हो। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत लोगों को चाय, नमक सहित अन्य सामग्री भी उपलब्ध करवाने के प्रयास किए जाएं।

श्री गहलोत मुख्यमंत्री निवास पर वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग की समीक्षा तथा जिला कलक्टरों एवं जिला रसद अधिकारियों के साथ संवाद कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कोविड-19 के विकट समय में खाद्य विभाग के कार्मिकों ने अपनी जिम्मेदारी का बखूबी निर्वहन किया है। इससे लोगों को जरूरत के समय राशन मिल सका। आगे भी इसी भावना के साथ काम करते हुए पीडीएस सिस्टम को मजबूत बनाएं।

बेसहारा एवं जरूरतमंद वंचित परिवारों का सर्वे

मुख्यमंत्री ने कहा कि कोविड-19 महामारी के कारण जिन लोगों की आजीविका प्रभावित हुई है। ऐसे बेसहारा एवं जरूरतमंद लोगों का राज्य सरकार ने सर्वे करवाया था, जो राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना में चयनित नहीं हैं। इस सर्वे में 20 लाख परिवारों के 68 लाख सदस्यों का पंजीयन किया गया था। जो लोग इस सर्वे में शामिल होने से वंचित रह गए थे उनके लिए राज्य सरकार ने 22 जुलाई से द्वितीय सर्वे प्रारम्भ करवाया ताकि कोई भी जरूरतमंद सर्वे से वंचित नहीं रहे।

एनएफएसए में वंचित पात्र लोगों के नाम जोड़े केन्द्र

श्री गहलोत ने कहा कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर ही दिया जा रहा है। इस कारण पात्र होते हुए भी बड़ी संख्या में लोगों को इस योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है। इसी प्रकार अन्त्योदय योजना के लिए भी काफी पहले सर्वे कर परिवारों का चयन किया गया था। हमारा प्रयास है कि हर जरूरतमंद व्यक्ति की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हो। इसे देखते हुए केन्द्र सरकार वर्तमान जनसंख्या के अनुसार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना में वंचित पात्र व्यक्तियों के नाम शामिल करें।

'वन नेशन-वन राशन कार्ड' के काम को गति दें

मुख्यमंत्री ने कहा कि वन नेशन-वन राशन कार्ड के कार्य को गति देते हुए एनएफएसए के लाभार्थियों की आधार सीडिंग जल्द से जल्द करना सुनिश्चित करें। यह कार्य दिसम्बर से पहले हर हाल में पूरा हो। उन्होंने निर्देश दिए कि एनएफएसए की सूची में से मृत व्यक्तियों के नाम तथा डुप्लीकेट राशन कार्ड हटाए जाएं। श्री गहलोत ने कहा कि उचित मूल्य की ऐसी दुकानें जो तकनीकी कारणों से ऑनलाइन नहीं हो सकी हैं उन्हें जल्द से जल्द ऑनलाइन किया जाए।

जिला रसद अधिकारियों के साथ किया संवाद

वीडियो कॉफ्रेंस में मुख्यमंत्री ने बीकानेर, दौसा, नागौर, पाली, उदयपुर, जोधपुर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, झालावाड़ एवं बाड़मेर सहित अन्य जिलों के रसद अधिकारियों से राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना, अन्त्योदय योजना सहित अन्य योजनाओं के तहत राशन वितरण एवं इसके उठाव की जानकारी ली। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी जिलों में उचित मूल्य की दुकानों पर पारदर्शिता के साथ राशन का समय पर वितरण सुनिश्चित किया जाए। श्री गहलोत ने कॉन्फ्रेंस में मौजूद जिला कलक्टरों को इन्दिरा रसोई योजना के त्वरित एवं प्रभावी क्रियान्वयन के लिए भी निर्देश दिए।

मुख्य सचिव श्री राजीव स्वरूप ने कहा कि सभी जिला कलक्टर एवं जिला रसद अधिकारी मुख्यमंत्री की मंशा के अनुरूप हर जरूरतमंद एवं पात्र व्यक्ति की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करें। शासन सचिव खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग श्री हेमंत गेरा ने प्रस्तुतीकरण देते हुए कहा कि कोविड-19 के दौरान राज्य सरकार ने 70 करोड़ रुपये व्यय कर एफसीआई से बाजार दर पर गेहूं खरीद कर जरूरतमंद लोगों को उपलब्ध कराया। साथ ही इस अवधि में राज्य सरकार ने गेहूं के नि:शुल्क वितरण पर 114 करोड़ की अतिरिक्त राशि वहन की। अप्रैल से जुलाई माह के दौरान सामान्य की तुलना में गेहूं का दोगुना उठाव किया गया। इसी प्रकार मार्च, 2019 से जुलाई, 2020 तक अन्त्योदय, बीपीएल एवं स्टेट बीपीएल परिवारों को 1 रुपये किलो की दर से गेहूं वितरण पर राज्य सरकार ने 151 करोड़ रुपये की राशि वहन की। ●

चिकित्सकों-नर्सिंगकर्मियों के ड्यूटी प्रोटोकॉल में जरूरी बदलाव के आदेश

गंभीर मरीजों की समुचित देखभाल के मुख्यमंत्री ने दिए निर्देश

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने प्रदेश में कोविड-19 महामारी से बचाव और मृत्युदर में कमी लाने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि गंभीर मरीजों की देखभाल पर फोकस किया जाए। उन्होंने इसके लिए आईसीयू में भर्ती मरीजों को ऑक्सीजन की समय पर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए चिकित्सकों और नर्सिंगकर्मियों के ड्यूटी प्रोटोकॉल में जरूरी बदलाव करने के आदेश दिए।

श्री गहलोत मुख्यमंत्री निवास पर प्रदेश में कोरोना संक्रमण की स्थिति की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राजस्थान में दूसरे राज्यों के मुकाबले कोरोना की रिकवरी रेट बेहतर होने तथा मृत्युदर कम होने के बावजूद हमें क्रिटिकल केयर पर फोकस करना होगा। राज्य सरकार ने बीते कुछ महीनों के दौरान चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार जिला स्तर तक कर दिया है। अब मरीजों का जीवन बचाने के लिए इन सभी उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जाना चाहिए।

आईसीयू बेड पर तैनात स्वास्थ्यकर्मियों को प्रोत्साहन राशि मिली

मुख्यमंत्री ने कहा कि देशभर में कोरोना के कहर से मरने वालों की संख्या 50 हजार से भी अधिक हो गई है, जो चिंता का विषय है। ऐसे में, प्रदेश में अधिक सतर्कता बरतते हुए आईसीयू बेड और ऑक्सीजन की आवश्यकता वाले कोरोना मरीजों की देखभाल का जिम्मा सर्वाधिक योग्य, अनुभवी एवं सतर्क चिकित्सकों और नर्सिंगकर्मियों को दिया जाए। उन्होंने कहा कि रात के समय ड्यूटी पर मौजूद स्वास्थ्यकर्मियों को अधिक अलर्ट और जिम्मेदार रहने की जरूरत होती है क्योंकि कई बार रात के समय ही मरीज के ऑक्सीजन के स्तर में अचानक गिरावट आ जाती है। उन्होंने कहा कि आईसीयू और ऑक्सीजन बेड पर तैनात स्वास्थ्यकर्मियों को विशेष प्रोत्साहन राशि देने पर विचार किया जा सकता है।

स्वास्थ्य मित्र योजना शहरी क्षेत्रों में भी लागू होगी

श्री गहलोत ने ग्रामीण क्षेत्रों में आम लोगों को कोविड-19 तथा अन्य बीमारियों से बचाव के क्रम में चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराने के लिए लागू की गई स्वास्थ्य मित्र योजना को शहरी क्षेत्रों में भी लागू करने के निर्देश दिए। उन्होंने सुपर स्प्रेडर के कारण कोरोना संक्रमण के फैलाव को रोकने के जागरूकता अभियान में स्वास्थ्य मित्रों की मदद लेने का सुझाव दिया। बैठक में बताया गया कि विभिन्न जिलों में चयनित स्वास्थ्य मित्रों का प्रशिक्षण पूरा हो गया है और अब वे क्षेत्र में लोगों की मदद के लिए जुटेंगे।

नियमित टीकाकरण के कार्य में कोई कोताही नहीं हो

श्री गहलोत ने अधिकारियों को गर्भवती महिलाओं और छोटे बच्चों के नियमित टीकाकरण के कार्य में कोई कोताही नहीं बरतने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि बीते कुछ महीनों के दौरान लॉकडाउन अथवा आवागमन के संसाधनों की अनुपलब्धता के कारण जो महिलाएं और बच्चे आवश्यक टीकाकरण के लिए स्वास्थ्य केन्द्रों तक नहीं पहुंच सके, उन्हें चिह्नित कर टीकाकरण की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। उन्होंने स्वास्थ्य अधिकारियों को मौसमी बीमारियों के साथ-साथ कोरोना संक्रमण में वृद्धि के प्रति सतर्क रहने के निर्देश दिए।

बैठक में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा, मुख्य सचिव श्री राजीव स्वरूप, अति. मुख्य सचिव वित्त श्री निरंजन आर्य, अति. मुख्य सचिव गृह श्री रोहित कुमार सिंह, पुलिस महानिदेशक श्री भूपेन्द्र यादव, अति. मुख्य सचिव सार्वजनिक निर्माण श्रीमती वीनू गुप्ता, अति. मुख्य सचिव खान श्री सुबोध अग्रवाल, प्रमुख शासन सचिव चिकित्सा श्री अखिल अरोड़ा, शासन सचिव खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति श्री हेमन्त गेरा, शासन सचिव स्वायत शासन श्री भवानी सिंह देथा, सूचना एवं जनसम्पर्क आयुक्त श्री महेन्द्र सोनी सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। ●

1056 करोड़ रुपये लागत के कार्यों के शिलान्यास एवं लोकार्पण

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने मुख्यमंत्री निवास से वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से कोटा विकास न्यास की ओर से स्मार्ट सिटी के तहत 1056 करोड़ रुपये लागत के कार्यों के शिलान्यास एवं लोकार्पण किए। इस मौके पर समारोह को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि महामारी के कारण पूरा देश कठिन दौर से गुजर रहा है और हमें इसी माहौल में विकास को निरन्तर गति देनी है। सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि राज्य के सभी जिलों में विकास योजनाओं और कार्यक्रमों का योजनाबद्ध क्रियान्वयन हो और आम जनता को सुविधाओं का तय समय पर लाभ मिल सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कोटा शहर में जिस देवनारायण नगर एकीकृत आवासीय योजना के विकास कार्यों का शिलान्यास किया गया है, वह अपने आप में एक अद्भुत योजना है, जिसमें पशुपालकों को अपने पशुओं के पास रहने और उनकी देखभाल करने के लिए भूखण्डों तथा आवासीय भवनों का आवंटन किया जाना है। इस योजना से शहरवासियों को आवारा पशुओं की समस्या से निजात मिलेगी। उन्होंने आशा जताई कि स्मार्ट सिटी योजना के तहत प्रस्तावित सभी विकास कार्यों के समय पर पूरा होने से कोटा शहर के सौन्दर्य में निखार आएगा और यह शहर विदेशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनकर उभरेगा। उन्होंने कहा कि कोटा में शुरू हुए सभी विकास कार्य समय पर पूरे होंगे।

कार्यक्रम में नगरीय विकास मंत्री श्री शांति धारीवाल ने कहा कि सभी निर्माणाधीन कार्यों को समयबद्ध रूप से पूरा किया जाएगा और वर्ष 2021 तक सभी निर्माण कार्य पूरे कर लिए जाएंगे। उन्होंने बताया कि स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत प्रस्तावित इन विकास कार्यों में से अधिकतर में वर्तमान में निर्माण कार्य चल रहे हैं।

श्री धारीवाल ने चम्बल रिवर फ्रन्ट योजना के लिए मुख्यमंत्री का विशेष रूप से आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह एक ऐसी नायाब परियोजना है जो कोटा शहर को आधुनिक स्थापत्य एवं वास्तु कला के मानचित्र पर पूरी दुनिया में प्रसिद्धि दिलाएगी। 307 करोड़ रुपये लागत की इस योजना में 6 किलोमीटर लम्बे हैरिटेज रिवर फ्रन्ट का निर्माण किया जाएगा जिसमें पूरे राजस्थान की संस्कृति एवं स्थापत्य कला के समन्वय का बेहतरीन प्रदर्शन होगा।

इस दौरान मुख्यमंत्री ने देवनारायण नगर एकीकृत आवासीय योजना के पुस्तिका तथा इन्दिरा रसोई योजना के पोस्टर का विमोचन किया। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने इन योजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण किया –

कार्य का नाम	**(करोड़ रु. में)**
अन्टाघर सर्किल पर अण्डरपास एवं सौंदर्यीकरण	25.00
एरोड्रॉम सर्किल पर अण्डरपास एवं सौंदर्यीकरण	50.00
झालावाड़ रोड पर सिटी मॉल के सामने एलिवेटेड रोड	55.00
गोबरिया बावड़ी सर्किल पर अण्डरपास एवं सौंदर्यीकरण	25.00
अनन्तपुरा तिराहा पर फ्लाईओवर का निर्माण	70.00
इन्दिरा गांधी तिराहा पर फ्लाईओवर का निर्माण	70.00
आई.एल. कैम्पस में सिटी पार्क (ऑक्सीजन) का विकास	80.00
मल्टीपरपज स्कूल, गुमानपुरा में पार्किंग का निर्माण	21.00
जयपुर गोल्डन ट्रांसपोर्ट कंपनी में पार्किंग का निर्माण	25.00
जे.के. क्रिकेट पैवेलियन में स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स	25.00
चम्बल रिवर फ्रंट का विकास	307.00
देवनारायण नगर योजना का विकास	300.00
वरिष्ठ नगर नियोजक कोटा कार्यालय भवन का लोकार्पण	3.14

मेडिकल एज्यूकेशन सोसायटी का पुनर्गठन, 210 नव पद सृजित

राज्य सरकार ने प्रदेश के विभिन्न जिलों में नए चिकित्सा महाविद्यालयों के संचालन के लिए गठित राजस्थान मेडिकल एज्यूकेशन (राजमेस) सोसायटी का पुनर्गठन करने और सोसायटी के तहत 210 पदों के सृजन का निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने इस सम्बन्ध में प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

श्री गहलोत ने राजमेस सोसायटी का कार्यभार बढ़ने के क्रम में इसका पुनर्गठन करने और नए पदों के सृजन को स्वीकृति दी है। वर्तमान में सोसायटी के संचालन के लिए 27 पद स्वीकृत हैं तथा सोसायटी के अधीन विभिन्न जिलों में 7 नए चिकित्सा महाविद्यालय संचालित किए जा रहे हैं। हाल ही में स्वीकृत 15 अतिरिक्त मेडिकल कॉलेजों के साथ-साथ भविष्य में स्वीकृत होने वाले अन्य चिकित्सा महाविद्यालयों का संचालन भी इसी सोसायटी के अधीन किया जाना है। चिकित्सा शिक्षा विभाग और वित्त विभाग के प्रस्ताव के अनुसार, राजमेस सोसायटी में प्रशासन, विधि, लेखा, आयोजना, खरीद, अकादमिक, अभियांत्रिकी, अस्पताल प्रशासन और सूचना तकनीक (आईटी) आदि शाखाएं अथवा प्रभार गठित किए जाएंगे। इन शाखाओं के माध्यम से मेडिकल कॉलेजों के लिए नियामक संस्थाओं द्वारा जारी मापदण्डों के अनुरूप अकादमिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों, निर्माण कार्यों, वित्तीय संसाधनों के प्रबंधन, पर्यवेक्षण, मॉनिटरिंग सहित समस्त क्रियाकलापों का क्रियान्वयन किया जाएगा।

स्वीकृत प्रस्ताव के अनुसार, राजमेस सोसायटी में वर्तमान 27 पदों के अतिरिक्त 210 नए पदों का सृजन किया जा रहा है। पुनर्गठन के बाद सोसायटी में निदेशक का एक पद, अतिरिक्त निदेशक के 3, उप निदेशक के 6, सहायक निदेशक के 6, वित्तीय प्रबंधन के लिए वित्तीय सलाहकार से कनिष्ठ लेखाकार स्तर तक विभिन्न स्तर के 30, अभियांत्रिकी शाखा में मुख्य अभियंता से लेकर सहायक अभियंता के स्तर के 35, आईटी शाखा में 50 पदों सहित कुल 237 पद सृजित हो जाएंगे। मुख्यमंत्री के इस निर्णय से प्रदेश में प्रस्तावित नए चिकित्सा महाविद्यालयों की स्थापना के कार्य में तेजी आएगी और उनके संचालन का काम अधिक सुव्यवस्थित हो सकेगा। ●

राजस्थान न्यायिक सेवा में एमबीसी को 5 प्रतिशत आरक्षण

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की पहल पर गुर्जरों सहित अति पिछड़ा वर्ग के अभ्यर्थियों को राजस्थान न्यायिक सेवा में एक प्रतिशत के स्थान पर 5 प्रतिशत आरक्षण देने के लिए राजस्थान न्यायिक सेवा नियम, 2010 में संशोधन को राज्य कैबिनेट के माध्यम से मंजूरी मिल गई है।

अति पिछड़ा वर्ग के अभ्यर्थियों को इस संशोधन के जरिए राजस्थान न्यायिक सेवा में एक प्रतिशत के स्थान पर 5 प्रतिशत आरक्षण दिया जाना प्रस्तावित है। गौरतलब है कि अति पिछड़ा वर्ग के अभ्यर्थी लम्बे समय से न्यायिक सेवा नियमों में संशोधन की मांग कर रहे थे ताकि उन्हें राज्य न्यायिक सेवा में एक प्रतिशत के स्थान पर 5 प्रतिशत आरक्षण मिल सके।

श्री गहलोत की इस पहल से गुर्जर, रायका-रैबारी, गाडिया-लुहार, बंजारा, गडरिया आदि अति पिछड़ा वर्ग के अभ्यर्थियों को राजस्थान न्यायिक सेवा में नियुक्ति के अधिक अवसर मिलना संभव होगा। ●

पुलिस, जेल व होमगार्ड को प्रतिवर्ष 7,000 रु. वर्दी एवं किट भत्ता

प्रदेश में पुलिस, जेल एवं होमगार्ड विभाग के स्थायी कार्मिकों को अब वर्दी एवं किट भत्ते के रूप में प्रतिवर्ष एकमुश्त 7 हजार रुपये दिए जाएंगे। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने इस सम्बन्ध में प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

श्री गहलोत की इस मंजूरी से पुलिस विभाग के कांस्टेबल से सहायक उप निरीक्षक स्तर तक के 86,487 कार्मिक, होमगार्ड विभाग के कांस्टेबल से हैडकांस्टेबल तक के 422 एवं जेल विभाग के प्रहरी से लेकर उप कारापाल तक के 3712 सहित कुल 90,621 कार्मिकों को लाभ मिलेगा। इससे राजकोष पर करीब 63 करोड़ 43 लाख रुपये का वित्तीय भार आएगा।

उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री ने गृह विभाग के प्रभारी मंत्री के रूप में विगत वर्ष पुलिस, जेल एवं होमगार्ड विभाग के स्थायी कार्मिकों को एकमुश्त 7 हजार रुपये वर्दी एवं किट भत्ता देने की घोषणा की थी। ●

कृषि क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ाने पर जोर
किसानों की आय बढ़ाने की नीति पर होगा काम

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा है कि किसानों को फसल का उचित मूल्य दिलाने और उनकी आय बढ़ाने के लिए एग्रो प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित करने की योजना का लाभ किसानों को प्राथमिकता के आधार पर दिलवाएं। उन्होंने कृषि तथा सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों को इस योजना के तहत बैंक से ऋण दिलाने में किसानों की सहायता करने तथा जिला स्तर पर अभियान चलाकर किसानों को प्रोत्साहित करने के निर्देश दिए।

श्री गहलोत मुख्यमंत्री निवास पर कृषि, सहकारिता एवं अन्य विभागों की समीक्षा बैठक को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इस योजना से न केवल किसानों की आमदनी में वृद्धि होगी बल्कि फसल उत्पादों में वैल्यू एडिशन होने से उनकी कीमत भी बढ़ेगी और स्थानीय स्तर पर कृषि क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। इस योजना के तहत किसानों को कृषि प्रसंस्करण उद्योग लगाने पर एक करोड़ रुपये तक ऋण मिल सकता है जिस पर राज्य सरकार द्वारा 50 प्रतिशत तक अनुदान दिया जाता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कई मल्टी स्टेट को-ऑपरेटिव सोसायटियों के द्वारा आम जनता को निवेश के नाम पर धोखा देकर उनकी गाढ़ी मेहनत की कमाई लूटने की शिकायतें चिंता का विषय हैं। उन्होंने अधिकारियों को ऐसा मैकेनिज्म तैयार करने के निर्देश दिए कि भविष्य में प्रदेश में ऐसी कोई भी को-ऑपरेटिव सोसायटी गरीब जनता को झांसे में नहीं ले सके। उन्होंने कहा कि आम जनता को ऐसी सोसायटियों से बचाने के लिए जागरूक करने की भी जरूरत है।

मुख्यमंत्री ने किसानों को रबी फसल वर्ष 2019-20 के बीमा क्लेम के शीघ्र भुगतान के लिए 250 करोड़ रुपये प्रीमियम कृषक कल्याण कोष से स्वीकृत करने के भी निर्देश दिए। श्री गहलोत के इस निर्णय से लगभग 2.50 लाख किसानों को लगभग 750 करोड़ रुपये के बीमा क्लेम का जल्द से जल्द भुगतान किया जा सकेगा। उन्होंने विभिन्न जिलों में 3,723 डिग्गियों के निर्माण पर कृषक कल्याण कोष से 95.87 करोड़ रुपये के शीघ्र भुगतान के लिए निर्देश दिए। इस हेतु कृषक कल्याण कोष से भी राशि उपलब्ध कराई जाएगी।

श्री गहलोत ने कहा कि विभिन्न सहकारी संस्थाओं में 1,000 पदों पर भर्ती की प्रक्रिया को जल्द शुरू किया जाए। इसके लिए उन्होंने विभाग के सेवा एवं भर्ती नियमों में आवश्यक संशोधन 3 माह में पूरा कर भर्ती की अभ्यर्थना सहकारी भर्ती बोर्ड को भेजने के निर्देश दिए।

श्री गहलोत ने राज्य की कृषि उपज मण्डी समितियों के प्रांगण में सार्वजनिक सुविधाओं के संचालन के लिए भूखण्डों का आवंटन करने का भी निर्णय लिया है। इन भूखण्डों पर मण्डी में किसानों के लिए सामुदायिक सुविधाओं का विकास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश के 4.15 लाख पेंशनरों की सहूलियत के लिए सभी सहकारी भण्डारों के मेडिकल विक्रय केन्द्रों को ऑनलाइन किया जाएगा तथा उसे राज्य सरकार के ट्रेजरी एवं पेंशन विभाग से भी जोड़ा जाएगा। साथ ही कॉनफेड एवं सहकारी उपभोक्ता भण्डारों के लिए दवाओं की खरीद भी केन्द्रीकृत व्यवस्था के तहत करने का निर्णय लिया गया।

मुख्यमंत्री ने बैठक में प्रदेश की 1,000 नई ग्राम सेवा एवं क्रय-विक्रय सहकारी समितियों को इसी वर्ष निजी गौण मण्डी का दर्जा देने के निर्णय के प्रस्ताव को भी स्वीकृति दी। ये मण्डियां पूर्व में घोषित 550 निजी गौण मण्डियों के अतिरिक्त हैं।

सहकारिता विभाग द्वारा वर्ष 2019-2020 में 21.86 लाख कृषकों को 9541 करोड़ रुपये का अल्पकालीन सहकारी फसली ऋण वितरित किया है। वर्ष 2020-21 में खरीफ सीजन के लिए 23.91 लाख किसानों को 7343.71 करोड़ रुपये का ऋण वितरित किया गया है, इसमें 2.25 लाख नए कृषकों को 393.80 करोड़ रुपये का ऋण बांटा गया। विभिन्न जिलों में 430 गौण मण्डियों में 155.31 करोड़ रुपये की कृषि उपज खरीदी गई। प्रदेश में 5 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में टिड्डी नियंत्रण के लिए दवा का छिड़काव किया गया। ●

फाइल फोटो

मोबाइल ओपीडी वैन

निःशुल्क दवा एवं जांच सैंपल लिए जाएंगे

प्रदेश में चल रही मोबाइल ओपीडी वैनों के जरिए आमजन को न केवल 'मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना' के तहत दी जाने वाली दवाओं का वितरण किया जाएगा बल्कि जरूरी जांच के लिए सैंपल लेने की सुविधा भी इन वैनों में उपलब्ध कराई जाएगी।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि वर्तमान में ज्यादातर अस्पतालों को कोविड फ्री कर दिया गया है फिर भी सरकार ने प्रदेश भर में चलाई जा रही मोबाइल ओपीडी वैन के जरिए आमजन को और अधिक राहत देने के लिए नि:शुल्क दवा और जांच योजना की सुविधा उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने बताया कि 2011 में मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने देश की सबसे लोकप्रिय 'मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना' का शुभारंभ किया। 2013 में मुख्यमंत्री निःशुल्क जांच योजना भी प्रारंभ की गई। दोनों योजनाएं देशभर में नजीर बनीं। उन्होंने बताया कि कोरोना के अलावा बीमारियों के उपचार के लिए प्रदेश में चल रही मोबाइल ओपीडी वैन के जरिए हजारों लोग प्रतिदिन चिकित्सा सुविधाओं का लाभ ले रहे हैं।

एंटीजन टेस्ट पर पुन:विचार के लिए आईसीएमआर को लिखा

स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि एंटीजन टेस्ट की जांच सही नहीं पाए जाने पर स्वास्थ्य विभाग के प्रमुख शासन सचिव ने आईसीएमआर को एंटीजन टेस्ट पर पुनर्विचार और इसकी गुणवत्ता में सुधार करने के लिए लिखा है। उन्होंने बताया कि पूर्व में भी राज्य सरकार द्वारा रैपिड टेस्ट किट की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े करने के बाद केंद्र सरकार को देशभर में किट के इस्तेमाल पर रोक लगानी पड़ी थी।

कोरोना से होने वाली मृत्युदर शून्य पर लाने के होंगे प्रयास

डॉ. शर्मा ने बताया कि प्रदेश भी में जीवनरक्षक इंजेक्शन की खरीद आरएमएससीएल के द्वारा कर ली गई है। सभी जिला अस्पतालों में ये इंजेक्शन उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रदेश में वर्तमान में कोरोना से होने वाली मृत्युदर 1.4 रह गई है। इस दर को शून्य पर लाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

प्लाज्मा दान के प्रति बढ़ रही जागरूकता

उन्होंने बताया कि कोरोना में प्लाज्मा थेरेपी अहम पद्धति साबित हुई है। जिन लोगों को थेरेपी दी गई थी, वे अब पूरी तरह स्वस्थ होकर घर जा चुके हैं। उन्होंने बताया कि लोगों में प्लाज्मा दान के प्रति अब जागरूकता आने लगी है। जो लोग कोरोना पॉजिटिव से नेगेटिव हुए हैं, वे आगे आकर अपना प्लाज्मा दान कर रहे हैं। पिछले दिनों झुंझनूं में 48 लोगों ने प्लाज्मा दान किया है। जोधपुर के कलक्टर ने पॉजिटिव से नेगेटिव होने के बाद प्लाज्मा दान कर लोगों की प्रेरणा बने हैं। जोधपुर में प्लाज्मा कैंप लग रहा है, पाली व अन्य जिलों में व्यापक स्तर पर कैंप आयोजित कर लोगों को प्लाज्मा दान के लिए प्रेरित किया जा रहा है। उन्होंने कोरोना डिफिटर्स से अपील करते हुए कहा कि प्लाज्मा दान देने से कोई परेशानी, कोई कमजोरी नहीं आती बल्कि इस कोशिश से किसी की जिंदगी जरूर बच सकती है।

प्रतिदिन हो रही हैं 32 हजार से ज्यादा जांचें

डॉ. शर्मा ने बताया कि पिछले कुछ दिनों से प्रदेश में पॉजिटिव केसेज के मामलों में बढ़ोतरी हुई लेकिन बढ़ती संख्या के पीछे ज्यादा जांचें होना भी है। प्रदेश में 32 हजार से ज्यादा जांचें प्रतिदिन की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि ज्यादा लोग असिंप्टोमेटिक हैं, ऐसे में जितनी ज्यादा जांचें होंगी उतनी ही जल्द हम कोरोना के प्रसार को थाम सकेंगे। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य बेहतर रिकवरी और कोरोना से होने वाली मृत्युदर को कम करना है। इसके लिए विभाग और सरकार द्वारा कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी जा रही है। राज्य में 73-74 फीसद मरीज बेहतर उपचार के बाद ठीक हो रहे हैं, वहीं कोरोना से होने वाली मृत्युदर 1 फीसद तक हो गई है।

मुख्यमंत्री के प्रयासों से कोरोना रोकथाम में प्रदेश रहा अग्रणी

स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने जिस सतर्कता और सजगता के साथ सैकड़ों वीडियो कॉन्फ्रेंस, मीटिंग्स ली हैं और पल-पल में हमेशा नजर रखी है उसी का परिणाम है कि कोरोना की रोकथाम के हर पैमाने पर राजस्थान अन्य राज्यों के मुकाबले बेहतर खड़ा नजर आ रहा है। उन्होंने कहा कि यही प्रयास आगे भी जारी रहेंगे ताकि आमजन को कोरोना के कुप्रभाव से बचाया जा सके।

क्वारेंटीन सुविधाओं को और बेहतर बनाया जाएगा

उन्होंने बताया कि क्वारेंटीन सुविधाओं के क्रियान्वयन को बेहतर करने के लिए कमेटियों का गठन किया गया था। अब इन कमेटियों को फिर से प्रभावी बनाकर गांव-गांव तक क्वारेंटीन व्यवस्था को मजबूती दी जाएगी। उन्होंने बताया कि सभी चिकित्सा अधिकारी, सरपंच, जन प्रतिनिधि व अन्य अधिकारियों को होम क्वारेंटीन सुविधाओं को मजबूत बनाने के लिए निर्देश दिए जाएंगे। ●

चिकित्सा शिक्षा में करीब 300 करोड़ रुपये के लोकार्पण एवं शिलान्यास

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने कहा कि हमारा पूरा प्रयास रहेगा कि प्रदेश में कोरोना से किसी की जान नहीं जाए। इसके लिए अधिक से अधिक टेस्टिंग पर ध्यान दिया जा रहा है। राज्य सरकार का ध्येय राजस्थान को स्वास्थ्य के क्षेत्र में पूरे देश में सिरमौर बनाना है।

श्री गहलोत ने मुख्यमंत्री निवास से वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से चिकित्सा शिक्षा के 37 चिकित्सा संस्थानों के भवनों के लोकार्पण एवं शिलान्यास के बाद सम्बोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने करीब 300 करोड़ रुपये के लोकार्पण एवं शिलान्यास किए। इसमें 29 भवनों का लोकार्पण तथा 8 निर्माण कार्यों का शिलान्यास शामिल है।

श्री गहलोत ने कहा कि हमारा सपना है कि प्रदेश से किसी भी व्यक्ति को इलाज के लिए बाहर नहीं जाना पड़े। हमारे पिछले कार्यकाल के दौरान स्वास्थ्य ढांचे को मजबूती देने के लिए निःशुल्क दवा योजना एवं निःशुल्क जांच योजना शुरू की गई थी। आज प्रतिदिन 40 हजार से अधिक टेस्टिंग की सुविधा विकसित कर ली गई है, जो आगे चलकर 50 हजार तक पहुंच जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 50 मरीजों का इलाज प्लाज्मा थैरेपी से करने में कामयाबी मिली है। श्री गहलोत ने कहा कि पिछले एक साल में 15 जिलों को मेडिकल कॉलेज मिले हैं, इनको मिलाकर राजकीय क्षेत्र में 31 मेडिकल कॉलेज हो जाएंगे। हमारी मंशा है कि सभी जिलों में मेडिकल कॉलेज खुलें। कोरोना संक्रमण से मुकाबला करते हुए हमने सरकारी अस्पतालों में सुविधाएं विकसित करने पर जोर दिया। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों एवं जिला अस्पतालों में उपकरण एवं चिकित्सा सुविधाएं बढ़ाने पर फोकस किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजस्थान चिकित्सा के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ गया है। कोरोना से मुकाबले में हमारे प्रबंधन की देशभर में सराहना हुई है। हमने कोरोना से मृत्यु दर को काफी नियंत्रण में रखा है और सारे पैरामीटर्स पर अन्य राज्यों से बेहतर प्रदर्शन किया है। श्री गहलोत ने कहा कि कोरोना से इस जंग में सभी दलों के जनप्रतिनिधियों, धर्म गुरुओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, भामाशाहों, सरकारी मशीनरी एवं आमजन का पूरा सहयोग मिला है। लॉकडाउन के दौरान गरीब, असहाय एवं जरूरतमंद लोगों के खातों में 3500-3500 रुपये हस्तांतरित कर सरकार ने उन्हें राहत पहुंचाई है।

श्री गहलोत ने खुद के स्वास्थ्य का ख्याल खुद रखने का संदेश देते हुए आमजन से कोरोना को लेकर किसी तरह की लापरवाही नहीं बरतने, भीड़ एकत्रित नहीं करने, मास्क लगाने एवं सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने की अपील की।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि कोटा एवं जयपुर में प्लाज्मा बैंक स्थापित किए गए हैं और लोगों को प्लाज्मा डोनेट करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। 750 से अधिक मोबाइल ओपीडी वेन संचालित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि इस सरकार के डेढ़ साल के कार्यकाल में 12,500 नर्सिंगकर्मी एवं 765 डॉक्टरों की भर्ती की जा चुकी है। 2 हजार डॉक्टरों की भर्ती अंतिम चरण में है। 6,310 सीएचओएस की भर्ती की प्रक्रिया भी शीघ्र शुरू होगी।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य राज्य मंत्री डॉ. सुभाष गर्ग ने कहा कि पूर्व में स्थापित 7 मेडिकल कॉलेजों के लिए 819 करोड़ रुपये की अतिरिक्त राशि जारी की गई है। इससे इन मेडिकल कॉलेजों एवं इनसे सम्बद्ध अस्पतालों में विभिन्न सुविधाओं का विकास हो सकेगा।

चिकित्सा शिक्षा सचिव श्री वैभव गालरिया ने कहा कि मेडिकल कॉलेजों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों की 961 अतिरिक्त सीटें मिली हैं, जिनमें से 806 सीटों पर प्रवेश प्रक्रिया शीघ्र शुरू हो जाएगी। स्नातक में 650 सीटों की बढ़ोतरी हुई है। ●

राज्य सरकार की मंशा कोरोना से होने वाली मृत्युदर शून्य हो

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने कहा है कि सरकार की मंशा है कि प्रदेश में कोरोना से होने वाली मृत्युदर शून्य पर आ सके इसके लिए सरकार हरसंभव प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि सुकून देने वाली बात यह रही कि जुलाई-अगस्त में प्रदेश में कोरोना से होने वाली मृत्युदर घटकर 1 प्रतिशत तक आ गई। उन्होंने कहा कि प्लाज्मा थैरेपी और जीवनरक्षक इंजेक्शन के जरिए इसे और भी कम किया जा रहा है।

फाइल फोटो

स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि सरकार कोरोना की रोकथाम के लिए सजग और सतर्क है। उन्होंने कहा कि कोरोना मरीजों के बेहतर उपचार के लिए 1300 नए वेंटीलेटर प्रोक्योर किए गए हैं। हालांकि प्रदेश सरकार के पास वेंटीलेटर्स की कोई कमी नहीं थी लेकिन पॉजिटिव्स केसों की बढ़ती संख्या के चलते यह वेंटीलेटर्स खासे उपयोगी होंगे।

डॉ. शर्मा ने बताया कि प्रदेश में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा से जुड़े लोग कोरोना पॉजिटिव चिह्नित पाए जाते हैं और किसी निजी अस्पताल में इलाज करवाना चाहते हैं तो पूरा पुनर्भरण सरकार द्वारा किया जाएगा। उन्होंने बताया कि वंदे भारत के तहत आने वाले करीब 26 हजार से ज्यादा बाहरी लोग राज्य में आए हैं। इनमें से 19 हजार लोगों को सरकार क्वारेंटीन में रखा है।

चिकित्सा मंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा करवाए जा रहे एंटीजन टेस्ट पूरी तरह शुद्धता में खरे नहीं उतरे हैं। उन्होंने कहा कि एंटीजन टेस्ट का फेल होना चिंताजनक बात है। पूरे देश में व्यापक स्तर पर एंटीजन टेस्ट हो रहे हैं। सरकार ने आईसीएमआर को एंटीजन टेस्ट की विश्वसनीयता पर सवाल उठाते हुए लिखा है कि राज्य में एंटीजन टेस्ट की शुद्धता केवल 48 फीसद आई है। ऐसे में इस टेस्ट पर आईसीएमआर को पुनर्विचार करना चाहिए।

स्वास्थ्य मंत्री ने एक बार फिर आमजन से अपील करते हुए कहा कि कोरोना का अभी तक कोई पुख्ता इलाज या कोई वैक्सीन नहीं खोजी जा सकी है, ऐसे में केवल सावधानियों से ही कोरोना को हराया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सरकार अपने स्तर पर कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रही लेकिन आमजन को भी कोरोना प्रोटोकॉल को ध्यान में रखते हुए मास्क लगाने, भीड़ में ना जाने, बार-बार साबुन से हाथ धोने जैसे नियमों की पालना जरूर करनी चाहिए। ●

'कोरोना डिफिटर्स' के प्लाज्मा दान से मिल सकता है जीवनदान

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा ने कहा कि प्रदेश में कोरोना को हराने में प्लाज्मा थेरेपी बेहद कारगर साबित हुई है। ऐसे में गंभीर रूप से पीड़ित लोगों के इलाज के लिए प्लाज्मा की जरूरत रहती है। उन्होंने 'कोरोना डिफिटर्स' को ज्यादा से ज्यादा तादात में प्लाज्मा दान करने का आग्रह किया है। उन्होंने कहा कि कोरोना के दौर में 'प्लाज्मा दान' ही सबसे बड़ा दान है।

डॉ. शर्मा ने कहा कि प्रदेश में प्लाज्मा थेरेपी से कोरोना के गंभीर मरीजों के इलाज की शुरुआत प्रदेश के सबसे बड़े सवाई मानसिंह अस्पताल में की गई। इसका प्रयोग शत-प्रतिशत सफल भी रहा। सफलता के साथ ही अन्य मेडिकल कॉलेजों द्वारा आईसीएमआर से प्लाज्मा थेरेपी से इलाज की अनुमति मांगी गई। वर्तमान में जयपुर, जोधपुर, कोटा और उदयपुर में प्लाज्मा थेरेपी के जरिए मरीजों का इलाज कर उन्हें जीवनदान दिया जा रहा है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि प्लाज्मा थेरेपी से इलाज के लिए बीकानेर और अजमेर को भी जल्द अनुमति मिल जाएगी। उन्होंने कहा कि सरकार प्रत्येक जिला मुख्यालयों के अस्पतालों पर प्लाज्मा थेरेपी से इलाज कराने के लिए माइक्रो लेवल पर प्लानिंग कर रही है। उन्होंने कहा कि यह तभी प्रभावी हो सकेगी, जब ज्यादा से ज्यादा 'कोरोना डिफिटर्स' प्लाज्मा दान करेंगे।

उन्होंने कहा कि सरकार ने प्लाज्मा थेरेपी की महत्ता को समझते हुए एसएमएस अस्पताल में पिछले दिनों प्लाज्मा बैंक की भी स्थापना की है। उन्होंने कहा कि प्लाज्मा दान करने से कोई कमजोरी या परेशानी नहीं होती। इससे तो लोगों की जिंदगी बचाई जा सकती है।

उन्होंने बताया कि चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार 18 से 60 वर्ष की उम्र का कोई भी व्यक्ति, जो आरटीपीसीआर टेस्ट के जरिए बुखार और खांसी के लक्षणों से कोरोना पॉजिटिव पाया गया हो और 14 दिनों के उपचार के बाद पॉजिटिव से नेगेटिव होकर आया हो।

डॉ. शर्मा ने कहा कि भले ही देश के मुकाबले प्रदेश में कोरोना का प्रसार कम है लेकिन इसे केवल सावधानी और सतर्कता से ही रोका जा सकता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के सभी जिला कलक्टर्स से जरूरत के अनुसार स्थानीय लॉकडाउन लगाने के निर्देश दे दिए गए हैं लेकिन यह इसका पुख्ता समाधान नहीं है। उन्होंने कहा कि आमजन कोरोना के प्रोटोकॉल का पालन करेंगे, मसलन बिना जरूरत बाहर ना निकलना, मास्क लगाकर ही बाहर जाना, भीड़भाड़ या समूह में ना जाना, बार-बार साबुन से हाथ धोना तभी कोरोना के बढ़ते कुचक्र को तोड़ा जा सकता है। ●

विश्व प्रसिद्ध सांभर झील संरक्षण

अवैध नमक खनन और अन्य अवैध गतिविधियों को रोकने के दिये निर्देश

राज्य सरकार विश्व प्रसिद्ध सांभर नमक की झील के संरक्षण को लेकर गम्भीर है। मुख्य सचिव श्री राजीव स्वरूप ने शासन सचिवालय में आयोजित सांभर झील से संबंधित द्वितीय स्टैंडिंग कमेटी की अध्यक्षता करते हुए यह बात कही। उन्होंने सांभर झील के इर्द-गिर्द हो रहे अवैध नमक खनन और अन्य अवैध गतिविधियों को लेकर चिन्ता जतायी। उन्होंने नागौर और अजमेर जिला कलक्टर को अवैध विद्युत कनेक्शन तुरन्त प्रभाव से हटवाने के निर्देश दिये। बैठक में मुख्य सचिव ने अजमेर एवं नागौर जिला कलक्टर से वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से संवाद स्थापित कर सांभर झील की वर्तमान स्थिति की समीक्षा भी की।

मुख्य सचिव ने अवैध नमक खनन के लिए इस्तेमाल की जाने वाली पाइप लाइनें, सबमर्सीबल पम्प सेटों को जब्त करने के लिए बिजली एवं पुलिस विभाग के समन्वय से कार्यवाही करने के निर्देश दिये। उन्होंने सांभर झील के क्षेत्र में हो रहे अतिक्रमण को लेकर चिन्ता जताते हुए झील का विस्तृत नक्शा तैयार करने के लिए कहा । मुख्य सचिव श्री राजीव स्वरूप ने झील के एनुअल मैनेजमेंट प्लान पर भी विस्तार से चर्चा की । उन्होंने अधिकारियों से कहा कि सांभर झील के संरक्षण और प्रवासी पक्षियों की सुरक्षा के लिए नगरपालिकाओं और ग्राम पंचायतों को भी जागरूक करना होगा। मुख्य सचिव ने झील के कैचमेंट एरिया में पहुंचने वाले वर्षा जल के मार्ग में हो रहे अतिक्रमणों और अन्य बाधाओं को तुरन्त दूर करने के निर्देश भी दिये। ●

विभागीय विकास कार्य तीव्र गति से हों

मुख्य सचिव श्री राजीव स्वरूप ने अधिकारियों को अन्तर विभागीय समस्याओं का शीघ्र निस्तारण कर प्रदेश के विकास के लिए जन कल्याणकारी कार्यों को तीव्र गति देने हेतु जुट जाने का आह्वान किया है।

मुख्य सचिव यहां शासन सचिवालय में राज्य स्तरीय विकास एवं समन्वय समिति की संयुक्त बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे।

उन्होंने कोरोना महामारी के चलते सभी अधिकारियों को अगले छह माह के लिए लक्ष्य लेकर योजनाएं बनाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी काल में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा मिड-डे मील का जो राशन स्वीकृत किया गया था उसे बाल विकास सेवा निदेशालय, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग एवं विभिन्न जिलों के कलक्टरों के माध्यम से जरूरतमंदों को वितरित किया गया था। उन्होंने इसमें से शेष बचे हुए राशन स्टॉक को स्कूल शिक्षा विभाग को वापस दिये जाने के निर्देश प्रदान किये।

मुख्य सचिव ने कहा कि अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के लिए अंग्रेजी माध्यम में पढ़े शिक्षकों को प्राथमिकता से अवसर दिया जाए। उन्होंने तकनीकी शिक्षा में ऐसे विषयों को पढ़ाए जाने पर बल दिया जिससे विद्यार्थियों के भविष्य की दिशा तय की जा सके। उन्होंने कहा कि नये उद्योगों में रोजगार के अवसरों को देखते हुए विद्यार्थियों की शिक्षा को रिडिजाइन किया जाए जिससे उन्हें रोजगार के अधिक अवसर मिल सकें। ●

कोरोना बचाव जागरूकता में राजस्थान अग्रणी

देश का पहला-अनूठा जागरूकता अभियान

कोरोना संक्रमण को नियंत्रित रखने में राजस्थान के प्रयास रंग लाने लगे हैं। कोरोना से बचाव और जागरूकता के लिए मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के निर्देश पर राजस्थान में सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग द्वारा जिला प्रशासन और अन्य विभागों के सहयोग से जागरूकता अभियान चलाने की जो पहल की गई उससे प्रेरित होकर दूसरे स्थानों पर भी ऐसे ही प्रयास होने लगे हैं। जागरूकता अभियान की यही सबसे बड़ी सफलता है। राजस्थान देश का पहला राज्य हैं जहां पर इस तरह का अनूठा अभियान चलाया गया। सूचना एवं जनसम्पर्क आयुक्त श्री महेन्द्र सोनी का कहना है, 'जागरूकता अभियान से प्रदेश में वृहद् स्तर पर इस बात का संदेश गया है कि कोरोना से बचाव ही उसका निदान है।' जिला जनसम्पर्क अधिकारियों से वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए उन्होंने सतत संवाद किया और ग्राम पंचायतों तक इस अभियान की क्रियान्विति को व्यवहार में सुनिश्चित किया। इसी की परिणति रही कि यह अभियान जन-जन का अभियान बनकर देशभर में उभरा।

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा कोरोना संक्रमण की स्थिति की समीक्षा बैठक में दिए गए निर्देशों की पालना में राज्य में एक महत्त्वपूर्ण पहल यह भी की गई कि सभी जिलों में सार्वजनिक माइक सिस्टम से उद्घोषणा कर कोरोना बचाव जागरूकता संदेश दिए जाने प्रारंभ किए गए हैं। जनसम्पर्क आयुक्त श्री महेन्द्र सोनी ने सभी जिला कलक्टर और जिला प्रभारी सूचना एवं जनसम्पर्क को मुख्यमंत्री के आदेशों की पालना में सार्वजनिक माइक सिस्टम से जागरूकता का संदेश गांव-ढाणी, शहर-शहर तक पहुंचाने के आदेश जारी किए। इससे जिलों में विशेष वातावरण बना और शहरी क्षेत्रों में नगरीय निकाय द्वारा मोबाइल वाहनों से और तंग गलियों में ई-रिक्शा व थ्री-व्हीलर और साइकिलों द्वारा सार्वजनिक माइक सिस्टम के माध्यम से उद्घोषणा कर जागरूकता संदेश पहुंचाया जा रहा है।

आज प्रदेश के चालीस हजार गांवों तक कोरोना जागरूकता अभियान अपना असर दिखा रहा है और आमजन स्वयं जागरूक होकर समझदारी से काम लेने लगे हैं। अब वे अपने स्वास्थ्य का खुद ही ख्याल रख लोगों को भी अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने में जुटे हुए हैं। गांव-गांव, ढाणी-ढाणी तक वृहद् स्तर पर कोविड-19 विशेष जागरूकता अभियान के अंतर्गत कैरी बैग, रंगोली, चित्रकारी, स्लोगन रैली आदि विभिन्न माध्यम से भी निरंतर जागरूकता उत्पन्न की जा रही है।

राजस्थान सरकार की मंशा 'कोरोना से एक भी जान न जाए' के अन्तर्गत एक महत्त्वपूर्ण पहल यह भी प्रदेश में हुई कि कोरोना से ठीक हो चुके व्यक्तियों को प्लाज्मा डोनेट करने के लिए प्रेरित किया गया। सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग ने बाकायदा इसके लिए दो फिल्म बनवाकर उनका जन-जन में जिला जनसम्पर्क अधिकारियों के जरिए प्रसार करवाया। सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा तैयार बहुरंगी प्रचार सामग्री, सन बोर्ड, सन पैक, स्टीकर, पंपलेट, मुख्यमंत्री की विशेष अपील पोस्टर, स्लोगन आदि को सरकारी कार्यालयों और प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर प्रदर्शित करने की पहल रंग लाने लगी है। प्रदेश अब कोरोना से बचाव के लिए जागरूक हो दूसरे प्रदेशों को भी इसी तरह की पहल करने का जैसे संदेश दे रहा है। ●

कोरोना से बचाव के लिए जन जागरूकता का कार्य भी मानव सेवा

प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे मास्टर ट्रेनर्स को किया सम्बोधित

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के आयुक्त एवं विशिष्ट शासन सचिव श्री महेन्द्र सोनी ने कहा है कि कोरोना के प्रति जन-जागरूकता का कार्य एक बड़ा महत्त्वपूर्ण एवं मानव सेवा का कार्य है क्योंकि अभी कोरोना का खतरा बना हुआ है। इस कार्य में लगे लोगों को बिना थके, पूरा उत्साह बनाए रखते हुए अपना काम जारी रखना है। साथ ही कोरोना पॉजिटिव से नेगेटिव हुए लोगों की भ्रांतियां दूर कर उन्हें भी प्लाज्मा डोनेशन के लिए जागरूक किए जाने की महत्ती आवश्यकता है।

श्री सोनी ने 27 जुलाई को यहां राजकीय महारानी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, बनीपार्क में जिला स्तरीय कोरोना जन-जागरूकता प्रदर्शनी का अवलोकन करने के बाद विभिन्न विभागों के मास्टर ट्रेनर्स को सम्बोधित करते हुए यह बात कही। उन्होंने कहा कि कोरोना के खिलाफ जंग में राजस्थान मॉडल को अब देश और दुनिया में मान्यता और सराहना मिल चुकी है। यहां देशभर में प्रति मिलियन सर्वाधिक जांचें हुई हैं। प्रदेश में प्रतिदिन 28 हजार से ज्यादा जांचें की जा रही हैं।

उन्होंने कहा कि हर मोर्चे पर, चाहे जरूरतमंदों को दो वक्त का भोजन प्रदान करना हो, बड़ी आबादी तक गेहूं, दाल पहुंचाने की बात हो या सामाजिक सुरक्षा पेंशन, आर्थिक संबल प्रदान करने की बात हो, प्रदेश अग्रणी रहा है। राजस्थान में कोरोना के कारण होने वाली मृत्युदर अन्य राज्यों से काफी कम एवं रिकवरी रेट ज्यादा है। राज्य सरकार ने हाल ही 40 हजार की कीमत वाला इंजेक्शन भी जरूरतमंद व्यक्तियों को नि:शुल्क देने की घोषणा की है।

आयुक्त एवं विशिष्ट शासन सचिव ने कहा कि हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि देश और प्रदेश में कोरोना संक्रमण के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। देश में यह औसत करीब 40 हजार प्रतिदिन का और प्रदेश में 1 हजार संक्रमित व्यक्ति प्रतिदिन का हो रहा है।

उन्होंने कहा कि इस पूरे परिदृश्य में कोरोना से बचाव के लिए जनजागरूकता कार्य में लगे लोगों की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हो जाती है। उन्हें सारी परिस्थिति को समझकर लोगों को बताना होगा कि कुछ सरल और सामान्य बातें भी जीवन में अपना ली जाएं तो कोरोना से बचा जा सकता है। इसके अलावा उन्हें कोरोना से ठीक होने के बाद

लोगों को प्लाज्मा थेरेपी के लिए प्रोत्साहित करने की दिशा में भी काम करना होगा। प्लाज्मा थेरेपी के प्रति भ्रांतियों को दूर कर उन्हें यह बताना होगा कि जिस तरह रक्तदान लोगों के जीवन की रक्षा करता है और इससे देने वाले को भी खुशी मिलती है, उसी तरह प्लाज्मा थेरेपी के लिए प्लाज्मा डोनेशन करने वाले को कई जीवन बचाने का पुण्य हासिल होता है।

श्री सोनी ने कहा कि आज लोगों को अपना नजरिया बदलने के लिए समझाइश करने की जरूरत है। शादी जैसे कार्यक्रमों को अगर सादगी से, निर्धारित व्यक्ति संख्या की सीमा में ही सम्पन्न किया जाए तो एक ओर कोरोना संक्रमण की आशंका से तो दूसरी ओर फिजूलखर्ची से बचा जा सकेगा। उन्होंने कहा कि जिस व्यक्ति का कोरोना संक्रमण की आशंका के कारण टेस्टिंग हेतु सैम्पल लिया गया है, उसे टेस्टिंग का परिणाम आने तक घर पर ही रुकना चाहिए और लोगों से घुलना मिलना नहीं चाहिए। क्योंकि ऐसे 100 व्यक्तियों में से 4-5 के भी पॉजिटिव आने पर पूरी नई चेन प्रारम्भ हो जाती है।

आयुक्त ने कहा कि आर्थिक गतिविधियां प्रारम्भ हो चुकी हैं क्योंकि जीविका के साथ आजीविका भी जरूरी है, लेकिन भीड़-भाड़ वाली जगहों, सब्जी मण्डियों में सोशल डिस्टेंसिंग के प्रति लापरवाही भी देखी जा रही है। हमें कोरोना को कतई हलके में नहीं लेना, यह संदेश सभी तक पहुंचाना भी हमारी जिम्मेदारी है। हालांकि घबराना बिलकुल नहीं है। कोरोना पॉजिटिव मिल रहे लोगों के सम्मान में भी कमी नहीं आनी चाहिए। सावधानी, समय पर जांच और सही इलाज से यह रोग आसानी से ठीक भी हो जाता है।

श्री सोनी ने प्रदर्शनी का अवलोकन करने के बाद इसे आम-जन के लिए काफी उपयोगी बताया। उन्होंने वहां सेल्फी प्वाइंट पर सतर्कता सेल्फी खिंचवाई एवं शपथ बोर्ड पर हस्ताक्षर भी किए। एसएमएस स्किल लैब के मास्टर ट्रेनर श्री राजकुमार राजपाल एवं श्री राधेलाल ने आयुक्त श्री सोनी को प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में जानकारी प्रदान की और आने वाले दिनों में प्रशिक्षण विस्तार की गतिविधियों के बारे में भी बताया। ●

1857 की क्रांति

स्वतन्त्रता संग्राम में राजस्थान

– आर. एल. चौपड़ा

- राजस्थान में 1857 की क्रान्ति का शुभारम्भ नसीराबाद (अजमेर) छावनी में 15वीं नेटिव इन्फेन्ट्री के सैनिकों के विद्रोह के परिणामस्वरूप हुआ था। यहां सैनिकों ने विद्रोह कर छावनी को लूटकर उसमें आग लगा दी थी।
- 1857 की क्रान्ति के समय भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड केनिंग थे। राजस्थान के ए.जी.जी. जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स थे।
- 1857 की क्रांन्ति के समय राजस्थान में छह सैनिक छांवनियां (ब्यावर, नसीराबाद, नीमच, ऐरनपुरा, देवली तथा खैरवाड़ा) थी।
- 1857 के स्वतन्त्रता के संग्राम में कोटा का योगदान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण था और ब्रिटिश सत्ता को सर्वाधिक सहयोग बीकानेर शासक सरदारा सिंह ने दिया था। मारवाड़ में विद्रोह का प्रमुख केन्द्र आऊवा था।
- राजस्थान में 1857 की क्रान्ति के समय प्रमुख पॉलिटिकल एजेंट इस प्रकार थे – 1. मेवाड़ में पॉलिटिकल एजेन्ट – मेजर शार्क्स, 2. मारवाड़ में पॉलिटिकल एजेन्ट – मेकमोहन, 3. जयपुर में पॉलिटिकल एजेन्ट – ईडन, 4. कोटा में पॉलिटिकल एजेन्ट – मेजर बार्टन
- ऐरनपुरा (जोधपुर) सैनिक छावनी में सैनिकों ने विद्रोह कर आबू में अंग्रेजों की बस्ती को लूट लिया था। इसी प्रकार कोटा विद्रोह में ए.जी.जी. मेजर बार्टन तथा उसके दो पुत्रों को मौत के घाट उतार दिया था।
- धौलपुर विद्रोह में राव रामचन्द्र एवं हीरालाल ने विद्रोहियों का नेतृत्व किया था। इसी प्रकार टोंक विद्रोह में आलम खां के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह हुआ था।
- राजस्थान में स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान निम्नलिखित संस्थाएं गठित हुई थी – 1. हिन्दी साहित्य समिति – महन्त जगन्नाथ दास, 2. नागरी प्रचारिणी सभा – ज्वालाप्रसाद व जौहरी लाल, 3. विद्या प्रचारिणी सभा – हरिभाई किंकर, 4. वीर भारत समाज – विजय सिंह पथिक, 5. सम्प सभा–गुरु गोविन्द गिरि, 6. मारवाड़ सेवा संघ – चाँदमल सुराना, 7. ऊपरमाल पंच बोर्ड– विजय सिंह पथिक, 8. सेवा संघ – भोगी लाल पंड्या, 9. हरिजन सेवा समिति – भोगी लाल पंड्या।
- राजस्थान में जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में राजपूताना के देशी राज्यों में राजनैतिक चेतना जागृत करने के लिए राजपूताना मध्य भारत सभा की स्थापना की गई थी। इसी प्रकार भारत की देशी रियासतों में शांतिपूर्ण उपायों से वहां के राजाओं के अधीन उत्तरदायी शासन स्थापित करने के लिए मुम्बई में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की स्थापना की गई थी।
- जयपुर में अर्जुन लाल सेठी द्वारा 1907 में वर्धमान विद्यालय की स्थापना की गई थी। इस विद्यालय में अध्यापन के साथ–साथ छात्रों के मानस में राष्ट्रीय भावना अंकुरित करने का कार्य भी किया जाता था। इसी प्रकार डूंगरपुर में गौरीशंकर उपाध्याय एवं भोगी लाल पंड्या द्वारा वागड़ सेवा मंदिर की स्थापना की गई थी। सिद्धराज ढ्ढढा द्वारा सर्व सेवा संघ की स्थापना की गई थी। वागड़ सेवा मंदिर की स्थापना डूंगरपुर के आदिवासी भीलों, हरिजनों एवं पिछड़े लोगों में शिक्षा प्रसार एवं समाज सुधार कार्य के लिए की गई थी।
- राजस्थान के प्रमुख अमर शहीदों के शहीद होने का वर्ष इस प्रकार है –1. प्रताप सिंह बारहठ–(1918), 2. रूपाजी एवं किरपा जी धाकड़–(1922), 3. बालमुकन्द बिरला–(1942), 4. सागरमल गोपा–(1946), 5. काली बाई भील–(1947)।
- प्रताप सिंह बारहठ ब्रिटिश सरकार की अमानुषिक यातनाओं से 24 मई, 1918 को जेल में शहीद हो गये थे। जून, 1922 में बेगू किसान आन्दोलन के दौरान मेवाड़ राज्य की सेना द्वारा चलाई गई गोलियों का शिकार होकर रूपाजी एवं किरपा जी धाकड़ शहीद हो गए थे। 1922 में ही किसान आन्दोलन के दौरान नानजी भील शहीद हो गए थे। मारवाड़ लोक परिषद् द्वारा राज्य में उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिए छेड़े गए आन्दोलन के दौरान 19 जून, 1942 को श्री बालमुकन्द बिस्सा जोधपुर में शहीद हो गए थे। राजद्रोह के अभियोग में 1941 में सागरमल गोपा को जैसलमेर में गिरफ्तार किया गया था। अप्रैल, 1946 को उन्हें जेल में जिन्दा जला दिया गया था।
- श्री रमेश स्वामी बेगार विरोधी आन्दोलन के दौरान भुसावर (भरतपुर) में 1947 को बस द्वारा कुचल दिए जाने से शहीद हो गए थे। ठाकुर छत्रसिंह एवं ठाकुर पंचमसिंह लखमीर गांव (धौलपुर) में 1946 में राज्य कांग्रेस द्वारा आयोजित सभा में पुलिस की गोली लगने से शहीद हो गए थे। इसी प्रकार रामाराम चौधरी जागीरदारों द्वारा चलाई गई गोली से 1947 में शहीद हो गए थे। हरिजन युवक बीरबल सिंह 1946 को रायसिंह नगर (श्रीगंगानगर) में एक जुलूस का नेतृत्व करते गोली लगने से शहीद हो गए थे।
- डूंगरपुर राज्य द्वारा सेवा संघ द्वारा संचालित पाठशालाओं को बन्द करवाने के अभियान के दौरान 19 जून, 1947 को पुलिस ने नानाभाई खांट की हत्या कर दी थी। नानाभाई खांट की हत्या वाले दिन ही भील बालिका वीरांगना काली बाई भी पुलिस की गोली का शिकार होकर शहीद हो गई थी।
- शांतिलाल और आनंदीलाल उत्तरदायी शासन की स्थापना के अंतिम दौर में उदयपुर में पुलिस की गोली से शहीद हो गए थे। इसी प्रकार लूणकरण, खूबाराम एवं रामकरण किसान भी जागीरदारों द्वारा लाग–बाग एवं ऊँची दरों पर लगान वसूली का विरोध करने पर पुलिस की गोली का शिकार हो गए थे। ●

पूरब में स्वतंत्रता का सितारा 'हिन्दुस्तान'

– पं. जवाहर लाल नेहरू

देश के पहले प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने 14 अगस्त, 1947 की मध्यरात्रि में वायसराय लॉज (वर्तमान में राष्ट्रपति भवन) में ऐतिहासिक भाषण ''ए ट्रिस्ट विद डेस्टनी'' (नियति से साक्षात्कार) दिया था। उनका यह भाषण 20वीं सदी के महानतम भाषणों में से एक माना जाता है। पूरी दुनिया ने उनके इस भाषण को सुना। आजादी के पावन पर्व के अवसर पर 'सुजस' के पाठकों के लिए उनका वह भाषण संपादित, अनूदित रूप में दिया जा रहा है।

– सम्पादक

हमने नियति को मिलने का एक वचन दिया था और अब समय आ गया है कि हम अपने वचन को निभाएं, पूरी तरह ना सही, लेकिन बहुत हद तक। आज रात बारह बजे, जब सारी दुनिया सो रही होगी, भारत जीवन और स्वतंत्रता की नई सुबह के साथ उठेगा। एक ऐसा क्षण जो इतिहास में बहुत ही कम आता है, जब हम पुराने को छोड़ नए की तरफ जाते हैं, जब एक युग का अंत होता है और जब वर्षों से शोषित एक देश की आत्मा, अपनी बात कह सकती है। यह एक संयोग है कि इस पवित्र मौके पर हम समर्पण के साथ खुद को भारत और उसकी जनता की सेवा और उससे भी बढ़कर सारी मानवता की सेवा करने के लिए प्रतिज्ञा ले रहे हैं।

इतिहास के आरम्भ के साथ ही भारत ने अपनी अंतहीन खोज प्रारंभ की और ना जाने कितनी ही सदियां इसकी भव्य सफलताओं और असफलताओं से भरी हुई हैं। चाहे अच्छा वक्त हो या बुरा, भारत ने कभी इस खोज से अपनी नजर नहीं हटाई और कभी भी अपने उन आदर्शों को नहीं भूला जिसने इसे शक्ति दी। आज दुर्भाग्य के एक युग का अंत हो रहा हैं और भारत पुन: खुद को खोज पा रहा है। आज हम जिस उपलब्धि का उत्सव मना रहे हैं, वो महज एक कदम है, नए अवसरों के खुलने का, इससे भी बड़ी विजय और उपलब्धियां हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं। क्या हममें इतनी शक्ति और बुद्धिमत्ता है कि हम इस अवसर को समझें और भविष्य की चुनौतियों को स्वीकार करें?

भविष्य में हमें विश्राम करना या चैन से नहीं बैठना है बल्कि निरंतर प्रयास करना है ताकि हम जो वचन बार-बार दोहराते रहे हैं और जिसे हम आज भी दोहराएंगे उसे पूरा कर सकें। भारत की सेवा का अर्थ है लाखों-करोड़ों पीड़ित लोगों की सेवा करना। इसका मतलब है गरीबी और अज्ञानता को मिटाना, बीमारियों और अवसर की असमानता को मिटाना। हमारी पीढ़ी के सबसे महान् व्यक्ति की यही महत्वाकांक्षा रही है कि हर एक आंख से आंसू मिट जाएं। शायद ये हमारे लिए संभव न हो पर जब तक लोगों कि आंखों में आंसू हैं और वे पीड़ित हैं तब तक हमारा काम खत्म नहीं होगा। और इसलिए हमें परिश्रम करना होगा और कठिन परिश्रम करना होगा ताकि हम अपने सपनों को साकार कर सकें। वो सपने भारत के लिए हैं, पर साथ ही वे पूरे विश्व के लिए भी हैं, आज कोई खुद को बिलकुल अलग नहीं सोच सकता क्योंकि सभी राष्ट्र और लोग एक दूसरे से परस्परता से जुड़े हुए हैं। शांति को अविभाज्य कहा गया है, इसी तरह से स्वतंत्रता भी अविभाज्य है, समृद्धि भी और विनाश भी, अब इस दुनिया को छोटे-छोटे हिस्सों में नहीं बांटा जा सकता है। हमें स्वतंत्र भारत का महान् निर्माण करना है जहां उसके सारे बच्चे रह सकें।

आज नियत समय आ गया है, एक ऐसा दिन जिसे नियति ने तय किया था और एक बार फिर वर्षों के संघर्ष के बाद, भारत जागृत और स्वतंत्र खड़ा है। कुछ हद तक अभी भी हमारा भूत हमसे चिपका हुआ है और हम अक्सर जो वचन लेते रहे हैं उसे निभाने से पहले बहुत कुछ करना है। पर फिर भी निर्णायक बिंदु अतीत हो चुका है और हमारे लिए एक नया इतिहास आरम्भ हो चुका है, एक ऐसा इतिहास जिसे हम गढ़ेंगे और जिसके बारे में और लोग लिखेंगे।

यह हमारे लिए एक सौभाग्य का क्षण है, एक नए तारे का उदय हुआ है, पूरब में स्वतंत्रता का सितारा। एक नयी आशा का जन्म हुआ है, एक दूरदृष्टिता अस्तित्व में आई है। काश ये तारा कभी अस्त न हो और ये आशा कभी धूमिल न हो। हम सदा इस स्वतंत्रता में आनंदित रहें।

भविष्य हमें बुला रहा है। हमें किधर जाना चाहिए और हमारे क्या प्रयास होने चाहिए, जिससे हम आम आदमी, किसानों और कामगारों के लिए स्वतंत्रता और अवसर ला सकें, हम गरीबी, अज्ञानता और बीमारियों से लड़ सकें, हम एक समृद्ध, लोकतांत्रिक और प्रगतिशील देश का निर्माण कर सकें और हम ऐसी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना कर सकें जो हर एक आदमी–औरत के लिए जीवन की परिपूर्णता और न्याय सुनिश्चित कर सकें।

हमे कठिन परिश्रम करना होगा। हम में से कोई भी तब तक चैन से नहीं बैठ सकता है जब तक हम अपने वचन को पूरी तरह निभा नहीं देते, जब तक हम भारत के सभी लोगों को उस गंतव्य तक नहीं पहुंचा देते जहां भाग्य उन्हें पहुंचाना चाहता है।

हम सभी एक महान् देश के नागरिक हैं, जो तीव्र विकास की कगार पे है, और हमें उस उच्च स्तर को पाना होगा। हम सभी चाहे जिस धर्म के हों, समान रूप से भारत मां की संतान हैं और हम सभी के बराबर अधिकार और दायित्व हैं। हम और संकीर्ण सोच को बढ़ावा नहीं दे सकते, क्योंकि कोई भी देश तब तक महान् नहीं बन सकता जब तक उसके लोगों की सोच या कर्म संकीर्ण हैं।

विश्व के देशों और लोगों को शुभकामनाएं भेजिए और उनके साथ मिलकर शांति, स्वतंत्रता और लोकतंत्र को बढ़ावा देने की प्रतिज्ञा लीजिए। और हम अपनी प्यारी मातृभूमि, प्राचीन, शाश्वत और निरंतर नवीन भारत को नमन करते हैं और एकजुट होकर नए सिरे से इसकी सेवा का संकल्प लेते हैं। ●

नसीराबाद से बजा था बिगुल

राजस्थान में 1857 की पहली ज़ंग-ए-आज़ादी

– नलिन चौहान

देश में वर्ष 1857 को हुए पहले स्वतंत्रता संग्राम का राजस्थान में शंखनाद नसीराबाद से हुआ। तब राजपूताना का बहुत कम भाग अंग्रेजों के सीधे प्रशासन में था। उस समय राजपूताने का अंग्रेजी प्रशासन उत्तर-पश्चिम प्रदेश के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर के अधीन था और यहां शान्ति कायम रखने का दायित्व राजस्थान के एजीसी का था। इनमें तीन महत्त्वपूर्ण सैनिक चौकियां थीं अजमेर, नसीराबाद और नीमच।

जब 1857 में राजपूताने में क्रांति शुरू हुई तब राजस्थान का एजेन्ट टू गवर्नर जनरल (एजीजी) जार्ज सेंट पैट्रिक लॉरैन्स था। उसके अधीन कई पॉलिटिकल एजेन्ट थे जो बड़ी-बड़ी रियासतों में नियुक्त थे। यहां छह सैनिक छावनियां थीं नसीराबाद, अजमेर, देवली, खैरवाड़ा, ऐरनपुरा और नीमच। इन सभी छह छावनियों में अंग्रेजी पलटनें थीं परन्तु इनमें अधिकांश सैनिक भारतीय थे।

अजमेर से 16 मील की दूरी पर नसीराबाद छावनी में दो रेजीमेंट, बंगाल नेटिव इन्फेंट्री 15 एवं 30 तथा फर्स्ट बॉम्बे केवलरी और पैदल तोपखाना बैटरी तैनात थी। नसीराबाद से केवल 60 मील दूर देवली छावनी में कोटा दस्ता तैनात था जिसमें इंडियन केवलरी की एक रेजीमेन्ट और इन्फेंट्री थी। भारतीय सैनिकों, घुड़सवार और पैदल सैनिकों की एक रेजीमेन्ट नीमच में थी जो नसीराबाद से 120 मील दूर था। अजमेर से सौ मील दूर ऐरनपुरा में जोधपुर रियासत के अनियमित सैनिकों की पूरी पलटन तैनात थी जिसकी व्यवस्था जोधपुर रियासत के हाथों में थी। मेवाड़ में उदयपुर से पचास मील दूर खैरवाड़ा में अंग्रेज अधिकारियों के नियंत्रण में भील पलटन थी। मेरों (रावतों की मेरवाड़ा बटालियन) की एक अन्य पलटन ब्यावर में तैनात थी। जयपुर पॉलिटिकल एजेन्ट के रक्षक भारतीय सैनिक ही थे परन्तु जब इस संग्राम का आरम्भ हुआ तो राजस्थान में अंग्रेज सैनिक अधिक नहीं थे इसलिए एक प्रकार से अंग्रेजों की स्थिति बड़ी भयावह अवश्य थी।

जब 19 मई, 1857 में मेरठ में होने वाली क्रांति की सूचना राजस्थान पहुंची उस समय

एजीजी जनरल लॉरैन्स आबू में था। उसने तुरन्त ही सम्बन्धित अधिकारियों को सूचित किया और बतलाया कि उन्हें क्या सावधानी रखनी चाहिए। अजमेर की सुरक्षा के लिए उसने 21 मई, 1857 को दौसा से एक ब्रिगेड नसीराबाद मंगवाई। यह स्थान सबसे निकट था और यहीं पर यूरोपीय सैनिक थे। उसने सभी राजपूताना के शासकों के नाम एक घोषणा पत्र जारी किया कि सारे शासक अपने राज्य की सीमा के अन्दर शांति बनाए रखें। उनके राज्य से होकर जो कोई विद्रोही लोग निकलें उनको पकड़ें। इस घोषणा पत्र से सर्वोच्चता के प्रति निष्ठावान रहने तथा सैनिक सहायता के लिए उद्यत रहने के लिए सूचित भी किया गया था।

सुरेन्द्रनाथ सेन ने अपनी पुस्तक ''1857 का स्वतंत्रता संग्राम'' में लिखा है कि 1857 में राजपूताना के राजा अंग्रेजों के प्रति निष्ठावान बने रहे। फिर भी राजपूताना को अपने हिस्से की दिक्कतों का सामना करना पड़ा। विद्रोह हो जाने पर अंग्रेजों की मुख्य चिंता अजमेर की सुरक्षा को लेकर थी।

ऐसे में, अजमेर तो बच गया लेकिन कुछ दूर नसीराबाद में अंग्रेजी राज के विरुद्ध विद्रोह हुआ। यहां बंगाल सिपाहियों की दो रेजीमेन्ट और फर्स्ट बॉम्बे केवलरी रेजीमेंट तैनात थी। मई, 1857 में जब हड्डी मिले आटे की कहानियां नसीराबाद भी पहुंची तो भारतीय सिपाहियों में आक्रोश भर गया। इसके अलावा यह अफवाह भी थी कि दौसा से एक यूरोपीय फौज देशी सिपाहियों को निहत्था करने आ रही है। इस समाचार ने अंग्रेज सत्ता विरोधी भावना को और अधिक भड़का दिया। नसीराबाद की स्थिति बद से बदतर होने लगी।

भारतीय सैनिकों में यह बात भी फैल गई, विशेषकर अंग्रेजी पलटनों में और तोपखाना टुकड़ी में कि कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी लगी हुई है जिनको बन्दूकों में रखने से पहले मुंह से काटना पड़ता है। उल्लेखनीय है कि नसीराबाद में 10 मई, 1857 में हुए मेरठ विप्लव का प्रभाव 15वीं बंगाल नेटिव इन्फेंट्री के माध्यम से आया था। इस इन्फेंट्री की एक टुकड़ी 1 मई, 1857 में अजमेर के शस्त्रागार की रक्षा कर रही थी जो मेरठ से ही प्रशिक्षित होकर आई थी।

एजीजी के अजमेर में स्थित 15वीं बंगाल इन्फेंट्री को अविश्वास के कारण नसीराबाद भेज दिया गया जिसके कारण सैनिकों में असंतोष उत्पन्न हो गया। वहीं अंग्रेजों ने फर्स्ट बम्बई लांसर्स के सैनिकों से नसीराबाद में गश्त लगवाने के साथ बारूद भरी तोपें तैयार करवाने के कारण सैनिकों में असंतोष पनपा। इन सब तथ्यों ने पहले से एकत्र बारूद के ढेरी में आग सुलगाने का काम किया।

इसका परिणाम 28 मई को नसीराबाद की दो पैदल टुकड़ियों के रेजीमेन्टों के अंग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठाने के रूप में सामने आया। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1818 में अंग्रेजों ने मराठा सरदार दौलतराव सिन्धिया से एक सन्धि करके अजमेर प्राप्त किया था। उसके बाद ही नसीराबाद में एक अंग्रेज सैनिक छावनी बनाई गई थी।

यहां आजादी का परचम लहराने की पहल 15वीं बंगाल नेटिव इन्फेंट्री के सैनिकों ने की। इन सैनिकों ने नसीराबाद के अंग्रेज बंगलों तथा

दिल्ली में अंग्रेज जासूसों की जुबानी, नसीराबाद की सेना की कहानी

'जासूसों के खुतूत और दिल्ली हार गई' नामक पुस्तक में अंग्रेजों के भेदियों के विवरण की महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है। पुस्तक में नसीराबाद की भारतीय टुकड़ी के बारे में 27 अगस्त, 1857 को गौरीशंकर की टिप्पणी है, ''सूचना मिली है कि जनरल बख्त खां का डिवीजन और नसीराबाद की सेना भी नजफगढ़ प्रस्थान करने वाली है। नांगली के निवासी ने इस युद्ध में विद्रोहियों की अधिक सहायता की और उनमें कुछ ने विद्रोही सिपाहियों के साथ युद्ध में भाग लिया।'' फिर 16-17 जून, 1857 की प्रविष्टि से पता चलता है कि नसीराबाद की फौज एक लाइट फील्ड बैटरी के साथ 19 तारीख को दिल्ली पहुंचने वाली है जबकि 27 जून, 1857 का इंद्राज बताता है कि आज सुबह नसीराबाद की सेना ने मिर्जा मुगल से निवेदन किया है कि शहर में उपस्थित सभी सेना को चाहिए कि वे शहर से बाहर निकल कर अंग्रेजी कैम्प पर आक्रमण कर दें अन्यथा वे स्वयं शहर में आकर डेरा लगा लेगी। विद्रोही रेजीमेंटों में अब कुछ ही पुराने सिपाही रह गए हैं परंतु सेना के अफसर अभी तक उनका वेतन वसूल कर रहे हैं। नसीराबाद की सेना अपने वेतन की मांग कर रही है।

28 जून, 1857 को जासूस अमीचंद की खबर है कि नसीराबाद की सेना अभी तक (दिल्ली के) अजमेरी दरवाजे के बाहर बैठी हुई है, झज्जर की पैदल सेना के एक सौ सिपाही आज विद्रोहियों से आ मिले हैं। जबकि 5 जुलाई, 1857 की प्रविष्टि बताती है कि एक सूचना ये भी है कि अंग्रेजों की सहायता के लिए फिरोजपुर से ग्यारह लाख रुपए का खजाना पहुंचने वाला है। अत: रोहिलखंड और नसीराबाद की विद्रोही सेना ने ये सुनकर अलीपुर कूच करने का फैसला किया है ताकि वहां पहुंचकर फिरोजपुर से आने वाली रकम को लूट लें और अंबाला जाने वाले बीमार अंग्रेजों को मार डालें। 20वीं न्यू इन्फेंट्री को नवाब अब्दुल्ला के ब्रिगेड से निकालकर नसीराबाद ब्रिगेड में शामिल कर दिया गया है। रोहिलखंड और नसीराबाद की सेनाओं ने कमांडर-इन-चीफ के परामर्श पर कार्य करते हुए आपस में समझौता कर लिया है। इनका संकल्प है कि महु और नीमच सेना के आ जाने के बाद अंग्रेज मोर्चों पर एक जानतोड़ आक्रमण किया जाए। रोहिलखंड और नसीराबाद की सेनाएं अजमेरी दरवाजे और दिल्ली के बीच डेरा डाले हैं। न्यू इन्फेंट्री की 60वीं रेजीमेंट पुराने किले में हैं और 20वीं न्यू इन्फेंट्री लाहौरी दरवाजे के निकट ठहरी है। ●

सार्वजनिक भवनों को लूट लिया और उनमें आग लगा दी। यहां तक कि फर्स्ट बॉम्बे केवलरी दल ने भी अपने अंग्रेज अधिकारियों को सहयोग नहीं किया और भारतीय सैनिकों के विरुद्ध कोई कार्रवाई करने से इनकार कर दिया जबकि इस दल के सिपाहियों ने यूरोपीय महिलाओं और बच्चों की उस समय सुरक्षा व्यवस्था की जब वे ब्यावर की ओर जा रहे थे। दो अंग्रेज अधिकारी मारे गए और तीन घायल हो गए।

अंग्रेज लेखक इल्तुदूस थॉमस प्रिचार्ड ने पुस्तक ''म्यूटिनीज इन राजपूताना'' (1860) में लिखा है कि नसीराबाद के सिपाहियों ने जब विद्रोह किया तब बम्बई की घुड़सवार सेना ने उनसे युद्ध करने से इनकार कर दिया। उसके हिसाब से दोनों में पहले से कोई समझौता हो चुका था। बंबई की सेना में अवध के सिपाही भी थे लेकिन वे उसका एक हिस्सा ही थे। उसमें गैर-हिन्दुस्तानी भी थे और उन्होंने हिन्दुस्तानियों की सहायता की।

इस प्रकार नसीराबाद स्वतन्त्रता सेनानियों के हाथ में चला गया। दूसरे दिन आजादी के सिपाहियों ने नसीराबाद छावनी को लूट दिल्ली का मार्ग लिया।

इतिहासकार सुंदरलाल अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''भारत में अंग्रेजी राज'' (द्वितीय खंड) में लिखते हैं कि देशी सिपाहियों के नेता दिल्ली सम्राट के नाम पर नगर के शासन का प्रबंध करके खजाना, हथियार और कई हजार सिपाहियों को साथ लेकर दिल्ली की ओर चल दिए।

इन आजादी के दीवाने सैनिकों का पीछा मारवाड़ के एक हजार प्यादी सेना ने किया जिसका नेतृत्व अजमेर का असिस्टेन्ट कमिश्नर लेफ्टिनेन्ट वाल्टर और मारवाड़ का असिस्टेंट जनरल तथा लेफ्टिनेन्ट हीथकोट और एन्साईन बुड कर रहे थे लेकिन पीछा करने वाली सेना को कोई सफलता नहीं मिली। प्रिचार्ड के अनुसार विद्रोही सिपाहियों से लड़ने के लिए जब जोधपुर और जयपुर दरबारों के दस्ते आए (अंग्रेजों के नेतृत्व में राजस्थान में रहने वाली देशी पलटनों से ये भिन्न थे) तब उन्होंने लड़ने से इनकार कर दिया। उन्होंने इस बात को छिपाया नहीं कि उनकी सहानुभूति विद्रोहियों के साथ है क्योंकि उन्हें ऐसा विश्वास हो गया था कि ब्रिटिश लोग उनके धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप कर रहे थे।

जिस असाधारण तेजी से आजादी के सिपाही दिल्ली की ओर बढ़ रहे थे इसका एक कारण नसीराबाद की विद्रोह पूर्ण घटना भी थी। डब्ल्यू. कार्नेल जो उस समय अजमेर में सुरक्षा का सैन्य अधिकारी था जब अजमेर पर आक्रामक कार्रवाई की गयी थी, अंदर-बाहर के खतरों के बावजूद दिन रात जागते हुए तेजी से आगे बढ़ रहा था। उस समय वह काफी हताश भी था। उसने जोधपुर के महाराजा द्वारा भेजी गई विशाल सेना को भी अजमेर में रहने की अनुमति नहीं दी। उस समय अजमेर-मेरवाड़ा का कमिश्नर कर्नल सी. जे. डिक्सन था।

जबकि दूसरी तरफ अजमेर की स्थिति का लाभ न उठाकर आजादी के सिपाहियों की सेना तेजी से दिल्ली की ओर बढ़ती ही चली गयी जबकि अंग्रेज अजमेर की हर कीमत पर रक्षा करने को तत्पर थे क्योंकि वह राजपूताने के केन्द्र में स्थित था तथा सामरिक दृष्टि से भी उसकी स्थिति काफी महत्त्वपूर्ण थी। यदि वह स्वतंत्रता सेनानियों के हाथ में चला जाता तो अंग्रेज हितों को भारी आघात लग सकता था क्योंकि अजमेर में भारी शस्त्रागार, खजाना और अपार सम्पदा मौजूद थी। यही कारण है कि स्वयं जार्ज लॉरेंस किले की मरम्मत करवाने तथा छह माह की रसद इकट्ठा करने में प्रयत्नशील रहा। इस प्रकार के प्रबन्ध से अजमेर क्रांति की लपटों से बचाया जा सका।

प्रसिद्ध हिंदी लेखक रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक ''सन् सत्तावन की राज्य क्रांति'' में लिखा है कि राजस्थान की जनता का हृदय अंग्रेजों से लड़ने वाली देश की शेष जनता के साथ था। अपने सामन्तों और अंग्रेज शासकों के संयुक्त मोर्चे के कारण वह अपनी भावनाओं को भले ही सक्रिय रूप से बड़े पैमाने पर प्रकट न कर सकी हो किन्तु उसकी भावनाओं के बारे में सन्देह नहीं हो सकता।

वहीं प्रिचार्ड ने राजस्थान के सामन्त-शासकों के बारे में लिखा है कि वे अपने कर्तव्य-पथ पर अडिग रहे अर्थात् अपनी जनता के प्रति विश्वासघात करके अंग्रेजों का साथ देते रहे। लेकिन उसने स्वीकार किया है कि अनेक सामन्त अपने सिपाहियों और प्रजा पर नियन्त्रण न रख सके। इन्होंने अपनी सेनाएं अंग्रेजों की सेवा के लिए भेजीं लेकिन कुछ अपवादों को छोड़कर उन्होंने विद्रोहियों से लड़ना अस्वीकार कर दिया।

''राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम'' पुस्तक में बी.एल. पनगड़िया लिखते है कि विद्रोही अगर दिल्ली की बजाय अजमेर जाकर वहां के शस्त्रागार पर अधिकार कर लेते और प्रशासन हाथ में ले लेते तो राजपूताने की रियासतों में विद्रोह को भारी बल मिलता और उस पर नियन्त्रण पाना अंग्रेजी सल्तनत के लिए आसान न होता। पर देश के भाग्य में तो अभी गुलामी ही बदी थी। ●

आऊवा ठाकुर कुशाल सिंह

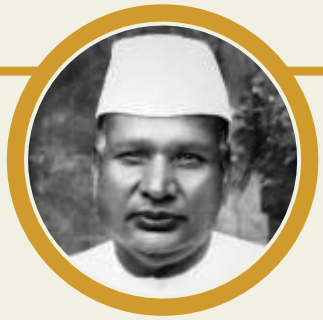
जमनालाल बजाज

विजय सिंह पथिक

मोतीलाल तेजावत

प्रजामंडल आंदोलन से प्रजातंत्र की नींव

– रतन सिंह शेखावत

इतिहास में झांकने पर हम पाएंगे कि राजस्थानवासियों के लिए स्वतंत्रता की शुभ घड़ी थोड़ी देर से और अलग रूप में आई। राजस्थान उन राज्यों में से है जो सीधे अंग्रेजी हुकूमत के अधीन नहीं रहा और इसलिए आजादी के पहले सवेरे तक भी वह राजतंत्र के अधीन था। ब्रिटिश भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों और स्वराज हासिल करने की भावना सबसे पहले फैली। स्वाभाविक है कि राष्ट्रवाद का उदय भी देश के उन हिस्सों में सबसे पहले हुआ जो सीधे ब्रिटिश शासन के अधीन थे। ब्रिटिश भारत में स्वतंत्रता आंदोलन ने लंबे समय तक देशी रियासतों से अलग ही रखा था। बावजूद इसके, राजस्थान में प्रजातंत्र और लोकतांत्रिक अधिकारों की मांग शेष भारत से कम नहीं रही। इसके पीछे राजस्थान में लंबे समय तक चले प्रजामंडल आंदोलन और किसान/आदिवासी आंदोलनों की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण रही।

अंग्रेजों ने जब देश छोड़ा तो राजस्थान में 19 रियासतें और 3 ठिकाने थे। राजनीतिक अराजकता से छुटकारा पाने के लिए राजस्थान की सभी रियासतों के राजाओं ने वर्ष 1818 में अंग्रेजों से संधि तो कर ली लेकिन इससे आम जनता पर करों का बोझ बढ़ गया और इससे विदेशी हुकूमत के खिलाफ जनाक्रोश के लिए जमीन तैयार होने लगी थी। अंग्रेजों के अप्रत्यक्ष नियंत्रण से रजवाड़े भी नाखुश थे लेकिन सत्ता सुख के लिए इसे सहन करने को बेबस थे। हालांकि जनता दोहरी हुकूमत के खिलाफ मानस बना रही थी ऐसे में जब देश में 1857 की क्रांति हुई तो राजपूताना में भी यह विद्रोह नसीराबाद छावनी से लेकर नीमच तक फैला। आऊवा ठाकुर कुशाल सिंह और अन्य लोगों ने इसका नेतृत्व किया। हालांकि 1857 का विद्रोह दबा दिया गया लेकिन इससे यह बात साफ हो गई थी कि राजस्थान में भी लोकतांत्रिक अधिकार हासिल करने के लिए जनता तैयार है और इसका फायदा प्रजामंडल आंदोलन के नेताओं को मिला। राजस्थान में लोकतांत्रिक शासन की मांग को लेकर पहली राजनीतिक संस्था राजपूताना मध्य भारत सभा वर्ष 1918 में बनी जिसमें विजय सिंह पथिक और जमनालाल बजाज जैसे नेता शामिल थे। बाद में मारवाड़, मेवाड़, जयपुर आदि सभी रियासतों में प्रजामंडल आंदोलन तेज होते गए जिनका नेतृत्व अलग-अलग लोग कर रहे थे। प्रजामंडल आंदोलनों के लिए जनमत जुटाने में प्रेस भी मददगार हुई। वर्ष 1920 से पूर्व राजपूताना में प्रेस का विकास भी बहुत कम था। वर्ष 1885 में 'राजपूताना गजट' और 1889 में 'राजस्थान समाचार' का प्रकाशन शुरू हुआ लेकिन ये कुछ समय बाद ही बंद हो गए। विजय सिंह पथिक ने 1920 में 'राजस्थान केसरी' पहले वर्धा से और बाद में अजमेर से प्रकाशित किया। वर्ष 1922 में राजस्थान सेवा संघ ने 'नवीन राजस्थान' का प्रकाशन किया। ऋषिदत्त मेहता ने 1923 में ब्यावर से 'राजस्थान' नामक साप्ताहिक निकाला। यह बात सही है कि उस दौरान शिक्षा का स्तर कम था लेकिन फिर भी समाचार-पत्र, पत्रिकाओं ने न केवल प्रदेश के बल्कि देश के अन्य भागों में भी सरकार के शोषण और अत्याचार की खबरें प्रकाशित कर जन जागरण का कार्य किया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे राष्ट्रीय आंदोलनों की सूचनाएं भी लोगों तक पहुंचाने का माध्यम प्रेस बनी और लोग स्वतंत्रता आंदोलन से खुद को जोड़कर देखने लगे। यही वजह है कि जब प्रजामंडलों का गठन हुआ तो राजाओं पर उत्तरदायी सरकारें गठित करने के लिए जनता का दबाव बढ़ता गया।

राजस्थान के किसान और आदिवासी आंदोलनों की भूमिका को भी कमतर नहीं मान सकते। मेवाड़ रियासत के अंतर्गत भीलों का मेवाड़ राजपरिवार के साथ हमेशा सौहार्द रहा लेकिन जनवरी, 1818 की अंग्रेजों से संधि के बाद अंग्रेजों का हस्तक्षेप बढ़ा तो भीलों को विद्रोह करना पड़ा। आदिवासी बहुल डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, सिरोही जैसे क्षेत्रों में भूमि सुधार की मांग जैसे मामले आदिवासी आंदोलन का कारण बने। मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में भी लंबे समय तक आदिवासी आंदोलन चला। इसके अलावा किसान आंदोलनों को भी राजशाही और जमींदारी प्रथा के खिलाफ माहौल तैयार करने में महत्त्वपूर्ण माना जाता है। विजय सिंह पथिक के नेतृत्व में चला मेवाड़ का बिजौलिया किसान आंदोलन भूमि सुधार और जमीन पर किसानों का स्वामित्व सुनिश्चित करने की दिशा में मील का पत्थर साबित हुआ। शेखावाटी में भी किसान आंदोलन लंबे समय तक चले। राजस्थान सेवा संघ के नेता रामनारायण चौधरी ने वर्ष 1922 में बिजौलिया समझौते के बाद सीकर को अपना कार्यक्षेत्र बना लिया। उन्होंने 'तरुण राजस्थान' में किसानों के पक्ष में लिखकर माहौल तैयार किया। यही नहीं, उन्होंने लंदन से प्रकाशित होने वाले डेली हेराल्ड तक में लेख लिखकर राजस्थान के किसानों के पक्ष में माहौल बनाया। जयपुर राज्य प्रजामंडल की जब 1938 में फिर से स्थापना हुई तो उसने शेखावाटी के किसान आंदोलन का समर्थन किया। कुछ लोग शेखावाटी के किसान आंदोलन को जाति आधारित आंदोलन मानते हैं लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि राजस्थान में भूमि सुधारों की दिशा में दबाव बनाने में इसकी निर्णायक भूमिका रही। राज्य में प्रजामंडल और किसान-आदिवासी आंदोलनों ने जो जनमत तैयार किया उससे देशी रियासतों का देश में विलय करवाने और राजस्थान में लोकतांत्रिक सरकार स्थापित करने में बड़ी मदद मिली। ●

क्रांतिकारी बारहठ परिवार

– कृष्णकांता शर्मा

राजस्थान के स्वतंत्रता आंदोलन इतिहास में बारहठ परिवार का अद्भुत योगदान है। यह ऐसा परिवार है जिसके प्रत्येक सदस्य ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की क्रांतिकारी गतिविधियों में व्यक्तिगत सक्रिय भूमिका रही।

श्री केसरीसिंह बारहठ प्रसिद्ध राजस्थानी कवि और स्वतंत्रता सेनानी थे। यह राजस्थान के चारण परिवार से थे जिनका जन्म 21 नवम्बर, 1872 को शाहपुरा रियासत के देवपुरा गांव में श्री कृष्णसिंह बारहठ के परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा उदयपुर में हुई थी। उन्होंने बंगला, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं के साथ इतिहास, मनोविज्ञान, खगोलशास्त्र तथा ज्योतिष, इतिहास सहित कई विषयों एवं भाषाओं को सीखा। बारहठ ने राजस्थान के लोगों को शिक्षा के द्वारा ब्रिटिश शासन के खिलाफ जाग्रत करने और उन्हें संगठित करने का कार्य किया। केसरी सिंह का पूरा परिवार पुत्र प्रतापसिंह, छोटा भाई जोरावर सिंह और उनका दामाद ईश्वरीसिंह सभी क्रांतिकारी गतिविधियों में सम्मिलित थे। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों की हथियारों एवं अन्य वस्तुओं द्वारा भी सहायता की और भरपूर समर्थन दिया। ठाकुर केसरी सिंह का देश के शीर्ष क्रांतिकारियों, रासबिहारी बोस, मास्टर अमीरचंद, लाला हरदयाल, श्यामजी कृष्ण वर्मा, अर्जुन लाल सेठी, राव गोपाल सिंह खरवा आदि से घनिष्ठ संबंध थे। उनके द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों को सहायतार्थ हथियार उपलब्ध कराए।

सन् 1903 में उदयपुर रियासत के राजा फतेहसिंह ने लार्ड कर्जन द्वारा बुलाई गई बैठक में भाग लेने से रोकने के उद्देश्य से उन्हें ''चेतावनी रा चुंगट्या'' नामक सोरठे रचे जिससे प्रभावित होकर राजा फतेहसिंह ने इस बैठक में भाग नहीं लिया। सन् 1912 में राजपूताना में ब्रिटिश सी.आई.डी. द्वारा जिन व्यक्तियों पर निगरानी रखी जाती थी उनमें केसरी सिंह बारहठ का नाम राष्ट्रीय अभिलेखाकार की सूची में सबसे ऊपर था। शाहपुरा के राजा नाहरसिंह के सहयोग से 2 मार्च, 1914 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया और प्यारेलाल नामक साधु की हत्या और दिल्ली–लाहौर षड्यंत्र केस में राजद्रोह का आरोप लगाया गया। 20 वर्ष का कारावास दे दिया गया। बाद में बिहार के हजारीबाग जेल में डाल दिया। जिस दिन केसरी सिंह को गिरफ्तार किया गया था उसी दिन से उन्होंने अन्न–जल त्याग दिया। उन्हें भय था कि अंग्रेज गुप्त बातें उगलवाने के लिए कोई चीज ना खिला दे कि उनका मस्तिष्क विकृत हो जाए।

हजारीबाग जेल से उन्हें अप्रैल, 1920 में मुक्त किया गया। जेल से छूटने के बाद आबू के गवर्नर जनरल को केसरी सिंह बारहठ ने एक पत्र में लिखा, उन्होंने भारत की रियासतों एवं राजस्थान के लिए एक उत्तरदायी सरकार की स्थापना की एक योजना प्रस्तुत की। जेल से मुक्ति

के उपरान्त वर्ष 1920-21 में सेठ जमनालाल बजाज के बुलावे पर केसरी सिंह वर्धा गए। वहां विजय सिंह पथिक के साथ मिलकर ''राजस्थान केसरी'' नामक साप्ताहिक पत्रिका निकालना प्रारम्भ किया। वर्धा में केसरी सिंह बारहठ महात्मा गांधी के सम्पर्क में आए। डॉ. भगवान दास, पुरुषोत्तम टंडन, पुरुषोत्तम बाबू, गणेश शंकर विद्यार्थी, चन्द्रधर शर्मा, रावगोपाल सिंह खरवा, माखनलाल चतुर्वेदी, अर्जुनलाल सेठी आदि वर्धा में उनके अन्य साथीगण रहे।

केसरी सिंह योगी पुरुष के रूप में जाने जाते थे। उनके प्रमुख ग्रंथ – प्रतापसिंह चरित्र, रूठी रानी, कुसुमांजलि, दुर्गादास चरित्र इत्यादि रहे। यह डिंगल भाषा के कवि थे। 7 अगस्त, 1941 को कवि रविन्द्रनाथ टैगोर का देहान्त हो गया यह खबर जब केसरी सिंह बारहठ को उनके डॉक्टर द्वारा सुनाई गई तो उन्होंने कहा कि अब तो कवियों का दरबार ऊपर ही लगेगा। महान् कवि टैगोर की मृत्यु के 7 दिवस पश्चात् ठाकुर केसरी सिंह का देहान्त हो गया। वो क्रांतिकारी कवि थे जिन्होंने राष्ट्र की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

जोरावर सिंह बारहठ

ठाकुर केसरी सिंह बारहठ के छोटे भाई जोरावर सिंह बारहठ एक साहसी क्रांतिकारी थे। इनका जन्म 12 सितम्बर, 1883 में उदयपुर में हुआ। पिता कृष्णसिंह बारहठ इतिहासकार एवं साहित्यकार थे। इनके बड़े भाई केसरी सिंह बारहठ देशभक्त, क्रांतिकारी विचारक एवं कवि थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा जोधपुर में हुई। उन्होंने महलों का वैभव त्यागकर स्वाधीनता आंदोलन को चुना। उनका विवाह कोटा रियासत के ठिकाने अतरालिया के चारण ठाकुर तख्तसिंह की बेटी अनोप कंवर से हुआ। उनका मन वैवाहिक जीवन में नहीं रमा। उन्होंने क्रांति पथ चुना और स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई।

रासबिहारी बोस ने लार्ड हार्डिंग्ज बम कांड को मूर्त रूप देने के लिए जोरावर सिंह और प्रताप सिंह (भतीजा) को बम फेंकने की जिम्मेदारी सौंपी। 23 दिसम्बर, 1912 को वायसराय लार्ड हार्डिंग्ज का जुलूस दिल्ली के चांदनी चौक से गुजर रहा था। चांदनी चौक स्थित

पंजाब नेशनल बैंक की छत पर भीड में जोरावर सिंह और प्रतापसिंह बुरके में थे। जैसे ही जुलूस सामने से गुजरा, जोरावर सिंह ने हार्डिंग्ज पर बम फेंका। लेकिन पास खड़ी महिला के टकरा जाने से निशाना चूक गया और हार्डिंग्ज बच गया। छत्ररक्षक महावीर सिंह मारा गया। आजादी के आंदोलन की इस महत्त्वपूर्ण घटना ने ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला दिया। जोरावर सिंह और प्रतापसिंह वहां से सुरक्षित निकल गए। इस

घटना के पश्चात् जोरावर सिंह मध्यप्रदेश के कंरडिया एकलगढ़ में साधु अमरदास वैरागी के नाम से छिपे रहे। जोरावर सिंह को वर्ष 1903 से 1939 तक 36 वर्ष तक की अवधि में अंग्रेज सरकार गिरफ्तार नहीं कर सकी। 17 अक्टूबर, 1939 को उनका निधन हो गया। उनकी याद में एकलगढ़ (मध्यप्रदेश) में उनका स्मारक बना हुआ है।

प्रताप सिंह बारहठ

ठाकुर केसरीसिंह बारहठ के पुत्र प्रताप सिंह बारहठ भारतीय इतिहास के गगन पटल पर चमकने वाला एक ऐसा उज्ज्वल नक्षत्र है जिसने ना केवल राजस्थान को बल्कि पूरे भारत-वर्ष को गौरवान्वित किया था। उनका जन्म महान् राष्ट्रभक्त बारहठ परिवार में सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी एवं कवि केसरीसिंह के पुत्र के रूप में माता मणिक कंवर की कोख से 24 मई, 1893 के दिन उदयपुर में हुआ था।

15 वर्ष की आयु में उन्हें स्वतंत्र शिक्षण के लिए देशभक्त श्री अर्जुनलाल सेठी के पास भेज दिया गया। फिर प्रताप को अपने बहनोई ईश्वरदान आशिया के साथ वहां के प्रसिद्ध देशभक्त मास्टर अमीचन्द जी के यहां क्रांतिकारियों की शिक्षा दीक्षा के लिए दिल्ली भेजा गया।

अमीचन्द जी के पकड़े जाने के बाद सेठी जी इन दोनों को वापस ले आए। अपने पिता के पकड़े जाने के एक सप्ताह पहले ये वापस अज्ञातवासी हो गए। पिता पर मुकदमा चला, झूठ और छल-कपट से चलाए मुकदमे में पिता के धैर्य और साहस को देखकर प्रताप गौरव से भर गए थे। इधर-उधर भ्रमण करते हुए सिन्ध से हैदराबाद चले गए। वहां से पुन: आने का निर्देश मिला परन्तु असानाडा (जोधपुर) में पकड़े गए।

प्रताप को पांच साल की कठोर सजा दी गई और बरेली जेल में अमानवीय यातना का दौर शुरू हो गया। उन दिनों जेल की बर्बरता व क्रांतिकारियों को दी जाने वाली यातनाओं को सुनकर हृदय सिहर उठता है। दण्ड व यातना सहते-सहते प्राणों का दीपक क्षीण होने लगा। सरकार नहीं चाहती थी कि क्रान्ति की यह सूक्ष्म चिंगारी बाहर निकले। विदेशी सरकार के क्रूर अधिकारियों की यातनाओं को सहते हुए 24 मई, 1918 को उनका देहान्त हो गया। प्रताप ऐसे क्रांतिकारी थे जो यातनाएं सहते रहे परन्तु चेहरे पर कोई दु:ख नहीं दिखाई पड़ा। मातृभूमि का सच्चा सपूत स्वतंत्रता की बलिवेदी पर कुर्बान हो गया।

प्रताप अल्पायु में ही शहीद हो गए थे। वे उस परिवार से नाता रखते हैं जिस परिवार ने अपना पूरा खानदान क्रांति की राह में झोंक दिया था। भारत के इतिहास में अपने पूरे खानदान को राष्ट्रहित पर बलिदान करने वालो में सिख धर्म के दसवें गुरु गोविन्दसिंहजी का परिवार और राजस्थान के बारहठ परिवार को सदा याद किया जाता रहेगा।

संग्रहालय : भीलवाड़ा जिले की शाहपुरा तहसील में स्मारक ठाकुर केसरी सिंह बारहठ की हवेली के नाम से है। इस हवेली का निर्माण 19वीं सदी में हुआ था। यह हवेली राजस्थान सरकार द्वारा 1974 ईस्वी में पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग के संरक्षित स्मारकों की सूची में सम्मिलित की गई। संरक्षित करने के उपरान्त इसे संग्रहालय के रूप में

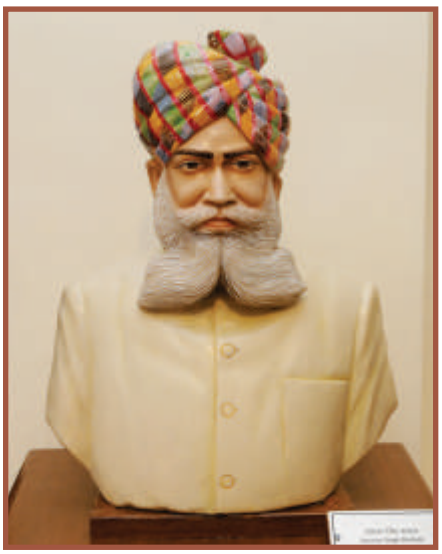

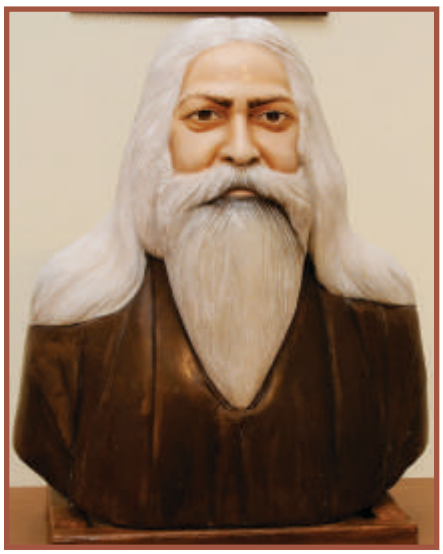

विकसित किया गया। विभाग द्वारा संग्रहालय के माध्यम से श्री केसरी सिंह बारहठ के परिवारजनों की क्रांतिकारी एवं शैक्षणिक गतिविधियों के प्रमाण रूप में उपलब्ध पुरावस्तुओं का प्रदर्शन आमजन के अवलोकनार्थ किया गया है।

क्रांति के शस्त्रों–साज दीर्घा : ठाकुर केसरी सिंह बारहठ एवं उनके परिवार के क्रांतिकारी सदस्यों के द्वारा स्वतंत्रता संग्राम के दौरान

प्रयोग किए हथियारों एवं अन्य वस्तुओं को इस दीर्घा में प्रदर्शित किया गया है। इन हथियारों एवं अन्य वस्तुओं में तलवारें, बन्दूकें, छूरी, गोली बनाने का सांचा, कैंचीनुमा औजार, कुप्पी, चक्रमक, छोटे–बड़े कारतूस, बन्दूक की गोलियां, गज तीर, पेशकवच, जमधर आदि प्रमुख हैं।

साथ ही शस्त्र आदि बनाने में प्रयुक्त कुछ उपकरणों को भी यहां प्रदर्शित किया गया है। यह दीर्घा केसरी सिंह बारहठ के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अमर क्रांतिकारी योगदान के भौतिक साक्ष्य प्रस्तुत करती है।

पत्र एवं पुस्तक दीर्घा : ठाकुर केसरी सिंह बारहठ द्वारा उनके परिवार एवं अन्य लोगों को लिखे गए पत्रों एवं केसरी सिंह बारहठ को लिखे गए कुछ महत्त्वपूर्ण पत्रों का संग्रह है। इनमें केसरी सिंह बारहठ द्वारा सेन्ट्रल जेल हजारीबाग से अपने जमाता श्री ईश्वरदान को लिखा पत्र, श्री अर्जुनलाल सेठी द्वारा केसरी सिंह बारहठ को लिखा पत्र, श्री केसरी सिंह बारहठ को हजारीबाग के डिप्टी कमिश्नर द्वारा लिखा पत्र, श्री केसरी सिंह बारहठ का सेन्ट्रल जेल, कोटा से अपनी पुत्री चन्द्रमणि को लिखा पत्र आदि के साथ ही इस दीर्घा में केसरी सिंह बारहठ द्वारा हिन्दी अनुवाद, बारहठ कृष्ण सिंह (केसरी सिंह के विला) का जीवन चरित्र राजपूताना का अपूर्व इतिहास आदि पुस्तकें प्रदर्शित की गई हैं।

छाया चित्र दीर्घा : इस दीर्घा में ठाकुर केसरी सिंह बारहठ के स्वयं उनके परिवार के सदस्यों के साथ संयुक्त छायाचित्र एवं उनसे संबंधित अन्य छायाचित्रों का सुन्दर प्रदर्शन है। इसमें उनके पुत्र शहीद प्रतापसिंह बारहठ उनके अनुज जोरावर सिंह बारहठ, श्रीमती मणिक कंवर के छायाचित्र हैं।

संग्रहालय में मुख्य रूप से श्री केसरी सिंह बारहठ व उनके परिवार के दुर्लभ छायाचित्र, अस्त्र–शस्त्र, उनकी पाग, पत्र व उनके द्वारा प्रयोग में लाई गई सामग्री धरोहर के रूप में प्रदर्शित है।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के कालजयी इतिहास में इस सम्पूर्ण परिवार का योगदान सदैव अमर रहेगा। ●

गांधीजी ने लिखी सेठ नृसिंहदास पर सम्पादकीय टिप्पणी

स्वाधीनता संग्राम के भामाशाह योद्धा

– हरिनारायण शर्मा

''आज से तुम 'बाबाजी' बन गए हो।''

गांधीजी के परिहास में दी गई इस उपाधि को सेठ नृसिंहदास ने नत–मस्तक हो शिरोधार्य किया। उन्होंने अपने कर्म और देश के लिए दिए गए योगदान से इसे सार्थक कर दिया।

राजस्थान 'राज' और 'धरा' की पर्याय भूमि है। इसमें ऊष्णता और शीतलता का चरमोत्कर्ष है जो यहां की संतति में भी परिलक्षित होती है। यहां के लोग अपनी धरा की आन–बान और रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने और लहू बहाने से नहीं झिझके। देश के स्वतंत्रता संग्राम में भी यहां की संतति में धधक देखने को मिलती है। इस महासमर के दोनों ही मोर्चों, अहिंसक और क्रांतिकारी आंदोलनों में यहां के दीवानों की लम्बी फेहरिश्त है। एक और मोर्चा था भामाशाहों का, इसमें भी यहां के लोग अग्रिम पंक्ति में खड़े थे। इस पंक्ति में पहला नाम आता है, महाराणा प्रताप की कठिन समय में अपना सर्वस्व समर्पित कर मदद करने वाले भामाशाह का जो त्याग और दान के उत्कृष्ट पर्याय बन गए। इसके बाद आते हैं अमरचंद बांठिया। ग्वालियर में नगर सेठ से विभूषित बांठिया ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और तांत्या टोपे की उस समय दिल खोलकर आर्थिक मदद की थी जब उनके पास हथियारों और रसद का गंभीर संकट उत्पन्न हो गया था। परिणामस्वरूप उन्हें राजद्रोह के आरोप में फांसी के फंदे पर झूलना पड़ा। अंग्रेजों को इतने से ही सब्र नहीं हुआ इसलिए उनके शव को तीन दिन तक उसी फंदे से लटकाए रखा गया।

दूसरे चरण में स्वतंत्रता संग्राम में जो भामाशाह सामने आए उनमें पहला नाम तिलक के क्रांतिकारी युग में ब्यावर निवासी सेठ दामोदरदास राठी का आता है। उन्होंने 1905 में बंगाल के स्वदेशी आंदोलन में अपनी मिलों के कपड़ों की आपूर्ति के साथ कदम रखा। बाद में 1909 में उन्होंने जननायक अरविन्द घोष से मुलाकात कर एकमुश्त दो लाख रुपये भेंट किए। साथ ही कहा – 'आप देश को आजाद कराइए, पैसे–टके की कमी नहीं आने दूंगा।' सेठजी यहीं नहीं रुके, 1915 की प्रस्तावित क्रांति के वीरों के आश्रयदाता बने और गोला–बारूद एवं शस्त्रास्त्र के संचय में सभी तरह का योगदान दिया। आगे गांधीजी के अहिंसक आंदोलन का युग आता है। यहां भी राजस्थान के दानवीर अग्रिम पंक्ति में खड़े मिलते हैं। गांधीजी के पांचवें पुत्र कहे जाने वाले सेठ जमनालाल बजाज ने रईसी, वैभव और रायबहादुर के खिताब का परित्याग कर अपने खजाने का द्वार देश के लिए खोल दिया था। ब्यावर के घीसूलाल जाजोदिया ने खुद का कमाया और पूर्वजों का संचित धन देश की स्वाधीनता के यज्ञ में होम कर फक्कड़ हो गए थे। उन्होंने जीवन की अंतिम सांसें भी आर्थिक तंगी में लीं।

इस शृंखला को आगे बढ़ाया नागौर में जन्में नृसिंहदास आग्रवाल ने, जिन्होंने अपना सर्वस्व गांधीजी के चरणों में समर्पित कर फकीरी धारण कर ली थी। राठौड़ों की वीरभूमि में 31 जुलाई, 1890 को जन्मे नृसिंहदास की मां बचपन में ही चल बसी थी। पिता सेठ हरिराम अग्रवाल के संरक्षण में पले–बढ़े नृसिंहदास के कंधों पर 13 साल की उम्र में ही व्यवसाय का भार डाल दिया गया था। वह 1903 में मद्रास चले गए थे और वहां महाजनी (फाइनेंस) का काम करने लगे थे। किशोर नृसिंहदास को इसमें शोषण की बू आने लगी और इसे छोड़कर किसी व्यावसायिक संस्थान में नौकरी करने लगे। छह साल बाद वह नागौर लौटे और विवाहोपरान्त पुनः मद्रास चले गए। उन्होंने नए सिरे से केमिकल, सर्जिकल, ड्रग और पेटेंट औषधियों के आयात का कार्य शुरू किया। इसमें उन्हें अपार सफलता, सम्मान और शोहरत मिली। सम्पर्कों का दायरा बढ़ाने के साथ ही वे आजादी के आंदोलन की गतिविधियों में भी रुचि लेने लगे। उन दिनों अमेरिका से आए भारतीय संयासी स्वामी सत्यदेव परिव्राजक के सम्पर्क में आए जिनसे वे काफी प्रभावित हुए। इसी दौरान उनकी मुलाकात सी. राजगोपालाचार्य से हुई।

नृसिंहदास अब आजादी के आंदोलन में काफी सक्रिय हो गए थे। 1920 में कलकत्ता में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की अध्यक्षता में हुए अधिवेशन में भाग लिया। वहां इस अवसर पर आयोजित राजस्थानी कार्यकर्त्ताओं की विशेष बैठक की उन्होंने अध्यक्षता की। वहां से लौटते समय वे महात्मा गांधी से प्रेरणा लेने के लिए साबरमती आश्रम पहुंचे जहां उनकी मुलाकात सेठ जमनालाल बजाज से हुई। नृसिंहदास, सेठ जमनालाल बजाज की गतिविधियों एवं देश के लिए उनके द्वारा किए जा रहे त्याग और योगदान से वे काफी प्रभावित हुए। हालांकि वह सेठ जमनालाल बजाजा के बारे में काफी सुनते रहे थे लेकिन यहां उनके रूबरू

होने और उन्हें नजदीक से जानने का अवसर मिला। इसके बाद नृसिंहदास ने उन्हें अपना आदर्श बना लिया था। सन् 1921 में लोकमान्य तिलक के निधन के बाद देश की आजादी के लिए स्थापित तिलक स्वराज्य फण्ड में नृसिंहदास ने अच्छी खासी राशि प्रदान करने के साथ ही अन्य साथी व्यापारियों से भी सहयोग कराया। श्री राजगोपालाचार्य इस कोष के अध्यक्ष थे।

मद्रास में उनके निकटस्थ दो मित्र थे - उदयपुर के वैद्य लक्ष्मीनारायण और क्षेमानंद राहत। वैद्यजी वहां के मारवाड़ी समाज के चिकित्सक थे जबकि राहत दक्षिण में हिंदी के प्रचारक। तीनों ही देश को समर्पित थे। नृसिंहदास विचारों से परिपक्व एवं ओजस्वी थे परन्तु महज साक्षर होने के कारण अपने विचारों को वाणी नहीं दे पाते थे। इस कमी को उन्होंने सन् 1916 में इन मित्रों को आर्थिक मदद कर 'भारत तिलक' साप्ताहिक का प्रकाशन शुरू कर पूरी करवाया। मद्रास में यह पहला हिंदी साप्ताहिक था। इस पत्र के माध्यम से इस मित्रत्रयी ने वहां के हिन्दीभाषी लोगों में राष्ट्रीयता की चेतना जागृत करने के साथ ही ब्रिटिशराज विरोधी लोकमत बनाना शुरू किया। इस हिमाकत के लिए उन्हें दो साल कैद की सजा सुनाई गई। जब गांधीजी ने असहयोग आंदोलन का आह्वान किया, नृसिंहदास और उनके साथियों सभी ने विदेशी वस्त्रों की होली जला दी। नृसिंहदास ने तभी से अपनी पत्नी के साथ खादी को अपना लिया। सत्यदेव विद्याशंकर ने उनकी मरणोपरान्त अपनी स्मृतियों में इसका उल्लेख करते हुए लिखा - ''मुझे वह दिन याद है जब वह अपनी पत्नी के साथ आडम्बररहित खादी के सीधे-सादे देश में वर्धा में पहली बार आए थे। बाबाजी का परिचय यह कहकर दिया जाता था कि वह मद्रास के अपने बड़े कारोबार और स्टोर को समेटकर गांधीजी के असहयोग आंदोलन में सम्मिलित हुए हैं। मारवाड़ी तथा अग्रवाल समाज में उन दिनों किसी महिला का खादी पहनना बहुत बड़ी बात समझी जाती थी और सोना-चांदी का परित्याग करना तो क्रांति का सूचक माना जाता था। बाबाजी नाम तो उन्हें बहुत बाद में मिला किन्तु तब भी वह 'बाबा' बनकर ही वर्धा पहुंचे थे। यह उनकी और उनकी पत्नी की वेशभूषा से स्पष्ट झलकता था।''

सन् 1921-22 में महात्मा गांधी मद्रास यात्रा पर गए थे। यह मित्रत्रयी (नृसिंहदास, वैद्य लक्ष्मीनारायण, क्षेमानंद राहत) उनकी सेवा में अहर्निश जुट गई और उनके कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, इससे उनकी गांधीजी से निकटता बढ़ गई। एक दिन तीनों मित्र सुबह-सुबह गांधीजी के पास पहुंच गए और निवेदन किया - बापू हमें भी देश सेवा का कोई कार्य बताएं। बापू ने इस पर कहा - ''इसके लिए तो पहले त्याग करना पड़ता है।'' गोया नृसिंहदास इसके लिए तैयार होकर ही आए थे, उन्होंने तत्क्षण अपनी जेब से दुकान एवं गोदामों की चाबियां निकालकर उनके चरणों में रख दी और कहा - ''यह सब देश के लिए समर्पित। आप ये चाबियां संभालें और उसका जैसा चाहे उपयोग करें।'' गांधीजी अवाक्! उनके मुख की ओर ताकने लगे और दृढ़ निश्चयी देश के इस महान् त्यागी, दानवीर पर अभिभूत हो उठे। तनिक रुककर उन्होंने चाबियां उठाई और मुस्कुराकर बोले - ''सेठ नृसिंहदास आज से तुम 'बाबाजी' बन गए हो।'' गांधीजी के परिहास में दी गई इस उपाधि को उन्होंने नत-मस्तक हो शिरोधार्य किया जिसे बाद में उन्होंने अपने कर्म और देश के लिए किए गए तप से सार्थक कर दिया। इसके बाद न तो वह जन्मभूमि लौटे और न ही परिजनों, नाते-रिश्तेदारों से संपर्क रखा, न ही अपना कोई बसेरा बनाया। इस घटना के बाद वे गांधीजी के परम प्रिय एवं विश्वसनीय लोगों की जमात में शामिल हो गए। गांधीजी ने उनके व्यवसाय से प्राप्त राशि स्वराज कोष में जमा करा दी और इस मित्रमण्डली को राजस्थान में ही जाकर काम करने का निर्देश दिया।

गांधीजी से निर्देश मिलने के बाद नृसिंहदास ने राजस्थान के अजमेर को अपना कर्मक्षेत्र बनाया। कुछ समय वर्धा में सेठ जमनालाल बजाज के साथ काम करने के बाद यहां खादी उत्पादन का कार्य शुरू करने के लिए सीकर पहुंचे और अमरसर में इस कार्य की नींव रखी। 1923 में वह नागपुर के झण्डा सत्याग्रह में शिरकत करने पहुंचे जहां उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। जेल से रिहा होकर वह क्रांतिकारियों के गढ़ ब्यावर पहुंचे और अजमेर-मेरवाड़ा को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। यहां उनकी मुलाकात सखाराव गोपालसिंह, बारहठ बंधु, विजयसिंह पथिक, स्वामी कुमरानंद आदि नेताओं से हुई। लेकिन बाबाजी यहां गांधीजी की विचारधारा एवं उनके अहिंसक आंदोलनों के प्रेरक, प्रसारक बनकर आए थे जो यहां इसके प्रथम संस्थापक बने। उन्होंने ब्यावर में राजस्थान खादी मण्डल की स्थापना की जो आगे चलकर राजस्थान चरखा संघ में परिणित हो गया। 1926 में हरिभाऊ उपाध्याय इस कार्य में उनके सहयोगी बनकर आए। दोनों में अच्छा समन्वय, तालमेल और समझ के चलते इस संघ ने अच्छी प्रगति की और अल्पकाल में ही अनेक संस्थाओं ने जन्म लिया। उचित मूल्य पर विचार-प्रधान साहित्य उपलब्ध कराने एवं राष्ट्रीय साहित्य के प्रकाशन के उद्देश्य से उन्होंने 1926 में अजमेर में सस्ता साहित्य मण्डल की स्थापना की, जो प्रदेश में साहित्यिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बना। गांधी आश्रम की परिकल्पना को मूर्त्तरूप देने के लिए हटूंडी के पास 1927 में किसानों से कुछ भूमि खरीदकर इसकी नींव रखी गई। बाद में गांधी सेवा संघ की राजस्थान शाखा यहां कायम हुई। इसके संचालक हरिभाऊ उपाध्याय बने जबकि बाबा नृसिंहदास उसमें सदस्य थे। इस आश्रम को खड़ा करने में बाबाजी ने रात-दिन कड़ी मेहनत की थी और अपनी पत्नी के निधन के बाद जो जेवर बचे थे वह भी इसमें लगा दिए थे। गांधीजी द्वारा देशव्यापी सत्याग्रह प्रारम्भ करने पर 1933 में हटूंडी आश्रम को बगावत का केन्द्र मानते हुए सरकार ने ताला लगा दिया था।

बाबाजी एवं पथिक जी को 14 अप्रैल को गिरफ्तार कर लिया। इसके विरोध में 16 अप्रैल को अजमेर मण्डल में हड़ताल रखी गई। बाबाजी एवं पथिकजी को जेल भेज दिया और वहां उनके साथ साधारण कैदियों जैसा व्यवहार किया गया। उनको चक्की पिसवाने समेत कई यातनाएं दी गईं। जेल में सुपरिटेंडेंट को सलाम करने से मना करने पर उन्हें काल कोठरी में डाल दिया गया। अमानवीय यातनाएं देने पर उन्होंने जेल अधिकारियों को कहा - ''चाहे मेरी खाल कुत्तों से नुचवा डालो पर मैं विदेशी सुपरिटेंडेंट को किसी भी हालत में सलाम नहीं करूंगा।'' गांधीजी ने उनके साथ जेल में हुए अमानवीय बर्ताव पर हिंदी 'नवजीवन' में 'सलाम अथवा बैंत' शीर्षक से सम्पादकीय टिप्पणी लिखी। बिना मुकदमा चलाए दोनों नेताओं को करीब दस माह बाद जेल से 26 फरवरी, 1931 को रिहा किया गया। ●

अगस्त क्रांति

–ज्ञानेश उपाध्याय

महात्मा गांधी की प्रेरणा से अगस्त, 1920 की पहली तारीख को असहयोग आंदोलन शुरू हुआ था और इसके ठीक 22 साल बाद 8 अगस्त, 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन। असहयोग आंदोलन प्रथम विश्व युद्ध के खत्म होने के बाद शुरू हुआ और भारत छोड़ो आंदोलन द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ही शुरू हो गया था। दोनों आंदोलन के बीच लगभग 20 साल का अंतराल है। दोनों आंदोलन में उतना ही अंतर है जितना कि 1920 के गांधीजी और 1942 के गांधीजी के बीच। किसी भी संघर्षरत गुलाम देश के लिए 20 साल बहुत लंबा और बेहद स्याह समय होता है। असहयोग आंदोलन के समय गांधीजी 51 साल के थे और भारत छोड़ो आंदोलन के समय 73 साल के। ऐसा लगता है कि 51 साल के गांधीजी को ज्यादा जल्दी नहीं थी, उनका जोर भारत निर्माण के लिए ज्यादा से ज्यादा रचनात्मकता की ओर था और वैधानिक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा से वह स्वतंत्रता पाने में विश्वास करते थे।

खास बात यह है कि असहयोग आंदोलन की सफलता के लिए गांधीजी ने अनेक रचनात्मक कार्यों को हाथों में लिया। रचनात्मक कार्य नहीं होते तो आंदोलन ही नहीं बल्कि देश के भटक जाने का खतरा था। आज जो राजनीतिक आंदोलन होते हैं उनमें रचनात्मक कार्यक्रमों का अभाव होता है, इसलिए वे ज्यादा टिक नहीं पाते या ज्यादा लोगों को अपने साथ जोड़ने में नाकाम रहते हैं। शराब का बहिष्कार, हिन्दू-मुस्लिम एकता, अहिंसा, छुआछूत से परहेज, स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग, हाथ से बुने खादी के कपड़ों का प्रयोग इत्यादि कार्य साथ-साथ चल रहे थे। उनके कार्यक्रम में कहीं भी हिंसा का सहारा लेने की चर्चा नहीं थी। पटरियों को उखाड़ने, खजाना लूटने, तार सेवा को प्रभावित करने इत्यादि की कल्पना गांधीजी ने नहीं की थी। कुछ लोग थे, जो अंग्रेजों या असामाजिक तत्त्वों के प्रभाव में आकर बहक गए। उपद्रव व हिंसा के क्रम में अंग्रेजों के अत्याचार की वजह से 5 फरवरी, 1922 को चौरी-चौरा कांड हुआ था। गांधीजी सोच में पड़ गए। आम धारणा है कि उन्होंने इस हिंसा के बाद तत्काल आंदोलन को वापस ले लिया था लेकिन यह सही नहीं है, उन्होंने लगभग छह दिन विचार के बाद 12 फरवरी को भारी मन से आंदोलन वापस लेने का फैसला किया था और यंग इंडिया में पूरी निराशा के साथ लिखा था, 'आंदोलन को हिंसक होने से बचाने के लिए

मैं हरेक अपमान, हरेक यंत्रणा, पूर्ण बहिष्कार यहां तक कि मौत भी सहने को तैयार हूं'। वह यह मानते थे कि अगर हिंसा को न रोका गया तो पूरे देश में ऐसी अनेक घटनाएं होंगी और अनुशासनहीनता हो जाएगी। वह अपनी प्रेम, सत्य, अहिंसा की नीति के तहत सही सोच रहे थे।

1922 में अनेक नेताओं का मानना था कि असहयोग आंदोलन बिल्कुल सही दिशा में चल रहा है और एकाध वर्ष में वाकई ऐसी स्थिति बन जाएगी कि अंग्रेज अपने देश लौट जाएंगे। आंदोलन समाप्त किए जाने से पंडित जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस जैसे युवा नेता भी निराश हुए थे। नेताजी बोस ने कहा था, 'राष्ट्रीय संघर्ष को ऐसे समय में बंद कर देना अत्यंत दुखदायी था जबकि हम अपनी स्थिति सशक्त करने और प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ते हुए दिख रहे थे।'

गांधीजी ने देश को आश्वासन दिया था कि असहयोग के तरीके को अपनाते हुए यदि इन कार्यक्रमों पर पूरी तरह से अमल हुआ तो एक वर्ष के भीतर ही आजादी मिल जाएगी। कार्यक्रमों का असर तो हुआ लेकिन अंग्रेजों ने दुष्प्रचार और हजारों नेताओं को कैद में डालकर कई जगह लोगों को उग्र होने के लिए विवश कर दिया। एक दलील यह भी दी जाती है कि अंग्रेज खुद भी हिंसा चाहते थे ताकि गांधीजी पर आंदोलन वापस लेने के लिए दबाव डाला जाए। न जाने कितने अंग्रेज अधिकारियों को पत्र लिखकर गांधीजी ने आश्वासन दे रखा था कि आंदोलन होगा लेकिन उसमें हिंसा नहीं होगी। यही कारण है कि जब हिंसा हुई तो गांधीजी नैतिक दबाव में आ गए। यह विडंबना ही है कि घोर अनैतिक अंग्रेज गांधीजी से बड़ी नैतिकता की उम्मीद करते थे।

यह गौर करने की बात है कि असहयोग आंदोलन की वापसी से गांधीजी कमजोर हुए और अंग्रेजों ने उन्हें 10 मार्च, 1922 को गिरफ्तार कर लिया। गांधीजी को छह साल की सजा सुनाई गई और वह लगभग दो साल जेल में बंद रहे। आंदोलन का इस तरह से अंत और उसके नेता का कमजोर होना वास्तव में अंग्रेजों द्वारा दिया गया एक धोखा था जिसे गांधीजी और उनके अन्य सहयोगी नेता समझ रहे थे। इस धोखे या अनुभव का असर यह हुआ कि असहयोग आंदोलन के खत्म होने के 20 साल बाद गांधी जी का रुख पूरी तरह बदल चुका था। अगस्त क्रांति के समय वह कतई कोई रियायत या समर्पण के पक्ष में नहीं थे। अंग्रेजों से भारत छोड़ने का आह्वान करने के साथ ही उन्होंने भारतीयों को 'करो या मरो' का नारा दिया था।

भारत छोड़ो आंदोलन के अनेक कारणों में एक कारण यह भी है कि 1942 के मार्च महीने में ही भारत को हथियार के जोर पर आजाद कराने के लिए अभियान की सुगबुगाहट जापान में शुरू हो चुकी थी। रास बिहारी बोस और सुभाष चंद्र बोस भारत को ताकत के जोर पर आजाद कराने की अपनी योजना पर तेजी से काम कर रहे थे। 1939 में द्वितीय

विश्व युद्ध की शुरुआत हो चुकी थी। इस बार ज्यादातर नेताओं का रुख यही था कि भारत अंग्रेजों की मदद तभी करे कि जब वे आजादी का आश्वासन दें। युद्ध को लगभग तीन साल बीत गए तब गांधीजी और उनके सहयोगी नेताओं के सब्र का बांध टूटा। अहिंसा और संयम की दुहाई देने वाले गांधीजी ने 8 अगस्त, 1942 को संबोधित करते हुए कहा, 'किसी को भी परेशान न करो की नीति का जनक मैं ही हूं पर आप पाते हैं कि आज मैं कड़ी से कड़ी भाषा का प्रयोग कर रहा हूं, किसी को परेशान न करो की मेरी नीति में सर्वदा एक वाक्य यह भी रहा है कि तब तक जब तक देश का सम्मान और सुरक्षा खतरे में न हो। मैं डूब रहा हूं और कोई मेरा गला पकड़ कर दबोचे तो क्या अपने बचाव के लिए मैं संघर्ष नहीं करूंगा?'

भला मैं इन चालीस करोड़ देशवासियों को लेकर कहां जाऊंगा? मानवता का यह इतना विशाल भाग जिसने स्वतंत्रता का स्पर्श भी नहीं किया, उसे चखा भी नहीं, मानव की मुक्ति के लिए कैसे आग में झोंक दिया जाए? आज इसमें जीवन नहीं है। उसे कुचल दिया गया है। यदि उसकी आंखों में फिर से चमक वापस लानी है तो स्वतंत्रता को कल नहीं, आज ही आना होगा। इसलिए हमें 'करो या मरो' का व्रत लेना होगा।

बदले हुए गांधी

बदले हुए गांधी को देखकर अंग्रेज भी घबरा गए। अंग्रेज हुकूमत दिग्गज नेताओं को खुला छोड़कर अगस्त क्रांति को नहीं कुचल सकती थी। गांधी सहित तमाम बड़े नेता जेल में डाल दिए गए। लेकिन अगस्त क्रांति में खास बात यह थी कि आम लोगों को उनकी जिम्मेदारी का एहसास करा दिया गया था। जगह-जगह यह संदेश पहुंच गया था कि आपको आजाद होना है तो खुद लड़ना होगा। देश में जगह-जगह यूनियन जैक या ब्रिटिश झंडे को उतारा गया और भारतीय झंडे को लहराया गया। इस क्रम में जगह-जगह युवा शहीद हुए।

असहयोग आंदोलन के समय गांधीजी ने लोगों को खुद रोका था लेकिन इस बार रोकने या गांधीजी द्वारा कोई शांति अपील करवाने की गुंजाइश स्वयं अंग्रेजों ने खत्म कर दी थी। असहयोग आंदोलन में लोगों को संभाला गया था लेकिन भारत छोड़ो आंदोलन में लोगों को ही आगे किया गया। लोग जब आगे आ गए और अंग्रेजों को दिख गया कि बिना नेता के भी आम भारतीय आगे आकर मुकाबला कर सकता है, उनमें भय व्याप्त हुआ। गांधीजी और उनके सहयोगी अन्य नेताओं की जो भलमनसाहत थी, अंग्रेजों के प्रति जो लगाव था, वह भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान खत्म हो गया।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार भारत छोड़ो जनांदोलन में 940 लोग मारे गए थे। 1630 लोग घायल हुए थे। 60,229 नेता व आंदोलनकारी गिरफ्तार हुए और 18,000 नेता नजरबंद किए गए। यह आंदोलन अभूतपूर्व था। देश को ऐसे घाव लगे जिसे भुलाया नहीं जा सकता, लेकिन इन घावों ने देश को जगा भी दिया।

वैसे असहयोग आंदोलन के समय भी कई नेता गांधीजी से इत्तेफाक नहीं रखते थे। भारत छोड़ो आंदोलन के समय भी वे नेता इस पक्ष में नहीं थे कि अंग्रेजों को सीधे भारत छोड़ने के लिए कह दिया जाए। दूसरी ओर, वामपंथी नेताओं में भी सारे अंग्रेजों के समर्थक नहीं थे। ठीक वैसे ही दक्षिणपंथी नेताओं में भी बहुत से ऐसे थे जो अगस्त क्रांति के पक्षधर थे या बाद में हो गए। कुल मिलाकर अंग्रेजों को यह अंदाजा हो गया था कि उनके साथ जो भारतीय समूह हैं वे उतने बड़े या मजबूत नहीं हैं। हर बार अंग्रेजों को कहीं न कहीं से ज्यादा समर्थन हासिल हो जाता था लेकिन अगस्त क्रांति में पहली बार ऐसा हुआ कि अंग्रेजों को कोई भी बड़ा समर्थन हासिल नहीं हो सका। जो लोग छुपकर अंग्रेजों के साथ थे वे भी खुलकर सामने आने की हिम्मत नहीं दिखा पाए। देश वाकई गुलामी से बहुत नाराज था और अंग्रेजों को देखना नहीं चाहता था।

समाज पर गहरा प्रभाव

भारत पर आज भी अगस्त क्रांति का गहरा प्रभाव है। भारतीय लोकतंत्र में आंदोलनों की जो परंपरा है उसमें कुछ मूल्य असहयोग आंदोलन के हैं तो कई मूल्य भारत छोड़ो आंदोलन के। जब भी भारत में कोई आंदोलन की योजना बनाता है तो सबसे पहले लोगों को साथ लेने की कोशिश करता है। भारतीय आंदोलनों में हिंसा को सबसे अंतिम विकल्प के रूप में रखा जाता है और ज्यादातर आंदोलनों में किसी भी चरण में हिंसा की कल्पना तक नहीं होती है। कुछ आंदोलनों को छोटे आकार के कारण कुचल भले दिया जाता है लेकिन तब भी कुचले जाने वाले लोग हथियार नहीं उठाते फिर ताकत जुटाने का इंतजार करते हैं।

ऐसे अनेक संगठन हैं जो देश में काम कर रहे हैं और गांधीजी के आंदोलन मॉडल पर कुछ बदलाव के साथ अमल कर रहे हैं। अगस्त क्रांति की सफलता के लिए तत्कालीन आंदोलन का यह जो मॉडल है वह भारतीय मानस और लोकतंत्र के अनुरूप है। जब भी किसी पार्टी या संगठन को वास्तविक मजबूती की ओर बढ़ने की कामना होगी, उसे अगस्त क्रांति का मॉडल आजमाना पड़ेगा। अगस्त क्रांति का श्रेय आम

लोगों को दिया जाता है और पहली बार देश को तब महसूस हुआ था कि आम लोग भी देश चला सकते हैं।

अगस्त क्रांति का महत्त्व

अनेक इतिहासकार मानते हैं कि 15 अगस्त और 26 जनवरी से भी ज्यादा महत्त्व 9 अगस्त का है। यह भारतीय राष्ट्रीयता का असली जागरण पर्व है। राम मनोहर लोहिया ने भारत छोड़ो आंदोलन की पच्चीसवीं वर्षगांठ पर लिखा था, '9 अगस्त का दिन हम भारतवासियों के जीवन की महान् घटना है और यह हमेशा बनी रहेगी। 15 अगस्त राष्ट्र की महान् घटना है, अभी तक हम 15 अगस्त को धूमधाम से स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाते हैं। वहीं 9 अगस्त का दिन देश की जनता की उस इच्छा की अभिव्यक्ति थी जिसमें उसने यह ठान लिया था कि हमें आजादी चाहिए और हम आजादी लेकर ही रहेंगे।' ●

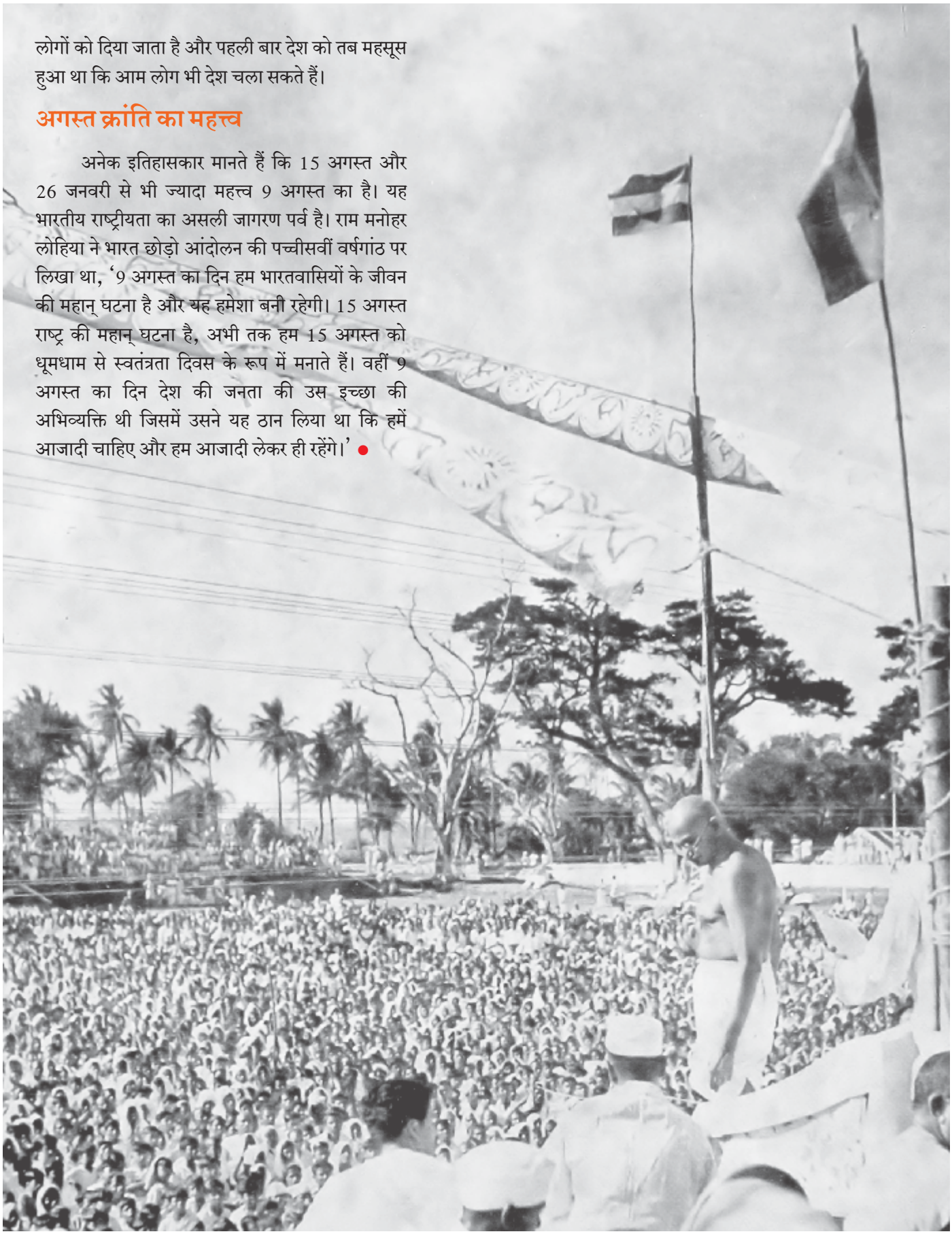

राजस्थान में भारत छोड़ो आन्दोलन

–सीताराम झालानी

8 अगस्त, 1942 को बम्बई की एक बैठक में महात्मा गांधी ने 'भारत छोड़ो' आन्दोलन का ऐलान किया। उसी दिन एक अन्य बैठक में महात्माजी ने देशी राज्यों के प्रजामण्डलों के नेताओं को सलाह दी कि उन्हें अपने–अपने शासकों को पत्र भेजकर ब्रिटिश सार्वभौम सत्ता से सम्बन्ध तोड़ने की मांग करनी चाहिए। इस समय तक मेवाड़, मारवाड़, जयपुर, अलवर, भरतपुर और कोटा आदि राज्यों में राजनीतिक संस्थाएं व्यवस्थित रूप से अपने पैर जमा चुकी थीं।

मेवाड़ प्रजामण्डल के अध्यक्ष श्री माणिक्यलाल वर्मा ने 29 अगस्त, 1942 को एक पत्र द्वारा महाराणा से अंग्रेजी सत्ता से सम्बन्ध तोड़ने और राज्य में उत्तरदायी शासन स्थापित करने की मांग की। उसी रात्रि को सर्वश्री माणिक्यलाल वर्मा, बलवंतसिंह मेहता, मोहनलाल सुखाड़िया, नरेन्द्रपालसिंह चौधरी और मोतीलाल तेजावत आदि नेता गिरफ्तार कर लिए गए। श्री रमेशचन्द्र व्यास भारत सरकार के आदेशानुसार 1818 के बंगाल रेगुलेशन एक्ट के अन्तर्गत पहले ही पकड़ लिए गए थे। इस आन्दोलन की लपटें मेवाड़ के सभी भागों में फैल गईं। शिक्षण संस्थाएं बंद हो गईं। कई दिनों तक हड़तालों व जुलूसों का दौर रहा। लगभग 200 गिरफ्तारियां हुईं।

मारवाड़ लोक परिषद् ने 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के शुरू होने से पूर्व ही मई, 1942 में राज्य में उत्तरदायी शासन स्थापित करने की मांग को लेकर आन्दोलन का ऐलान कर दिया था। 26 मई को परिषद् के सर्वोच्च नेता श्री जयनारायण व्यास गिरफ्तार कर लिए गए। सर्वश्री मथुरादास माथुर, अचलेश्वरप्रसाद शर्मा, अभयमल जैन, छगनराज चौपासनीवाला, रणछोड़दास गट्टानी, बालमुकुन्द बिस्सा आदि कार्यकर्त्ता भी पकड़ लिए गए। इन नेताओं ने जेल में दुर्व्यवहार और दमन के विरुद्ध भूख हड़ताल कर दी। इस प्रकरण में एक सत्याग्रही श्री बालमुकुन्द बिस्सा आजादी की बलिवेदी पर चढ़ गए। इसी बीच देश में भारत छोड़ो आन्दोलन छिड़ गया। फलस्वरूप मारवाड़ में भी आन्दोलन में तेजी आई। लोक परिषद् के श्री द्वारकादास पुरोहित सहित शेष कार्यकर्त्ता भी गिरफ्तार हो गए। इस आन्दोलन में मारवाड़ में लगभग 400 गिरफ्तारियां हुईं। कुछ स्थानों पर बम विस्फोट की घटनाएं भी हुईं।

'भारत छोड़ो' आन्दोलन में कोटा की जनता ने भी योगदान दिया। कोटा प्रजामण्डल के कार्यकर्त्ता गिरफ्तार कर लिए गए। जनता ने शहर के दरवाजों पर कब्जा कर पुलिस कोतवाली पर राष्ट्रीय झंडा फहरा दिया।

दूसरा भामाशाह

देश के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) में जिस प्रथम व्यक्ति को ब्रिटिश हुकूमत ने फांसी पर लटकाया वह राजस्थान निवासी अमरचंद बांठिया थे जो मध्यप्रदेश के ग्वालियर में अपना कारोबार चलाते थे।

झांसी की रानी लक्ष्मी बाई के पास अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ी जा रही लड़ाई के दौरान जब धन की कमी आ गई और आजादी के सैनिकों की रसद व्यवस्था भंग होने लगी तब ग्वालियर का अमरचंद बांठिया आगे आया। उसने सेनापति तांत्या टोपे को प्रस्ताव किया कि उसके पास जो कुछ धन सम्पत्ति है, उसका सेना के लिए उपयोग कर आजादी की लड़ाई को चालू रखें। यही कुर्बानी बाद में उनकी फांसी का कारण बनी।

स्वराज्य
मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है

लोकमान्य तिलक से पूछा गया था– 'स्वराज्य मिल गया तो फिर आप क्या करेंगे?'

तिलक का उत्तर था – 'किसी स्कूल या कॉलेज में गणित पढ़ाने लगूँगा।'

इटली का एकीकरण करने के बाद गैरीबाल्डी भी ऐसे ही अचानक अपने खेतों में आलू बोने चले गये थे, कैसे-कैसे निस्पृह लोग हुए!

बरतानिया के 'टाइम्स' अखबार के मशहूर पत्रकार वैलेन्टाइन चिरोल ने चिढ़ते हुए लोकमान्य तिलक को भारतीय असंतोष का जनक कहा था पर तिलक की बेचैनी को कौन समझ सकता था?

उन्होंने हुंकार भरी – 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, और इसे मैं लेकर रहूंगा' लोकप्रिय होना किसे कहते हैं ये वो नहीं जान सकते जिन्होंने तिलक को नहीं जाना। उस युग के नौजवान घोड़े निकालकर उनकी बग्घी खींचने को अपना अहोभाग्य मानते थे। तिलक ने अखबार निकाले। 'मराठा' और 'केसरी'। मराठा अंग्रेजी में निकलता था और केसरी मराठी में। खुद कंधों पर टाइप के भारी बक्से ढोये। पूना में श्रेष्ठ शिक्षण संस्थाएं स्थापित कीं। वे बेहद अध्यवसायी थे। दहेज में केवल किताबें मांगी थीं। प्रख्यात पत्रकार पी. साईनाथ लिखते हैं– तिलक को जब मुकदमा चलाने के बाद बर्मा की मांडले जेल भेजा गया तो बंबई के कुली-मजदूरों ने चक्काजाम किया था। साधारण लोग उनसे इतना प्यार करते थे।

जेल में रहते हुए किताब लिख डाली– 'गीता रहस्य' और 'दक्षिणी ध्रुव पर आर्य'।

तिलक परम्परावादी थे। इस बात को लेकर उनके प्रति विपरीत मंतव्य दिये गये। प्रगतिशीलता के सारे मूल्य कोई एक दिन में तो आ नहीं जाते। न यह जबरन थोपी जा सकती है। धीरे-धीरे ही नये युग के मूल्य अंगीकार किये जाते हैं इसलिए यह देखना श्रेयस्कर है कि तिलक ने हममें कैसे आत्मसम्मान की भावना जगाई और कैसे स्वराज्य के मार्ग को उन्होंने आने वाली पीढ़ी के लिए प्रशस्त किया।

'लाल– बाल – पाल' की त्रयी में बाल गंगाधर तिलक 'लोकमान्य' थे। ●

– जयंत सिंह तोमर

पुलिस को बैरकों में बंद कर दिया गया। नगर में 3 दिन तक 'जनता राज' रहा। अन्त में महाराव के दमन का सहारा न लेने के आश्वासन पर जनता ने शासन पुन: महाराव को 'सम्भलाया'। इसके पूर्व जनता ने फौज और पुलिस को राष्ट्रीय झंडे को सलामी देने के लिए मजबूर कर दिया। महाराव ने अपने आश्वासन का पालन किया और सभी गिरफ्तार व्यक्तियों को रिहा कर दिया।

भरतपुर राज्य में सन् 1942 का आन्दोलन लगभग 3 माह तक चला जिसके दौरान हड़तालें, जुलूस आदि के साथ ही रेलवे स्टेशनों और डाकघरों पर आक्रमण तथा तार काटने की घटनाएं भी हुईं। परिषद् के नेता मास्टर आदित्येन्द्र, श्री युगलकिशोर चतुर्वेदी एवं पं. रेवतीशरण शर्मा आदि पकड़ लिए गए परन्तु राज्य के साथ समझौता हो जाने के फलस्वरूप सभी लोग जल्दी ही रिहा कर दिए गए।

शाहपुरा एक छोटी रियासत थी पर वह भारत छोड़ो आन्दोलन की लपटों से नहीं बची। स्थानीय प्रजामण्डल ने राजाधिराज को अंग्रेजी सत्ता से सम्बन्ध तोड़ने के लिए चेतावनी दे दी। इसके फलस्वरूप प्रजामण्डल के कार्यकर्त्ता सर्वश्री लादूराम जोशी, लक्ष्मीदत्त कांटिया और रमेशचन्द्र ओझा को गिरफ्तार कर अजमेर की जेल में भेज दिया गया। शाहपुरा के श्री गोकुललाल असावा ब्रिटिश सरकार द्वारा पहले ही अजमेर जेल में बंद कर दिए गए थे। इस समय उनका कार्यक्षेत्र अजमेर था।

'भारत छोड़ो' आन्दोलन में जयपुर प्रजामण्डल उदासीन रहा। इस समय जयपुर राज्य का प्रधानमंत्री मिर्जा इस्माइल था जो एक कूटनीतिज्ञ शासक था। वह प्रजामण्डल के नेता श्री हीरालाल शास्त्री को यह आश्वस्त करने में कामयाब हो गया कि जयपुर राज्य प्रजामण्डल का इस आन्दोलन में कूदने का कोई औचित्य नहीं है। कहते हैं कि सर मिर्जा ने मौखिक रूप से प्रजामण्डल की कुछ मांगों को मान लिया था परन्तु प्रजामण्डल में एक तबका ऐसा भी था जो किसी भी सूरत में जयपुर को इस देशव्यापी आन्दोलन से अलग रखने को तैयार नहीं था। बाबा हरिश्चन्द्र ने जयपुर के प्रसिद्ध एडवोकेट श्री दौलतमल भण्डारी और श्री रामकरण जोशी के सहयोग से 'आजाद मोर्चा' कायम किया। इस मोर्चे ने आन्दोलन का संचालन किया। आजाद मोर्चे के कार्यकर्त्ता पकड़े गए। चरखा संघ के कार्यकर्त्ताओं ने भी आजाद मोर्चे का साथ दिया।

अलवर और सिरोही में भी 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के समय प्रदर्शन और हड़तालें हुईं। डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, बूंदी, टोंक और जैसलमेर आदि रियासतों में सन् 1942 तक राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना नहीं हो पाई थी। ●

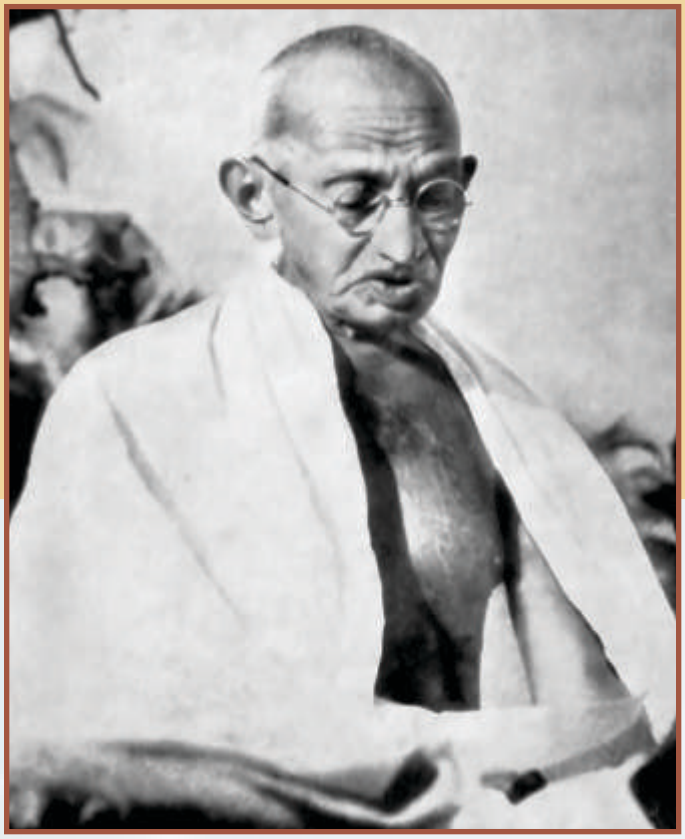

बीकानेर का अविस्मरणीय योगदान

गांधीजी के आह्वान पर बाबू मुक्ता प्रसाद के नेतृत्व में जली विदेशी वस्त्रों की होली

– बुलाकी शर्मा

स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान (राजपूताना) का अविस्मरणीय योगदान रहा है। वह समय देश के लिए संक्रांति काल था। राष्ट्रभक्त जनता अंग्रेजों से आक्रोशित थी। अंग्रेज सरकार दमन के जोर पर जनता को यातनाएं दे रही थी। बीकानेर रियासत में देशभक्तों को झूठे मुकदमों में फंसा कर जेलों में बंद किया जा रहा था। स्वतंत्रता सेनानी दाऊ दयाल आचार्य ने 'भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बीकानेर का योगदान' पुस्तक में स्वाधीनता के लिए कार्य करने वाले देशभक्तों के बारे में महत्ती जानकारियां दी हैं। स्वतंत्रता सेनानी मूलचंद पारीक ने रियाया पर होने वाले अत्याचार और देशभक्तों पर होने वाले जुल्मों का तब खुलकर विरोध किया। सन् 1920 के आसपास चूरू में सर्वहितकारी सभा सक्रिय हुई। भादरा में वाचनालय खोला गया। बीकानेर में बाबू मुक्ता प्रसाद ने मित्र मंडली स्थापित कर स्वतंत्रता की अलख जगाने का काम किया। महंत गोपालदास ने जनता को जाग्रत करने के लिए अभियान चलाए। प्रांतीय कांग्रेस कमेटी राजपूताना, राजस्थान सेवा परिषद्, अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् आदि सामाजिक-राजनीतिक संगठनों से सम्बद्ध रहकर उन्होंने बीकानेर रियासत की वास्तविक स्थिति से देश को अवगत कराया। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के लिए जो मसाल हाथ में ली, उसका प्रभाव चूरू में ही नहीं पूरी रियासत पर पड़ा और शनै:-शनै: लोगों में देशभक्ति की भावना दृढ़ से दृढ़तर होती गई ।

सन् 1929 में लाहौर (अब पाकिस्तान में) में होने वाले अधिवेशन में भाग लेने के लिए बीकानेर से रघुवर दयाल गोयल, ईश्वर दयाल वकील और सरदार निरंजन सिंह पहुंचे। उसी अधिवेशन में पंडित नेहरू ने पहली बार भारत के लिए पूर्ण स्वराज्य की घोषणा के साथ प्रतिवर्ष 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाने का देशवासियों से आह्वान किया था। बीकानेर रियासत के इन सच्चे देशभक्तों ने संकल्प लिया कि वे सब प्रकार के कष्ट सहकर भी देश को स्वतंत्र कराने में किसी से पीछे नहीं रहेंगे।

दिसम्बर, 1931 में लंदन में आयोजित गोलमेज सम्मेलन में महात्मा गांधी ने कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किया। उस सम्मेलन में बीकानेर नरेश भी थे। वहां दैनिक जन्मभूमि के संचालक अमृत भाई सेठ के प्रयास से एक पर्चा बांटा गया जिसमें बीकानेर रियासत में हो रहे नागरिक अधिकारों के हनन, पक्षपात, जुल्म, ज्यादतियों आदि का पूरा विवरण था। बाद में बीकानेर षड्यंत्र कांड के तहत सभी स्वतंत्रता सेनानियों को गिरफ्तार कर लिया गया। चूरू के महंत गोपालदास, चंदनमल बहड़, सोहन लाल शर्मा, भादरा के लाला खुबीराम सर्राफ, सत्यनारायण सर्राफ, राजगढ़ के बद्री प्रसाद सरावगी आदि को अलग-अलग जेलों में रखकर भयंकर यातनाएं दी गईं। वह ऐसा भयावह दौर था कि जो भी वकील स्वतंत्रता सेनानियों की पैरवी करता, उसे कोपभाजन का शिकार बनना पड़ता। फिर भी बाबू मुक्ता प्रसाद और रघुवर दयाल गोयल ने साहस के साथ इनकी पैरवी की। इन स्वतंत्रता सेनानियों को 6 माह से 3 वर्ष तक के कारावास की सजा सुनाई।

गांधीजी के आह्वान पर बाबू मुक्ता प्रसाद के नेतृत्व में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई। 20 सितंबर, 1932 को महात्मा गांधी के आमरण अनशन पर बैठने पर बीकानेर भी उनके साथ था और बाबू मुक्ता प्रसाद सार्वजनिक रूप से उपवास पर बैठे।

जनता में राष्ट्रीय भावना जाग्रत करने के उद्देश्य से 4 अक्टूबर, 1936 को बीकानेर राज्य मंडल का गठन किया गया। जिसके पहले

अध्यक्ष वैद्य मघाराम बनाए गए। इस संगठन की गतिविधियों से घबराकर बीकानेर नरेश ने प्रजामंडल के अध्यक्ष मघाराम सहित बाबू मुक्ता प्रसाद, लक्ष्मीदास स्वामी अथक, भिक्षा लाल बोहरा आदि को बीकानेर रियासत से निर्वासित कर दिया। इस निर्वासन काल में बाबू मुक्ता प्रसाद के लिए अन्यत्र जाने के लिए रेल टिकट लाने के 'जुर्म' में हरप्रसाद भटनागर को नौकरी से पृथक् कर दिया गया। इसी तरह एक गोष्ठी में कमला नेहरू का उल्लेख करने के 'जुर्म' में शंभू दयाल सक्सेना को भी नौकरी से पृथक् होना पड़ा।

22 जुलाई, 1942 को बाबू रघुवर दयाल गोयल की अध्यक्षता में रावतमल पारीक के निवास पर बीकानेर राज्य परिषद् का गठन किया गया। इस गठन के समय ख्याली राम गोदारा, सत्यनारायण पारीक, श्री राम आचार्य, किशन गोपाल गुट्टड़ महाराज, गंगा दास कौशिक, राम लाल जोशी मामाजी, राम नारायण आचार्य, दाऊ दयाल आचार्य, सत्यनारायण अग्रवाल, पंडित बंशीधर बिस्सा आदि उपस्थित थे। मात्र सात दिवस पश्चात् 29 जुलाई, 1942 को महाराजा द्वारा इसे अवैध घोषित करके रघुवर दयाल गोयल को निर्वासन की सजा दे दी गई। लेकिन उन्होंने निर्वासन की आज्ञा की अवहेलना करते हुए 29 सितंबर, 1942 को बीकानेर राज्य में पुन: प्रवेश किया तो उन्हें और उनके अन्य साथियों को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया।

फरवरी, 1943 को राजनीतिक कैदियों को रिहा किया गया। प्रजा परिषद् के माध्यम से रियासत के गांवों तक स्वतंत्रता आंदोलन को फैलाने के लिए अनेक योजनाएं बनाई गईं। विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, चरखे द्वारा सूत कातकर हाथ से बने वस्त्र पहनने का आह्वान, सामंतों, जमींदारों, पुलिस द्वारा किए जा रहे अत्याचारों का विरोध करने का हौसला बढ़ाया जाने लगा। शासन सुधारों की मांग होने लगी। 26 अगस्त, 1944 को रघुवर दयाल गोयल को वार्ता के लिए लालगढ़ पैलेस बुलाया गया किन्तु उन्हें और गंगादास कौशिक तथा दाऊ दयाल आचार्य को गिरफ्तार कर नजरबंद कर दिया गया।

असहनीय अत्याचारों से नहीं डरते हुए बीकानेर के स्वतंत्रता सेनानी आजादी के लिए बराबर संघर्ष करते रहे। तब प्रजा परिषद् का सदस्य बनने वाले, तिरंगा झंडा रखने वाले, खादी पहनने वाले, महात्मा गांधी की जय बोलने वाले को भी राजद्रोही मानकर गिरफ्तार कर लिया जाता था। किंतु इन विषम परिस्थितियों में भी पुलिस और प्रशासन को गच्चा देते हुए झंडा सत्याग्रह के तहत बीकानेर में 9 दिसंबर, 1942 को रामनारायण शर्मा ने दोपहर दो बजे वेदों के चौक में बीकानेर के इतिहास में पहली बार तिरंगा झंडा फहराया। नगरवासियों ने भारत माता की जय, इंकलाब जिंदाबाद के नारे गुंजायमान किए।

जनता में देशभक्ति की चेतना जाग्रत होने लगी। दाऊदयाल आचार्य, सत्यनारायण पारीक, हीरालाल शर्मा, मूलचंद पारीक, रामनारायण शर्मा, चंपालाल उपाध्याय, काशीराम स्वामी, चंपालाल रांका, जीवनलाल डागा, उदाराम हटीला, लक्ष्मी देवी बारूपाल, जयदेव प्रसाद इंदौरिया, जीवानंद, सोहन कुमार बांठिया, चौधरी मोहन सिंह, मास्टर दीपचंद, चंदनमल वैद, मोहन लाल जैन, फूसाराम चौधरी रामलाल, गौरीशंकर आचार्य, चौधरी रामचंद्र, चौधरी मनफूल सिंह, पं. बंशीधर बिस्सा, कालूराम हटीला, वासुदेव विजयवर्गीय ऐसे स्वतंत्रता सेनानी थे जो देश को स्वतंत्रता दिलाने में समर्पण भाव से डटे रहे ।

आखिर वह स्वप्निल पल आया जिसकी बरसों से प्रतीक्षा थी। 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। बीकानेर में पूरे उल्लास-उमंग के साथ ईदगाह बारी के विशाल मैदान में राष्ट्रीय तिरंगा झंडा फहराया गया। भारत माता की जय, महात्मा गांधी की जय, वंदे मातरम आदि के समवेत उद्घोषों से पूरा माहौल स्वतंत्रता का नाद करने लगा था। ●

स्वतंत्रता आंदोलन में राजस्थानी कवियों का योगदान

'धोरां वाला देस जाग' से स्वाधीनता का नाद

– प्रो. भंवरसिंह सामौर

बांकीदास आसिया

स्वतंत्रता एक प्रबल एवं व्यापक भाव है जो आत्मगौरव के उत्साह से आप्लावित है। उत्साह के कारण यह वीररस के अन्तर्गत आता है। राजस्थान के रणवीरों ने स्वतंत्रता की रक्षा के लिए हँस-हँस कर प्राणों की बाजी लगाई है। वहीं साहित्यकारों ने कदम से कदम मिलाकर रक्त बिन्दुओं के अक्षरों में राष्ट्रीय साहित्य का निर्माण किया है। विद्वज्जनों ने इसे विश्व में बेजोड़ बनाया। विद्वत कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने 18 फरवरी, 1937 में राजस्थान रिसर्च सोसायटी के समारोह में कवि रत्न हिंगलाज दान कविया के मुख से डिंगल के वीर गीत सुनकर रोमांचित होते हुए अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा था – 'आज मैंने वीर रस के साक्षात् दर्शन कर लिए। यह साहित्य भारतवर्ष के लिए गौरव की वस्तु है। मैं सुना करता था कि चारण कवियों की कविता में वह शक्ति थी कि मुर्दों में प्राणों का संचार कर देती थी। आज देख भी लिया। विश्वास भी हो गया। राजस्थान के चारण कवियों ने अपने रक्त से जिस साहित्य का निर्माण किया वह विश्व में अद्वितीय है।

इन साहित्यकारों की दृष्टि में विवेक, स्मृति में 'गौरव गाथाएं' तथा कथन में निडरता का अभिमान था। इसीलिए वीरों की प्रशंसा व कायरों की निन्दा करने में आगे रहे। प्रशंसा में चापलूसी नहीं तो निन्दा में ओछापन नहीं है। इन कविताओं ने स्वतंत्रता के मार्ग पर दौड़ने की सामर्थ्य दी तो समाज के होने का प्रमाण भी दिया है। इन वीरों ने ईश्वर को भी चुनौती दे डाली कि 'मुझे युद्ध भूमि से भगाओं तो मानूं।' इस साहित्य में धरती प्रेम, देशभक्ति, शरणागत रक्षा तथा वचन पालन पर जोर दिया गया है। ये गुण आज भी हमारे लिए प्रासंगिक हैं।

स्वतंत्रता संग्राम का यह साहित्य तीन रूपों में लिखा गया। प्रथम– बर्बर आक्रान्ताओं के आक्रमणों से सचेत करते हुए उनका प्रतिरोध करने के लिए वीरों का मनोबल बढ़ाना। द्वितीय – 1857 के संग्राम में चेतावनी देने वालों को समझाना व न मानने पर निन्दा करना। तृतीय – 1857 के बाद 1947 तक वही प्रतिरोधी स्वर जनक्रान्ति व जन आंदोलन का ओजस्वी स्वर सत्याग्रह को गति देने वाला बन जाता है। राजस्थान में क्रान्ति व आन्दोलन का नेतृत्व करने वाले सभी नेता कवि भी थे। अतः आन्दोलन में भी राजस्थानी साहित्य केन्द्रीय भूमिका में रहा।

बर्बर आक्रान्ता महमूद गजनवी के सोमनाथ आक्रमण के समय गोगा राणा के केशरिया आक्रमण आमंत्रण पर देश के योद्धाओं ने उनके साथ पराक्रम से मुकाबला करते हुए प्राणोत्सर्ग कर देव पद प्राप्त किया। लोगों ने गोगा राणा को श्रद्धा से गोगा बापा (पितातुल्य) संबोधन दिया। गोगा राणा का राजस्थानी गाथा भारत के साथ-साथ ठेठ पाकिस्तान व अफगानिस्तान तक चाव से गाई व सुनी जाती है। आसा बारहठ की 'गोगा राणा री पैड़ी' काव्य प्रसिद्ध है। 'गोगा राणा रा रसावला' नामक डिंगल काव्य में कवि मेहा बीठू कहता है –

बेटा पैतालीस, सितर सरसा भात्रीजा
बांधव गुण चालीस, चार सौ ठाकुर बीजा
पुत्र जंवाई पांच, रहै मोड़ बंध अेता
जबन अठारै बीरा, जिकै सुरजन साहेता
मोहिल असी तंवर त्रिय, जादू साठ पचास भण
कवि मेह कहै गोगै कनै, रहिया छत्रिय अेता रण।

इतिहास तो भूल गया पर लोक ने गोगा राणा की स्मृति को जीवित रखा। प्रतिवर्ष भाद्रपद महीने में तीस दिन तक देशभर से लाखों लोग केशरिया वस्त्र धारण कर ददरेवा व गोगामेड़ी में उन्हें श्रद्धांजलि देने आज

सूर्यमल्ल मिश्रण

भी आते हैं। श्रद्धालु ददरेवा (चूरू) की मिट्टी अपने साथ ले जाते हैं।

चाहे पृथ्वीराज चौहान का प्रसंग हो, अचलदास खींची का प्रसंग हो, हालू हाडा का प्रसंग हो, कल्ला रामगमोत का प्रसंग हो, राणा गढ़ लक्ष्मणसिंह का प्रसंग हो, पद्मिनी के जौहर का प्रसंग हो, राजा हमीर का प्रसंग हो, राणा सांगा का प्रसंग हो, राणा प्रताप का प्रसंग हो, रावजैतसी का प्रसंग हो, कान्हड़ देव का प्रसंग हो, चूरू के किले से चले चांदी के गोलों का प्रसंग हो अथवा अन्य अनेक प्रसंग जिनका मैंने विस्तारमय उल्लेख नहीं किया है, सभी का मूल स्वर एक ही था कि मरुधरा को आक्रान्ताओं से मुक्त करने के ये स्वातंत्र्य वीर समर के अभिमान थे। इस अभिमान का कारण स्पष्ट करते हुए कवि कहता है –

घर जातां धर्म पलटतां, त्रिया पडंतां ताव।
अै तीनू दिन मरणरा, कूण रंक कुण राव।।

स्वतंत्रता संग्राम का द्वितीय रूप 1857 के समय सामने आता है। भारतवर्ष की सभी भाषाओं में सर्वप्रथम अंग्रेजों का विरोध राजस्थानी भाषा में मुखर हुआ। जोधपुर का कविराजा बांकीदास आसिया अंग्रेजों का सीधा विरोध करता है। उसका डिंगल गीत 'आयो इंगरेज मुलक रै ऊपर' स्वतंत्रता संग्राम का महामंत्र बन गया। कवि कहता है कि अंग्रेज नाम का शैतान हमारे देश पर चढ़ आया है। उसने देश की चेतना को खत्म कर दिया है। जिस देश के वीरों ने अपने प्राण देकर भी धरती की रक्षा की वही धरती देखते-देखते अंग्रेजों के हाथों में चली गई। न तो अंग्रेजों से मुकाबला किया तथा जो मुकाबला कर रहे थे उन्हें भी सहायता नहीं दी। राजाओं को धिक्कारते हुए बांकीदास ने कहा है अयोग्य शासकों तुमने तो देश की गरिमा को ही मिट्टी में मिला दिया। धिक्कार है तुम्हें। देश को गुलाम होना था सो हो गया। जब आजाद होना होगा तब आजाद हो जाएगा। तुमने तो मुकाबले का सुनहरा अवसर खो दिया।

पुर जोधाण उदैपुर जैपुर,
पहुं थांरा खूटा परिमाण,
आंकै गई आरसी आंकै,
बांकै आसल किया बंसाण।

जोधपुर का राजकवि बांकीदास अपने राजा को फटकारता है तथा निडरता से भरतपुर के राजा रणजीत सिंह की खुलकर प्रशंसा कर अपनी कविता कहता है –

बजियों भलो भरतपुर वालो,
गजै गजर धजर नभ गोम,
पहिला सिर साहबरो पड़ियो,
गड़ ऊभा नहं दीची भोग।

अरे गए गुजरे राजाओं, तुम से तो भरतपुर का राजा ही अच्छा जिसने आकाश में बम गोलों की गर्जना कर मुकाबला निडर होकर किया। अंग्रेज सेनापति का सिर काटकर उन योद्धाओं ने अपनी धरती फिरंगियों को नहीं दी।

कविराजा बांकीदास तो अंग्रेजों का मुँह काला कर निकालने के लिए भगवान् राम से भी प्रार्थना करता है –

सीत बहरू अरज सुणीजै,
रेणा छवियां रै राखीजै,
दध रै तलै किसकंतो दीजें,
कालो मुख गोरां रो कीजै।

हे सीता पति राम आप मेरी प्रार्थना सुनिए तथा भारत की भूमि भारतवासियों की ही रखिए। अंग्रेजों की राजधानी कोलकाता को समुद्र में डुबो दीजिए। गोरे अंग्रेजों का मुँह काला करके यहाँ से निकाल दीजिए। अंग्रेजों को देश से निकालने की प्रार्थना एक राज कवि कर रहा है जिसके राजा ने अंग्रेजों से संधि भी कर रखी है।

महान् कवि की चिन्ताएं भी बड़ी होती हैं। बांकीदास न भरतपुर गया न रणजीत सिंह को कभी देखा ही, पर बांकीदास की कविता का नायक वह इसलिए बना कि उसने अंग्रेजों का मुकाबला किया। राजस्थानी साहित्य की इस प्रवृत्ति को समझिये कि जोधपुर में बैठा बांकीदास लिखता है 'बजियो भलो भरतपुर वालो'।

बूंदी के राजकवि वीर रसावतार महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण आधुनिक राजस्थानी साहित्य के मध्याह्न के सूर्य हैं। वे 1857 की क्रान्ति को सम्मान देने वाले प्रथम राजकवि थे। स्वतंत्रता की भावना का ज्वार

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने राजस्थानी कवियों के बारे में कहा है, 'आज मैंने वीर रस के साक्षात् दर्शन कर लिए। यह साहित्य भारतवर्ष के लिए गौरव की वस्तु है। मैं सुना करता था कि चारण कवियों की कविता में वह शक्ति थी कि मुर्दों में प्राणों का संचार कर देती थी। आज देख भी लिया। विश्वास भी हो गया। राजस्थान के चारण कवियों ने अपने रक्त से जिस साहित्य का निर्माण किया वह विश्व में अद्वितीय है।'

केसरीसिंह बारहठ

इनकी रचनाओं में उफान पर है। 1857 को केन्द्रित कर इन्होंने वीर सतसई लिखी। अपनी वीर सतसई में वे स्पष्ट कहते हैं –

बीकम बरसां बीतियो, गणचौ कंद गुणीस।
बिसहर तिथ गुरु जेठ बदी, समय पलट्टी सीस।।

विक्रम संवत 1914 (सन् 1857) के जेठ महीने के कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि गुरुवार तद्नुसार मई महीने में समय ने पलटा खाया यानी क्रान्ति प्रारंभ हुई। इसी कारण वीर सतसई को 1857 का दस्तावेजी काव्य कहा जाता है। वीर सतसई में वीरता के अभाव की पीड़ा स्पष्ट झलकती है। वीर सतसई भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का काव्य मय उद्गार है।

सूर्यमल्ल अपने देश की दुर्दशा का चित्रण करता हुआ कहता है –

सूता घर घर आलसी, वृथा गमावै वैस।
खग धारां घोड़ां खुरां, दाबै अजका देस।।
जिण बन भूलन आंवता, गैंद गिवय गिरराज।
तिण बन जंबुक ताखड़ा, उध्धम मंडै आज।।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम की असफलता से वीर सतसई भी अपूर्ण रह गई। वीर सतसई में वीरत्व के भाव की महिमा का सांगोपांग चित्रण हुआ है। कवि वीर सतसई में वीरत्व का परिवेश रचता है। वीर सतसई की वीर नारी स्पष्ट कहती है –

सहणी सबरी हूं सखी, दो उर उलटी दाह।
दूध लजाणै पूत सम, वलय लजाणै नाह।।
नहं पड़ोस कामर नरां, हेली वास सुहाय।
बलिहारी जिण देसड़ै, माथा मोल बिकाय।।

वीर सतसई के यह दोहे तो वेदों के 'पृथ्वी सूक्त' को भी पीछे छोड़ देते हैं।

इला न देगी आपणी, हालरियौ हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बड़ाई माय।।
रण हालीजै चारणां, चाहे अब लग चैन।
करै सुहड़ जिसड़ी कहो, विध सूं दर बणैन।।
अठै सुजस प्रभुता उठै, अवसर मरियां आय।
मरणों घर रै मांझिया, जन नरकां ले ज्याय।।

स्वतंत्रता संग्राम की इसी परम्परा में बोबासर (चूरू) के शंकरदान सामौर आते हैं। सूर्यमल्ल मिश्रण एवं शंकरदान सामौर समकालीन थे। दोनों ने राष्ट्रीयता की भावना को अपनी कविता का आधार बनाया। अनीति का हर स्तर पर विरोध किया। उनके धरने (सत्याग्रह) इस बात के साक्षी है। शंकरदान सामौर का उद्घोष था –

मरस्यां तो मोहै मतै, सो जग कहै सपूत।
जीस्यां तो देस्यां जरू, जुलम्यां रै सिर जूत।।

शंकरदान सामौर ने उन लोगों की ओर से आवाज उठाई जिन्हें कहने का हक नहीं था तथा वह आवाज उन लोगों तक पहुंचाई जो उस आवाज को सुनने के लिए तैयार ही नहीं थे।

1857 की क्रान्ति के अवसर पर शंकरदान सामौर अपने लोगों के बीच कवि नायक के रूप में विख्यात थे। 1857 की क्रान्ति पर उनका उद्घोष –

आयो अवसर आज, प्रजा पख पूरण पाकण
आयो अवसर आज, गरब गोरांरो गालण
आयो अवसर आज, रीत राखण हिन्दवाणी
फाल हिरण चूक्यां फटक, पाछो कावन पावसी
आजाद हिन्द करबा अवर, अवसर इसो न आवसी।

शंकरदान सामौर ने अंग्रेजों की अनीति का वर्णन करते हुए उन्हें यहां से निकालने का यह मंत्र दिया कि –

भिल मुसलमान रजपूत ओ मरेठा
जाह सिख पंथ छड़ जबर जुड़सी
दौड़सी देसरा दबिमोड़ा दाकलकर
मुलक रा मीठा ठग तुरत मुड़सी।

इस स्वतंत्रता संग्राम में शंकरदान सामौर ने तांत्या टोपे की जो मदद की वह इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। तांत्या टोपे जब लक्ष्मणगढ़ के किले में घिर गया तो उसे वहां से निकाल बोबासर में अपने चचेरे भाई पृथ्वीसिंह सामौर के गढ़ में शरण देकर उसे संन्यासी के वेश में जालोर होते हुए गुजरात पहुंचाया। अंग्रेजों को जब पता चला तो बारूद से बोबासर का गढ़ उड़ा दिया। धलकोट की बाड़ छापते आज भी तोपों के गोले निकलते हैं। इस घटना का यह दोहा प्रसिद्ध है –

गडवी पिरथी सिंघ गुणी, गोरां मेट गरूर।
मरद तांतिये री मदत, की उण बेल थरूर।।

अंग्रेजों की लूट का विश्लेषण करते हुए कवि कहता है –

महलज लूटण मोकला चढ्या सुण्या चंगेज।
लूटण झूंपा लालची, आया बस अंगरेज।।

शंकरदान सामौर ने तांत्या टोपे पर डिंगल गीत लिखा –

जठै गयो जंग जीतियो, खटकै विण रणखेत।
तकड़ो लड़ियो तांतियो, हिन्द थान रै हेत।।

झांसी की रानी के बारे में लिखते हैं –

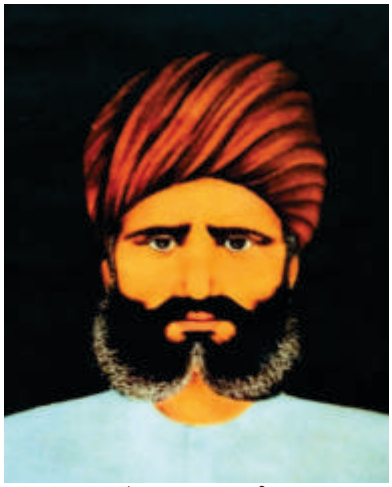

शंकरदान सामौर

हुयो जांण बेहाल, भाल हिन्द री भोम रो।
झगड़ो निज भुज झाल, लिछमी झांसी री लड़ी।।

जब 1857 में शस्त्रों से देश स्वतंत्र नहीं हुआ तो शंकरदान सामौर समझ गए कि अब देश शस्त्रों के बल पर आजाद नहीं हो सकता। अब जनता को समग्र स्वरूप में खड़ा करना होगा। तभी उन्होंने कहा –

मेटण मातेती मुलक, हमैं पकड़ हल हाथ।
बेटा खगरी बीतगी, बल बावल री बात।।

अर्थात् अब तलवार की मूठ के स्थान पर हल की मूठ पर हाथ रखो। यहीं से स्वतंत्रता संग्राम स्वतंत्रता आन्दोलन की तरफ अग्रसर हो किसान आन्दोलन व सत्याग्रह से रूबरू होता है। निम्नांकित एक दोहे में उनका यश साकार होकर लोगों की जुबान पर सवार है –

शंकरियै सामौर रा, गोली हंदा गीत।
मिंतर साचा मुलक रा, रिपुवां उलटी रीत।।

शंकरदान सामौर के बाद केसरीसिंह बारहठ का नाम भी इसी परम्परा में आता है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बारहठ जी ने सक्रिय भूमिका निभाई। इतना ही नहीं शंकरदान सामौर से दो कदम आगे राजस्थान में सशस्त्र क्रान्ति में अग्रणी बन अपने पूरे परिवार को न्योछावर कर दिया। 1903 ई. में लार्ड कर्जन द्वारा आयोजित दिल्ली दरबार में मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह को सम्मिलित होने के लिए विवश कर लिया। केसरी बारहठ को पता चला तो उन्होंने 'चेतावणी रा चूंगटिया' नामक तेरह सोरठों की कविता में पत्र लिखा तथा स्मरण दिलाया कि मेवाड़ के महाराणा व यहां की धरती भारत के लोगों के हृदय में स्थापित हो चुकी है। हिन्दुस्तान के लोग अपने हिन्दुआ सूरज को दिल्ली में तारा बनते देखेंगे तो उनकी अश्रुधारा का तुमने अन्दाज नहीं लगाया। यह पत्र महाराणा फतेहसिंह को दिल्ली जाती उनकी रेल को रुकवाकर सरेरी नामक स्टेशन पर दिया गया। निशाना सही जगह पर लगा। महाराणा दिल्ली दरबार में सम्मिलित नहीं हुए। यह खबर 'असली कुर्सी खाली थी' शीर्षक से भारत सहित विश्व के सभी अखबारों में हैडलाइन बनी। केसरीसिंह बारहठ रातोंरात विश्व नायक बन गए। कई सप्ताहों तक यह खबर देश-दुनिया के अखबारों में विश्लेषित होती रही। कुछ सोरठे देखिए –

पग पग भक्या पहाड़, धरा छांड राख्यो धरम।
ईसूं महाराणा मेवाड़, हिरदै बसिया हिन्द रै।।
देखैला हिन्दबाण, निज सूरज दिस नेह सूं।
पग तारा परमाण, निरख निसासा नाखसी।
देखै अंजस दीह, मुलकलौ मन ही मनां।
दयी गढ दिल्लीह, सीस नमता सीसवद।।

केसरीसिंह बारहठ की लम्बी कविता 'राज-परजा संवाद' अद्वितीय रचना है। इस रचना में तत्कालीन यथार्थ अभिव्यक्त हुआ है। उपर्युक्त चारों कवियों – बांकीदास आसिया, सूर्यमल्ल मिश्रण, शंकरदान सामौर तथा केसरीसिंह बारहठ ने यह सिद्ध कर दिया कि कवि क्या होता है तथा कविता क्या होती है।

इस परम्परा के कवियों की एक लम्बी पंक्ति है यथा गिरवरदान कविया, नाथूराम लालस, नवलदान लालस, जवानजी आढ़ा, बुचसिंह सिंढायच, दलजी मेहडू, दुर्गादत्त बरहठ, राधोदास सांदू, जादूराम आढा, बुधजी आसिया, तिलोकदान बारहठ, बिसनदान बारहठ, गोपाल दधवाड़िया, चैनदान बणसूर, गोपालदान खिड़िया, लिखमीदान ऊजल, गंगादान सांदू, जीवराज सांदू, भारतदान आसिया, हिंगलाजदान कविया, नाथूसिंह महिमारिया आदि कवियों की भूमिका भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं रही। नाथूसिंह महिमामरिया के एक दोहे से आप अनुमान लगा सकते हैं –

सुत मरियो हित देस रै, हरख्यो बंधु समाज।
मानह हरखी जनम दे, इतरी हरखी आज।।

अब स्वतंत्रता संग्राम जन जागरण-जन आंदोलन के रूप में सामने आता है। खुशी की बात यह है कि इस दौर के सभी नेता राजस्थानी के अच्छे कवि भी थे। जयनारायण व्यास तो 'आगीवांण' शीर्षक से पत्र भी निकालते थे। केसरीसिंह बारहठ, जयनारायण व्यास, विजयसिंह पथिक, हीरालाल शास्त्री, माणिक्यलाल वर्मा, भैंरूलाल काला बादल, गणेशलाल व्यास उस्ताद, गोरीलाल गुप्त, धीरजमल बच्छावत आदि कवि नेताओं ने राजस्थानी कविता को हथियार के रूप में काम में लिया। चेतावनी वाला भाव जागृति में बदल गया। हीरालाल शास्त्री की 'सपनो', 'फरियाद', 'अब तो बोलो रै', 'म्हे आज बोला छां' आदि कविताएं बहुत लोक प्रचलित थीं। जयनारायण व्यास की 'मत दूध लजाइजै', 'राम नैं ओलमो', 'म्हानैं इसड़ो दीज्यो राज', कविताएं लोक मुख से सुनने को मिलती थीं। माणिक्यलाल वर्मा की 'अरजी पंचारी' तथा 'पंछीड़ा' बहुत लोकप्रिय रचनाएं थीं। भैंरूलाल की 'काला बादल' कविता पर लोग मुग्ध थे तथा उनका नाम ही लोगों ने काला बादल रख दिया। 'कुण जमीन रो धणी' कन्हैया लाल सेठिया की वह रचना है जिसका जवाब किसी के पास नहीं है। मनुज देपावत की ऐसी ही रचना 'रै धोरां वाला देस जाग' है। 'चेत मानखा', 'माटी थनै बोलणो पड़सी' तथा 'इंकलाब आंधी' जैसी रेवतदान चारण की कविताएं दिनकर की स्मृति दिलाती है। ●

स्वाधीनता आन्दोलन में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान

डॉ. महेन्द्र मधुप

जयनारायण व्यास ने स्वतंत्रता पूर्व राजस्थान की पत्रकारिता की दशा-दिशा के बारे में कहा - 'मैं ऐसी रियासत (जोधपुर) में पैदा हुआ था जहां टाइपराइटर बिना सरकारी आज्ञा के नहीं रखा जा सकता था। साइक्लोस्टाइल छापाखाने की परिभाषा में आता था। इशारों से राजघराने या शासन के प्रति बेवफाई के ख्यालात का इजहार करना राजद्रोह था तथा सजा भी उम्रकैद तक हो सकती थी। जयपुर में सभा करना मना था। सभा का अर्थ था कम से कम 5 लोगों की उपस्थिति।'

राजस्थान का प्रथम मुद्रणालय भरतपुर में स्थापित हुआ। वहां से प्रदेश का पहला अखबार 'मजरुल सरूर' उर्दू-हिन्दी में छपा। अंक अनुपलब्ध हैं, पर इसका प्रकाशन वर्ष 1849 माना जाता है। जयपुर में समाचार पत्र स्टेशन के बाहर नहीं लाए जा सकते थे। यहां से त्रिभाषी 'जयपुर गजट' का 1878 से प्रकाशन हुआ। रियासती गजटों की जनजागरण में भूमिका नगण्य रही।

राजस्थान की प्रथम साहित्यिक पत्रिका 'विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका' (विद्यार्थी नाम बाद में जुड़ा) का 1881 में नाथद्वारा से प्रकाशन शुरू हुआ। मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या के सम्पादन में इस पत्रिका में बाबू हरिश्चन्द्र से लेकर जाने माने लेखक आत्मउजास के रंग भरते।

हिन्दी की पत्रिका 'समालोचक' का 1902 में जयपुर से जवाहरलाल जैन वैद्य ने प्रकाशन शुरू किया। सम्पादक के रूप में गहमर निवासी बाबू गोपालराम का नाम छपता था। माना जाता है कि पं. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' इसका सम्पादन किया करते थे। इसमें फरवरी-मार्च, 2006 की छपी पंक्तियां उद्धृत है - 'भारत में कवि ही नहीं, कविताएं भी नहीं हैं। कारण यह कि कविता देश और जाति की स्वाधीनता से सम्बन्ध रखती है। जब यह देश, देश था और यहां के लोग स्वाभिमानी थे तब यहां कविता भी होती थी।' यह पत्रिका स्वातंत्र्य भावना की उद्घोषक रही।

आबूरोड से 1910 से 'हिन्दी साहित्य ग्रंथावली' और 1920 में झालावाड़ से 'सौरभ' ने मानवमात्र की स्वतंत्रता पर बल दिया। 1922 से अजमेर से प्रकाशित 'नवीन राजस्थान' ने रियासती जनता पर किए दमन का विरोध किया। प्रतिबंध लगने पर इसे 'तरुण राजस्थान' के रूप में छापा गया। इसने 1925 के नीमूचाणा

हत्याकांड की जांच की प्रबल मांग की।

1922 से फतेहपुर (सीकर) से प्रकाशित 'श्री स्वदेश' में देशभक्ति के रंग थे। 1923 में ब्यावर, फिर अजमेर और बाद में ब्यावर से प्रकाशित 'राजस्थान' के सम्पादक ऋषिदत्त मेहता और उनके परिवार ने स्वाधीनता आन्दोलन के लिए कुर्बानियां दीं। राजेन्द्रशंकर भट्ट इसके सम्पादकीय विभाग से जुड़े।

हरिभाऊ उपाध्याय के सम्पादन में अजमेर से 1928 में प्रकाशित 'त्यागभूमि' के दूसरे अंक का मुखपृष्ठ उद्धृत है – 'कदमबोसी को चल के सर के बल आएगी आजादी, कि मर मिटने की ख्वाहिश ऐ दिले नादान पैदा कर।'

अजमेर से 1930 में जगदीश प्रसाद दीपक ने नारी चेतना के लिए 'मीरा' की शुरुआत की। 1932 में लाड़लीनारायण गोयल के सम्पादन में मासिक 'प्रभात' का लक्ष्य राजस्थानियों में स्वाभिमान पैदा करना रहा। बाद में यह दैनिक हो गया। 1925 में प्रियतमलाल कामदार ने 'जयपुर समाचार' निकाला। इसे रियासती दमन झेलना पड़ा।

1936 में रामनारायण चौधरी ने, अजमेर से राजस्थान सेवक मण्डल के स्वामित्व में 'नवज्योति' की शुरुआत की। स्वतंत्रता सेनानी होने के कारण उनके यहां कई बार तलाशियां ली गईं, जमानत तलब की गई। बाद में अखबार पूरी तरह रामनारायण जी को सौंप दिया गया। कुछ समय बाद उन्होंने इसका पूर्ण दायित्व अपने छोटे भाई दुर्गाप्रसाद चौधरी को दिया जिन्होंने इसे साप्ताहिक से दैनिक बनाया। जहाँ दमन हुआ 'नवज्योति' ने उसका विरोध किया।1936 में ही जयनारायण व्यास ने पाक्षिक 'आगीवाण' राजस्थानी में निकाला। रियासती जुल्मों पर इसने तीखा प्रहार किया। 1938 में जोधपुर से अचलेश्वरप्रसाद शर्मा ने 'प्रजासेवक' का प्रकाशन आम आदमी के स्वातंत्र्य हित में किया। 1939 में अजमेर से ठाकुर नारायणसिंह के सम्पादन में 'नवजीवन' ने स्वराज आन्दोलन का साथ दिया। कनक मधुकर भी इसके सम्पादक बने। 1939 में ही जयपुर से प्रकाशित हुए 'प्रकाश' की कमलादेवी राजस्थान की पहली महिला सम्पादिका है। उनकी मृत्यु के बाद कमलाकर 'कमल' ने देशोन्नति की ज्योत को जलाए रखा।

सितम्बर, 1940 में जयपुर से गुलाबचन्द काला ने पाक्षिक 'जयभूमि' का प्रकाशन शुरू किया। 1943 में यह पाक्षिक और 1946 में दैनिक हो गया। राजमल सिंघी, प्रवीणचन्द्र छाबड़ा और नन्दकिशोर पारीक काला जी से पत्रकार कर्म में सम्बद्ध रहे। मुखपृष्ठ की पंक्तियां – 'विजय मंत्र सुनाने दिव्य, दिलाने वीरों को सम्मान। जगाने को आई 'जयभूमि' जनों में जीवन ज्योति महान्।' जुलाई, 1940 से जयपुर से प्रकाशित 'हितैषी' में प्रियदर्शी की कविता उद्धृत है – 'आज वही ज्वाला सुलगा दें, जिसमें क्रान्ति मधुर। वीरों के उर में फैलो बन, ओज किरण कल्याणी।' 1940 में ही यू.एन. चक्रवर्ती ने जयपुर से 'इंडियन इंडिया' के जरिए स्वराज और स्वदेशी का उद्घोष किया।

1941 में जयपुर से वासुदेव शर्मा ने 'राजस्थान टाइम्स' का प्रकाशन किया। सम्पादकीय के ऊपर लिखा होता था – 'शासन की प्रणालियों के लिए मूर्खों को लड़ने दो क्योंकि सर्वोत्कृष्ट प्रणाली वही है जिसके द्वारा सुख समृद्धिपूर्ण हो।' अंग्रेजों की शासन प्रणाली पर किए गए व्यंग्य के इस तीखे तेवर के कारण इसके प्रकाशन पर रोक लगा दी गई।

1942 में श्यामलाल वर्मा के सम्पादन में जयपुर से प्रकाशित 'जयपुर समाचार' की तीखी भाषा के कारण प्रकाशन पर रोक से लेकर वर्मा जी के जयपुर प्रवेश तक का दमन भोगना पड़ा। 1942 में ही जयपुर से शुरू हुई 'जयध्वनि' का संघर्ष अंग्रेजों से ज्यादा था। इसी वर्ष केशरलाल अजमेरा जैन ने भी जयपुर से 'राजस्थान हैराल्ड' का प्रकाशन कर स्वातंत्र्य चेतना पर बल दिया।

1943 में जयपुर से देवीशंकर तिवारी के सम्पादन में साप्ताहिक 'लोकवाणी' का प्रकाशन शुरू हुआ। बाद में यह दैनिक हो गया। स्वतंत्रता पूर्व सिद्धराज ढड्ढा, जवाहरलाल जैन, पूर्णचन्द जैन और राजेन्द्रशंकर भट्ट इसके सम्पादन से सम्बद्ध रहे। उत्तरदायी शासन के लिए मांग को इसने प्रबल समर्थन दिया। 1943 में कुंजबिहारी लाल मोदी ने अलवर से 'अलवर पत्रिका' का प्रकाशन प्रजामण्डल और राष्ट्रीयता के प्रचार के लिए किया।

रूपनारायण पाण्डे और नन्दकिशोर पारीक ने जयपुर से 'पारीक' और प्रियतमलाल कामदार ने जयपुर से 'प्रचार' का 1945 में प्रकाशन किया। इसी वर्ष भरतपुर से युगलकिशोर चतुर्वेदी के सम्पादन में 'नवयुग सन्देश' छपने लगा। 'प्रचार' ने चेताया 'चोर, पापी और उल्लू सदा अंधेरा चाहते हैं, लेकिन 'प्रचार' है पब्लिक की सर्चलाइट।

जनचेतना और स्वातंत्र्य भावना से जयपुर से 1946 में रतनलाल जोशी के सम्पादन में बाल मासिक 'भाई बहन', शीतलप्रसाद साहित्यरत्न के सम्पादन में 'आजाद सैनिक' और नन्दकिशोर पारीक के सम्पादन में प्रदेश के पहले सिने मासिक 'चांदनी' और अद्भुत शास्त्री के सम्पादन में 'मारवाड़ी गौरव' के प्रकाशन की शुरुआत हुई। सभी में देश की आजादी के लिए तड़प रही। 'मारवाड़ी गौरव' ने लिखा – 'चेतना मानवीय संस्कार है, इसे न भूलो। नवराष्ट्र नवयुग का निर्माण कर नवप्रभाती को समझो।'

राजस्थान में स्वतंत्रता पूर्व पत्रकारिता का संघर्ष मिशनरी रही। रियासती और विदेशी सत्ता के विरोध के कारण शासन का दमन अनेक की नियति बन गया। स्वातंत्र्य योद्धा प्रतिष्ठित पत्रकार बने। उनका एक पांव समाचार पत्र के कार्यालय में होता और दूसरा जेल में। अखबार के दीर्घकाल तक प्रकाशन से अधिक जरूरी यह था कि भले ही 2-3 अंकों के बाद बन्द हो जाए पर शोषणमुक्त का पक्षधर रहे। ●

स्वतंत्रता पूर्व रेडियो प्रसारण सेवा

राजस्थान में रेडियो प्रसारण सेवा देशी रियासत जोधपुर के अन्तर्गत, देश की आजादी से पूर्व 1942 में प्रारम्भ हुई। जोधपुर महाराजा ने एक किलोवाट का ट्रांसमीटर लगाकर रेडियो स्टेशन का शुभारंभ किया। पी.सी. माथुर को इसका निदेशक बनाया गया। इस केन्द्र से 'नेशनल वार फ्रन्ट' के समाचारों को प्रमुखता से प्रसारित किया जाता था। 1943 में यह केन्द्र बन्द हो गया।

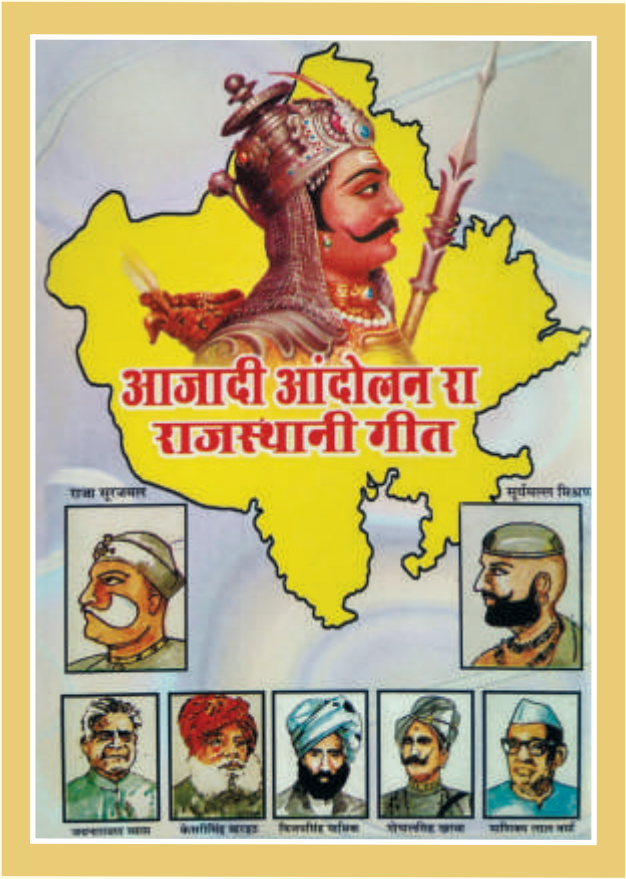

आजादी के राजस्थानी तराने

– एम.डी. सोनी

आजादी के आंदोलन में राजपूताने का अविस्मरणीय योगदान रहा। यहां के छोटे-छोटे ठिकानों और कस्बों तक ने सीमित सामर्थ्य और संसाधनों के बावजूद बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया तथा आजादी की मशाल को मजबूत किया। अपनी आवाज को आमजन तक पहुंचाने और जन-जन को जागरूक करने के लिए स्वतंत्रता सेनानियों और देशभक्त रचनाकारों ने यहां की मातृभाषा को माध्यम बनाया।

राजस्थानी में रचे गए गीतों ने लोगों में स्वाधीनता का शंखनाद किया। मायड़ भाषा की ये रचनाएं इतनी लोकप्रिय हुईं कि कौमी तराने बन गईं। इनमें से चुनिंदा गीतों को म्यूजिक कंपनियों ने ग्रामोफोन रिकॉर्ड पर जारी करके हमेशा के लिए सहेज लिया, इतिहास की धरोहर बना दिया। इनकी लंबी लिस्ट में सबसे अहम मिसाल है, 'शेरे राजस्थान' के नाम से विख्यात लोकनायक जयनारायण व्यास की कलम से निकले और उन्हीं की बुलंद आवाज में निखरे दो गीत, जिनको जोधपुर की द मारवाड़ी रिकॉर्ड कंपनी ने 78 आरपीएम डिस्क पर एनएनबी 213 नंबर के तहत रिलीज किया। इस रिकॉर्ड की पहली साइड पर

सिने पर्दे पर

सागरमल गोपा की वीर गाथा

स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान के जिन सपूतों ने सबसे ज्यादा यातनाएं सहकर बलिदान किया उनमें सर्वोपरि नाम है – सागरमल गोपा। पांच साल तक जेल में क्रूरता की हद तक जुल्म सहने और जिंदा जला दिए जाने के बावजूद उनका नाम स्वतंत्रता सेनानियों की मुख्यधारा में शामिल नहीं हो पाया।

जैसलमेर में तीन नवम्बर, 1900 को ब्राह्मण परिवार में जन्मे सागरमल गोपा के पुरखे राजपरिवार में राजगुरु रहे। उनके पिता भी जैसलमेर रियासत में सेवारत थे। लेकिन युवा सागरमल ने आजादी की लड़ाई में जैसलमेर महाराजा जवाहर सिंह की उदासीनता से खिन्न होकर जनजागरण का बिगुल बजा दिया। अपने प्रखर भाषणों और लेखों के जरिए उन्होंने न सिर्फ अपना संदेश लोगों तक पहुंचाया बल्कि स्वाधीनता के प्रति उन्हें जागरूक भी किया। दूसरी तरफ, 'जैसलमेर राज्य का गुंडाराज', 'आजादी के दीवाने' और 'रघुनाथ सिंह का मुकदमा' जैसी अपनी बेबाक किताबों से सागरमल गोपा ने अवाम में विद्रोह के स्वर मुखर कर दिए। गोपा का जोश, जुनून और तेवर देखकर उन्हें 25 मई, 1941 को गिरफ्तार कर लिया गया। बेड़ियां डालकर उन्हें जेल

साथीड़ा रे करमोजी रे घरे जायो रे
मोहनजी नाम धरायो रे
भारत आजाद करायो रे
म्हारो बाबो गांधीजी...

इन पंक्तियों में महात्मा गांधी से जुड़े जन सरोकारों की अनूठी गूंज है पंक्तियां ऐसी हैं जो सहज कंठ में बसती हैं। रिकॉर्ड के दूसरी साइड में देवी मां की स्तुति है-

आजा मोरे कंठ हृदय बैठजा भवानी
कुण रे देश थारी करी रे थर्पना
कुण रे देव थने मानी...

महात्मा गांधी का गुणगान है-

राजस्थानी भाषा में जयनारायण व्यास के लिखे 'मत दूध लजाईजै, पाछौ मत आईजै बेटा...', महाकवि बांकीदास आसियां रचित 'आयो अंगरेज मुलक रै ऊपर...', ठाकुर केसरीसिंह बारहठ के चेतावनी गीत 'पग पग निगले म्हारी करमां री लकीरां नै...' और माणिक्य लाल वर्मा के आह्वान गान 'मरदां ओ रै...' के साथ महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण और नाथूसिंह महयारिया के वीर सतसई के दूहों ने हमारे यहां से आजादी की लड़ाई में अलख जगाई। इनके अलावा फाग, लूर और दूहों के रंग में ढले 'म्हारो राजा भोळौ रे...', 'वाह वाह झंडौ रोपियो...', 'गोरा हट जा राज भरतपुर को...', 'पराधीन भारत हुयो...', 'जे कोई जणती राणियां...(डूंगजी-जवारजी)' और 'जोरजी सिंहणी रो जायो रे...' जैसे पारंपरिक गीतों ने जनता को देशभक्ति की उमंग से सराबोर कर दिया। ऐसे 14 तरानों को मायड़ भाषा के हिमायती पदम मेहता ने 1997 में 'आजादी आंदोलन रा राजस्थानी गीत' शीर्षक से म्यूजिक कैसेट में जारी करके महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान किया। इसके जरिए न सिर्फ राजस्थानी भाषा की लुप्त विरासत को संरक्षित किया बल्कि नई पीढ़ी को गौरवशाली अतीत से भी परिचित करवाया।

माणक टीवी के बैनर पर पदम मेहता के निर्देशन में तैयार इस एलबम के लिए दलपत परिहार ने देशभक्तिपूर्ण राजस्थानी गीतों का सटीक संयोजन और सह-निर्देशन किया जबकि प्रकाश जोशी ने पुरानी धुनों के तेवर को बरकरार रखकर नए स्वरों के साथ सुरीला शृंगार किया। दलपत परिहार के साथ कीर्ति जोशी, शोभा व्यास, पुखराज पुरोहित और नरेंद्र पुरोहित ने इन तरानों को मनोयोग से जनमानस तक पहुंचाया। ●

की काल कोठरी में बंद कर दिया गया। तरह-तरह की कठोर यातनाएं दी जाने लगीं। उन्हें माफी मांगने पर मजबूर किया गया लेकिन वे जरा भी नहीं झुके। लगभग पांच साल बाद चार अप्रैल, 1946 को पुलिस अधीक्षक गुमान सिंह ने आवेश और आक्रोश में आकर गोपा को जेल में जिंदा जला डाला। इंकलाब जिंदाबाद, वंदे मातरम्, भारतमाता की जय... कहते हुए गोपा शहीद हो गए।

सागरमल गोपा को जेल में दी गई यातनाओं ने वरिष्ठ साहित्यकार और रंगकर्मी लक्ष्मीनारायण रंगा को इतना झकझोर दिया कि उन्होंने एकांकी नाटक की रचना कर दी। शीर्षक रखा - अमर शहीद। कालांतर में इसे राजस्थान के सैकण्डरी स्कूल के हिंदी पाठ्यक्रम में शामिल किया गया। सीकर के दो युवा, विनोद पेंटर और दिनेश कौशिक इस एकांकी से इतने प्रभावित हुए कि गोपा की गौरवगाथा को नई पीढ़ी से रूबरू करवाने के लिए स्कूल तथा कॉलेजों में इसका मंचन करने लगे। 1980 के आसपास शुरू हुआ यह सिलसिला अब भी जारी है।

सागरमल गोपा पर फिल्म भी बनाने की पहल हुई। इस फिल्म का टाइटल रखा गया, 'गोपा - द फ्रीडम फाइटर'। विनोद पेंटर को टाइटल रोल के साथ पटकथा लेखन और निर्देशन की जिम्मेदारी दी गई। निशिकांत शर्मा को महाराजा जवाहर सिंह, अरविंद मिश्रा को जेलर करणीदान और मणि श्यामगढ़वाला को गुमानसिंह रावलोत के महत्त्वपूर्ण किरदार दिए गए। सोनल सिंह, रूपल जांगिड़, प्रीति जैन, पवन तिवाड़ी और वासुदेव सिंह को अन्य प्रमुख भूमिकाएं दी गईं। फिल्म के सभी अहम मोर्चे संभालने वाले निर्माता दिनेश कौशिक ने अली का किरदार निभाया। सीकर के दूजोद गांव में ज्यादातर शूटिंग की गई। 2012 में गांधी जयंती पर फिल्म की स्पेशल स्क्रीनिंग हुई जिसमें सीकर जिले के दो वरिष्ठतम स्वतंत्रता सेनानियों को सम्मानित भी किया गया। 12 अप्रैल, 2013 को सीकर के सम्राट सिनेमा में फिल्म का पहला सार्वजनिक प्रदर्शन हुआ।

उनके अनुसार, फिल्म का निर्माण महान् स्वतंत्रता सेनानी सागरमल गोपा की देशभक्ति और शहादत से भावी पीढ़ी को परिचित करवाने के पावन उद्देश्य से किया गया। लोगों ने इस फिल्म के जरिए पर्दे पर सागरमल गोपा की वीरगाथा के दर्शन किए। फिल्म को विश्वव्यापी प्लेटफॉर्म मुहैया करवाने के लिए अब इसे यूट्यूब पर अपलोड कर दिया गया है। ●

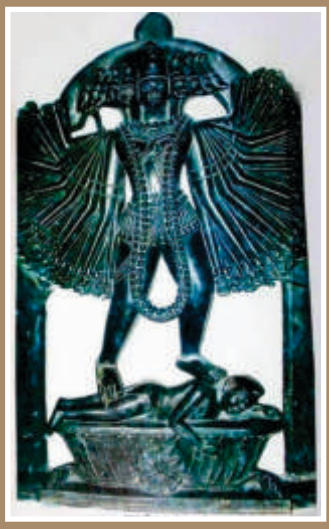

मारवाड़ के आऊवा में 1857 की क्रांति का स्वर्णिम इतिहास

जब क्रांतिकारियों ने अंग्रेज सेना को दो बार दौड़ाया

– डॉ. हनुमान गालवा

देश के पहले स्वाधीनता संग्राम 1857 में ब्रिटिश हुकूमत को उखाड़ फेंकने में राजस्थान ने भी अपना पूरा दमखम दिखाया था। पाली जिले के आऊवा में ठाकुर कुशाल सिंह की अगुवाई में क्रांतिकारियों ने अंग्रेज तथा मारवाड़ की सेना से न केवल सीधा मुकाबला किया, बल्कि दो बार रणक्षेत्र छोड़कर उलटे पांव भागने को विवश भी कर दिया था। क्रांतिकारियों ने उस युद्ध में मारवाड़ के पॉलिटिकल एजेंट मॉक मेसन का सिर काटकर आऊवा दुर्ग के मुख्यद्वार पर लटका दिया था। देशभर में चर्चित रहे आऊवा के संघर्ष को इतिहास में भले ही स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज नहीं किया गया हो लेकिन लोक कंठों में रची-बसी आऊवा की शौर्य कीर्ति को आज भी राजस्थान के गांव-ढाणी में गाया जाता है... आजादी के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान कर देने वाले ठाकुर कुशाल सिंह आऊवा और शिवदान सिंह आसोप के बलिदान को नमन किया जाता है।

राजस्थान में हर गांव-ढाणी में गाए जाने वाले फाग में आऊवा के संघर्ष का स्मरण किया जाता है। अंग्रेजों को टक्कर देने वाले कुशाल सिंह आऊवा और शिवदान सिंह आसोप को आज भी याद करते हैं-'आऊवा ने आसोप धणियां मोतियां री माळा हो।' यानी आऊवा और आसोप के शासकों को मोतियों की माला क्योंकि उन्होंने देशहित में अपना सर्वस्व कुर्बान कर दिया। आऊवा के समर में जोधपुर की सेना के प्रमुख ठाकुर अनाड़ सिंह पंवार और राजमल लोढ़ा रहे। सिंघवी कुशलराज और मेहता विजयमल मैदान छोड़ भाग गए। लोकगीतों में सिंघवी कुशलराज की अपकीर्ति व भर्त्सना हुई...क्रांतिकारियों के नेता ठाकुर कुशाल सिंह आऊवा की वीरता की मुक्त कंठ से प्रशंसा हुई। यहीं से लोक कहावत प्रचलित हुई- 'नीलो घोड़ो फेरतो भाज गयो कुसलेस।'

अंग्रेज और मारवाड़ सेना में पराजय के साथ मची भगदड़ का दृश्य आज भी लोक काव्य में जीवंत है। अंग्रेज एजेंट को मौत के घाट उतार कर आऊवा दुर्ग के मुख्यद्वार पर लटका देने का लोक काव्य में उल्लेख है-

'ढोल बाजे चंग बाजे,
भेळो बाजे बांकियों
एजेंट ने ओ मारने
दरवाजे टांकियो
जूझे आऊवो
हे ओ जूझे आऊवो
आऊवो मुलकां में चावो ओ।'

प्रदेश के हर गली-कूचे में गाए जाने वाले इस लोकगीत में आऊवा संघर्ष के प्रति आमजन का आदर भाव प्रकट होता है -

वणिया वाली गोचर मांय कालौ लोग पडियौ ओ
राजाजी रे भेळो तो फिरंगी लडियो ओ
काली टोपी रो
हां रे काली टोपी रो। फिरंगी फैलाव कीधौ ओ
काली टोपी रो
बारली तोपां रा गोळा धूडगढ़ में लागे ओ
मांयली तोपां रा गोळा तम्बू तोड़े ओ
झल्ले आऊवौ
मांयली तोपां तो झूटे...आड़ावली धूजै ओ
आऊवा वालौ नाथ तो सुगाली पूजै ओ
झगड़ौ आदरियौ
हां रे झगड़ौ आदरियौ...आऊवौ झगड़ा में बांकौ ओ

झगड़ौ आदरियौ
राजाजी रा घोड़लिया काळां रै लारे दोड़ै ओ
आऊवौ रा घोड़ा तो पछाड़ी तोड़े ओ
झगड़ौ होवण दो
हां रे झगड़ौ होवण दो, झगड़ा में थारी जीत व्हैला ओ
झगड़ौ होवण दो

दोहों में समाया इतिहास

आऊवा का स्वतंत्रता संग्राम लोक कंठों में आज भी जीवंत है। दोहों में हम उस महान् इतिहास को बांच सकते हैं –

चवदा उगणिसे चढै, जे दळ आया जांण।
रह्या आऊवे खेत रण, पुतलिया पहचाण।।

अर्थात् संवत 1914 (सन् 1857) में अंग्रेज आऊवा पर फिरंगी चढ़ आए। वे युद्ध में बुरी तरह हार गए। जिसने भी आऊवा का सामना करने का दुस्साहस किया उनको अपने प्राणों से हाथ धोने पड़े। आऊवा के मैदान में ये जो पत्थरों की मूर्तियां गढ़ी हुई हैं वे उनकी स्मृति शेष रह गई हैं कि आऊवा पर चढ़कर आए थे।

हुआ दुखी हिन्दवाण रा, रुकी न गोरां राह।
विकट लड़ै सहियो विखो, वाह आऊवा वाह।।

यानी गोरे हिंदुस्तान में आए और सभी रास्तों से होकर उन्होंने देशभर में फैलना शुरू कर दिया। उनकी राह कौन रोके? सारा भारतवर्ष दुखी हो चुका है, लेकिन आऊवा ने तमाम मुसीबतें झेलकर भी गोरों का मुकाबला किया। धन्य है आऊवा के वासी। आजादी के लिए संघर्ष करने वाले वीरों का ऐसा ही सम्मान होता है।

फिर दोळा अळगा फिरंग, रण मोळा पड़ राम।
ओळा नह ले आऊवो, गोळा रिठण गाम।।

मतलब यह कि फिरंगियों ने जिस बड़ी तेजी से आऊवा गांव को घेरा, उनको युद्ध का मैदान छोड़कर उसी गति से वापस लौटना पड़ा। पराजय से उनका पानी उतर गया। युद्ध से डरकर घरों में दुबकने वाले लोग यहां नहीं हैं। यह आऊवा है...युद्ध में कुशल...मरने के लिए हरदम तत्पर।

फजरां नेजा फरकिया, रजरो तोपां गाज।
नजरां गोरां निरखिया, अजरां परख आज।।

अर्थात् सूर्योदय के साथ ही भालों की तीखी अणियां चमक उठी। तोपों की गर्जना के बीच भारतीय रणबांकुरे बेखौफ लड़ते रहे। रणक्षेत्र से पीठ दिखाकर भागते हुए अंग्रेज सिपाही दिख रहे हैं। बहादुरों की यही पहचान है। आखिर गोरों ने भी अपनी आंखों से भारत की वीरता देख ली है।

घुड़ला बण घूमे घणां, घट बहु लागा घाव।
कटिया फीकर काळजा, आंतड़िया पग आव।।

यानी यह स्वाधीनता संग्राम है...आजादी के लिए लड़ते हुए मौत जिंदगी से भी श्रेष्ठ है। भालों से वीरों की देह छलनी हो गई है। देह से खून के फव्वारे छूट रहे हैं...खून से सनी आंतड़ियां लटक गई हैं लेकिन रणबांकुरे मुस्कुराते हुए युद्ध कर रहे हैं। आखिर यह आजादी की जंग है...इसमें हंसते-हंसते प्राणों की आहुति देने में संकोच कैसा?

अजंट अजको आवियो, ताता खड़ै तोखार।
काळा भिडिया किड़कने, धीव लियो खग धार।।

अर्थात् अंग्रेजों का पॉलिटिकल एजेंट अहंकारवश आऊवा पर चढ़ आया है...शान के साथ घोड़े पर सवार होकर वह बढ़ा चला आ रहा है। काले सिपाही (भारतीय) गोरों पर टूट पड़े हैं...तलवारों के प्रहार से दुश्मन के टुकड़े करने लगे हैं।

फीटा पड़ भागा फिरंग मेसन अजंट मराय।
घाले डोळी घायलां, कटक घणे कटवाय।।

अर्थात् बेशर्मे गोरे युद्ध के मैदान से भाग खड़े हुए हैं। उनका लीडर एजेंट मेसन मारा गया। उसके मरते ही निर्लज्ज होकर अंग्रेज भाग छूटे। फिरंगियों के घायल सिपाही डोलियों में भरे जा रहे हैं। उनकी सेना आऊवा पर चढ़ाई करने आई और बुरी तरह काट डाली गई।

फिरिया छह फिरंगण रा, थरहरिया लखथाट।
करिया जुध खुसियाळ सूं, मरिया आळ माट।।

अर्थात् अंग्रेजों की सेना को युद्ध के मैदान में पीछे हटना पड़ा। आऊवा की फौजों के सामने लाखों की अंग्रेज सेना थर-थर कांपने लगी। जिसने भी कुशाल सिंह आऊवा से युद्ध किया, वह मारा गया। जो कुशाल सिंह से युद्ध करता है उसे मरना ही पड़ता है।

प्रसणा करवा पाधरा, घट री काढ़ण छूंछ।
क्रोधिला खुसियाल री, मिलै भुंहारा मूंछ।।

यानी दुश्मनों को सीधा करने के लिए ही कुशाल सिंह क्रोधित है...उनकी भौंहे तनी हुई और मूंछों पर ताव है। दुश्मन को परास्त कर हृदय शांत करने के लिए कुशाल सिंह गुस्से में है...उनकी भुजा फड़क रही है।

उडंडा वागां ऊपड़े, तेग झड़ै जण तंत।
कर मीठी खुसियाळ सूं, कुशल माना जो कंत।।

यानी रणक्षेत्र में सरपट दौड़ते घोड़ों की लगाम खींची जा रही है। खनखनाती तलवारें चमक रही हैं। गोरे सिपाहियों की पत्नियां अपने सुहाग की खैर मांग रही हैं...कह रही है कि कुशाल सिंह से युद्ध नहीं करने में ही खैर है...प्रियतम! तुम कुशाल सिंह का सामना करने जा रहे हो, किंतु भलाई उनसे मित्रता करने में ही है।

काळा सूं मिल खुसळसी, टणके राखी टेक।
है ठावो हिंदवाण में, ओ आऊवो एक।

अर्थात् अंग्रेजों को देश से खदेड़ने के लिए ठाकुर कुशाल सिंह ने भारतीय सिपाहियों को संगठित किया। देश को बचाने के लिए स्वाधीनता संग्राम में अपना अनूठा योगदान दिया। उन्होंने देशहित में अपना सर्वस्व त्याग कर देश की आन-बान-शान को कायम रखा...इसीलिए आऊवा देश का प्रतिष्ठित गांव है।

घन धोरां तोपां घुरै, बजै हाक बिकराळ।
लूहर ले अछरां लखो, कबड्डी खेले काळ।।

अर्थात् यह स्वाधीनता समर है। ये आजादी के सिपाही हैं। तोपों की गर्जना से रणक्षेत्र में विकरालता का माहौल पैदा हो गया है। ऐसा लग रहा है जैसे यमराज के दूत कबड्डी खेलने लगे हों। आसमान की अप्सराओं नाचो...जमकर नाचो...खुशी में लूरें लो...वीर सिपाहियों की

वीरता को जी भरकर निहारो।

थिर रण अरियां योगणो, नधपुर पुगो नाम।
आऊवो खुसियाल इल, गावे गामो गाम।।

यानी युद्ध के मैदान में अंग्रेजों के छक्के छुड़ा देने के बाद आऊवा की यशकीर्ति लंदन तक फैल गई है। आऊवा के कुशाल सिंह की शौर्य गाथा गांव-गांव में गाई जाने लगी...वे देश के सिपाही हैं...देश के लिए दुश्मन से लड़े।

आऊवा राजस्थान ही नहीं भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का वह गौरवमयी इतिहास है जिसमें राजपूताने में स्वतंत्रता सेनानियों के रूप में क्रांति का स्वर्णिम इतिहास लिखा। तारीखवार तब के आंदोलन को आज भी याद करेंगे तो स्वतंत्रता का इतिहास रोंगटे खड़े करेगा।

तारीखों के आईने में आऊवा का संघर्ष

8 सितंबर, 1857 : बिठोड़ा का युद्ध

आसोप के ठाकुर शिवनाथ सिंह, आलणियावास के ठाकुर अजीत सिंह, गुलर के ठाकुर बिशन सिंह आदि अपने साथियों के साथ आऊवा पहुंचे। बिठोड़ा में युद्ध हुआ। युद्ध में जोधपुर के किलेदार अनाड़ सिंह मारे गए...अंग्रेज और मारवाड़ की सेना भाग खड़ी हुई। बिठोड़ा के युद्ध में ठाकुर कुशाल सिंह आऊवा के नेतृत्व में क्रांतिकारी विजयी हुए। इससे क्रांतिकारियों के हौसले बुलंद हुए।

18 सितंबर, 1857 : चेलावास का युद्ध

राजपूताना के एजीजी सर पेट्रिक लॉरेन्स और मारवाड़ के पॉलिटिकल एजेंट मॉक मेसन ने अंग्रेज और मारवाड़ सेना के साथ आऊवा पर चढ़ाई की। चेलावास में क्रांतिकारियों के दल और अंग्रेज-मारवाड़ सेना के बीच घमासान हुआ। क्रांतिकारियों के सामने अंग्रेज-मारवाड़ की सेना टिक नहीं पाई। क्रांतिकारियों ने मॉक मेसन को मौत के घाट उतार कर उसका सिर आऊवा के किले के मुख्यद्वार पर लटका दिया।

पेट्रिक लॉरेन्स मैदान छोड़कर भागने लगा तो अंग्रेज-मारवाड़ सेना भी भाग खड़ी हुई। इस युद्ध को गोरे-काले का युद्ध भी कहा जाता है। इस जीत से उत्साहित क्रांतिकारी शिवदान सिंह आसोप के नेतृत्व में दिल्ली कूच किया लेकिन अंग्रेज पलटन ने उनकी राह रोक दी।

20 जनवरी, 1858 : आऊवा का युद्ध

अंग्रेजों ने अपनी हार का बदला लेने के लिए भारत के तत्कालीन गवर्नर लॉर्ड कैनिंग ने कर्नल होम्स के नेतृत्व में एक सेना आऊवा भेजी। 1857 की क्रांति की विफलता के बाद क्रांतिकारी कमजोर पड़ गए थे। कई क्रांतिकारी भूमिगत हो गए थे। मौका देखकर अंग्रेज सेना ने आऊवा पर हमला कर दिया। आऊवा के ठाकुर कुशाल सिंह ने अंग्रेज सेना का डटकर मुकाबला किया लेकिन संख्याबल बहुत कम होने के कारण युद्ध में पराजय झेलनी पड़ी। युद्ध में कुशाल सिंह को पराजय झेलनी पड़ी। उनको कोठारिया के राव जोधसिंह के पास शरण लेनी पड़ी।

8 अगस्त, 1860 : संघर्ष...आत्मसमर्पण

ठाकुर कुशाल सिंह आऊवा को अंग्रेजों के कब्जे से छुड़ाने के लिए संघर्ष करते रहे लेकिन संघर्ष करते-करते 8 अगस्त, 1860 में उन्होंने नीमच में अंग्रेजों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। उन पर अंग्रेजों ने मुकदमा चलाया। मेजर टेलर की अध्यक्षता में गठित जांच आयोग ने उनको निर्दोष माना। जांच आयोग की रिपोर्ट के आधार पर 10 नवंबर, 1860 को उनको रिहा कर दिया गया। मेवाड़ में वर्ष 1864 में उनका देहांत हो गया।

1868 : बेटे ने फिर जीता आऊवा

ठाकुर कुशाल सिंह के देहांत के बाद उनके बेटे देवीसिंह ने आऊवा को अंग्रेजों के कब्जे से मुक्त करवाने के लिए प्रयास शुरू किए। उन्होंने वर्ष 1868 में पोकरण, कुचामन, नीमच, रायपुर, रास, खेजड़ला तथा चंडावल के जागीरदारों की मदद से आधी रात को आऊवा के दुर्ग पर हमला कर दिया। एकाएक हुए इस हमले से अंग्रेज सेना भाग खड़ी हुई। उल्लेखनीय है कि क्रांति में शामिल आऊवा, आसोप, गूलर, रूपनगर, बंजावास लांबिया, बांता, भिवालिया, बादसा, राजोदा, सोनई, रुदावास, सपूनी, सोवानी, सेला और नैनियावास सहित कई जागीरदारों को बेदखल कर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया था।

दो दिन सुनवाई, 24 को मौत

पहले स्वाधीनता संग्राम की विफलता के बाद ब्रिटिश हुकूमत दमन पर उतर आई। आऊवा में स्वतंत्रता सेनानियों के गढ़ को खत्म करने के लिए 24 जनवरी, 1858 को 120 सैनिकों को गिरफ्तार किया था। दो ही दिन में 25 जनवरी, 1858 को कोर्ट में 24 स्वतंत्रता सेनानियों को मृत्यु दंड की सजा सुनाई गई। उन्हें एक साथ लाइन में खड़ा करके तोपों से उड़ाकर मौत के घाट उतार दिया गया। यह पहला ऐसा मामला था जिसमें इतने कम समय में किसी को मौत की सजा दी गई हो।

पहले स्वाधीनता संग्राम में आऊवा के योगदान को याद रखने के लिए 1857 क्रांति पेनोरमा का निर्माण करवाया। इसमें आऊवा के स्वर्णिम इतिहास के साथ समूचे राजस्थान का गौरवशाली इतिहास दर्शाया गया। आऊवा पर कब्जा करने के बाद ब्रिटिश हुकूमत ने मात्र दो दिन की न्यायिक प्रक्रिया पूरी कर 24 क्रांतिकारियों को मौत के घाट उतार दिया था। ब्रिटिश हुकूमत की इस निर्ममता को क्रांति पेनोरमा में दर्शाया गया है।

सुगाली माता की प्रतिमा से भी डरने लगे थे अंग्रेज

यहीं मारवाड़ के आऊवा ठिकाने के किले में एक दुर्लभ मूर्ति सुगाली माता की प्रतिष्ठापित थी। सुगाली माता आऊवा की कुलदेवी रही है। काले पत्थर से निर्मित यह देवीप्रतिमा वर्ष 1857 के स्वाधीनता संग्राम में स्वतंत्रता सेनानियों की प्रेरणास्रोत भी रही थी। कहा जाता है कि स्वतंत्रता सेनानी अपनी गतिविधियां इस देवी के दर्शन कर प्रारंभ करते थे। आऊवा पर कब्जा करने के बाद अंग्रेज सुगाली माता की प्रतिमा से भी डरने लगे थे। उनको भय था कि देवी के चमत्कार से उनकी शक्ति कम हो रही है। भयभीत अंग्रेजों ने महाविकराल मां शक्ति की इस प्रतिमा को खंडित करके आऊवा के किले से हटा दिया। अंग्रेज इस मूर्ति को पहले माउंट आबू ले गए और वहां से 1908 में अजमेर में राजपूताना म्यूजियम खुलने पर देवी की यह मूर्ति अजमेर म्यूजियम में स्थापित कर दी गई, जिसे आजादी के बाद पाली म्यूजियम में रखा गया। ●

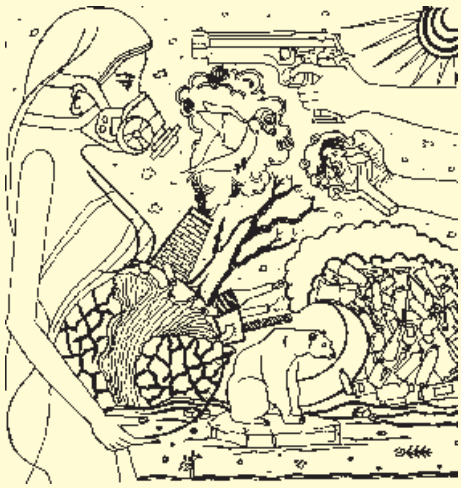

विश्व की सबसे बड़ी ड्राइंग

राजस्थान गौरवान्वित

– अविनाश आचार्य

गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स वह खिताब है जिसमें नाम सम्मिलित होना विश्व गौरव में शुमार होना है। हाल ही में राजस्थान के बीकानेर जिले की मेघा हर्ष का नाम इस वर्ल्ड रिकॉर्ड में सम्मिलित हुआ है। मेघा ने विश्व की सबसे बड़ी ड्राइंग बनाकर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करवाया है। मेघा ने बीकानेर बॉयज स्कूल में बड़े कैनवास पर लगातार प्रतिदिन 7 घंटे निरंतर ड्राइंग बनाने का कार्य किया। रंग-रेखाओं के साथ महिला सशक्तीकरण, महिला सुरक्षा से संबद्ध विषयों के साथ प्रकृति और जीवन के सरोकारों को चित्रों में रूपान्तरित कर विश्व की सबसे बड़ी ड्राइंग ही नहीं बनाई बल्कि यह संदेश भी विश्वभर को दिया कि चाह हो तो कोई भी राह कठिन नहीं।

इससे पहले विश्व की सबसे बड़ी ड्राइंग बनाने का विश्व खिताब साइप्रस के एलेक्स के नाम था। एलेक्स ने 59 गुना 59 फीट की ड्राइंग बनायी थी और मेघा ने 70 बाई 70 फीट ड्राइंग बनाकर विश्व की सबसे बड़ी ड्राइंग बनाने का खिताब प्राप्त किया। बड़े आकार की यह ड्राइंग टिकाऊ विकास लक्ष्यों के तहत महिला सुरक्षा से संबद्ध विषय पर यूनाइटेड नेशन्स द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के अंतर्गत बनाई गई है। मेघा इंजीनियर हैं और उसकी रुचि आरंभ से ही चित्रकला में रही है। गिनीज बुक से पहले इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में भी उसकी कला को दर्ज किया गया था। इससे पहले 'मिनिस्ट्री ऑफ माइक्रो, स्माल एण्ड मिडियम एन्टरप्राइजेज' की तरफ से दिल्ली के प्रगति मैदान में 'इंटरनेशनल एक्सपो' में भी उसकी कला प्रदर्शनी लगाई गई थी। इसके लिए उन्हें उद्यमिता सम्मान से भी भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया था।

मेघा महिला सशक्तीकरण के लिए भी अपने कई कार्य कर रही हैं। उसने ऐसे कलाकारों को जोड़ने की पहल की है जो पूरी लगन और निष्ठा से कुछ नया करने का जज्बा रखते हैं। ऐसे कलाकारों के लिए भी वह प्रोत्साहन देने का कार्य कर रही हैं जिन्हें किसी कारण से अब तक अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का अवसर नहीं मिला है। इसके लिए उसने एक वेबसाइट भी बनाई है और इसके जरिए वह देशभर के कलाकारों को एक मंच प्रदान कर रही हैं।

कहते हैं, कुछ नया करने का जज्बा हो और अपने सपनों को सच करने के लिए पूरी लगन हो तो सफलता मिलती ही मिलती है। मेघा बचपन से ही मेधावी रही हैं, साथ ही सदा लीक से हटकर नया कुछ करने की उसकी सोच की ही परिणति है कि उसने विश्व की सबसे बड़ी ड्राइंग बनाने का विश्व रिकॉर्ड अपने नाम दर्ज किया है। राजस्थान की इस बेटी की इस विश्व रिकॉर्ड उपलब्धि के लिए पूरा प्रदेश गौरवान्वित है। ●

गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड

गिनीज ब्रेवरीज में काम करने वाले ह्यूज बीवर ने सन् 1951 में एक दिन ऐसा पक्षी देखा जो बहुत तेजी से उड़ रहा था। उन्होंने इसके बारे में जानने का प्रयास किया और यह पता लगाने के लिए बहुत सारी किताबें देखी कि आखिर यूरोप का सबसे तेज उड़ने वाला पक्षी कौन सा है। बहुत सारी किताबें उलटने के बाद भी उन्हें अपनी जिज्ञासा का उत्तर नहीं मिला।

अंतत: 1954 में उन्हें अपनी जिज्ञासा का जवाब एक किताब में मिला परन्तु यह भी कोई बहुत प्रामाणिक उत्तर नहीं था। इस पूरी घटना से ह्यूज बीवर के मन में यह बात आई कि कई लोगों के मन में इस तरह के प्रश्न उठते होंगे और उनका उत्तर न मिलने पर इन्हें कितनी निराशा होती होगी।

ह्यूज ने यह विचार अपने मित्रों से साझा किया। इसी दौरान उन्हें नोरिस और रॉस मॉक्विटर नाम के दो युवक मिले जो लंदन में इसी तरह के अचरज भरे तथ्यों का पता लगाने वाली एजेंसी के लिए काम करते थे। तीनों ने मिलकर 1955 में दुनिया की पहली गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स निकाली। धीरे-धीरे यह किताब लोगों को इतनी पसंद आने लगी कि इसकी प्रतियाँ हर साल बढ़ती गईं। आज इस रिकॉर्ड बुक में नाम दर्ज करवाने के लिए दुनियाभर के लोग उत्सुक रहते हैं और तरह-तरह के काम करते हैं।

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

#राजस्थान_सतर्क_है

"जीवन के साथ आजीविका भी चल सके इसलिए अनलॉक जरूरी है। हमारी छोटी सी लापरवाही कोरोना संक्रमण बढ़ा सकती है। कोरोना से घबराएं नहीं, सभी सावधानियों का पालन करें। सरकार कोरोना को हराने के लिए प्रतिबद्ध है।"

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

कोरोना महामारी से जीवन रक्षा के लिए

क्या करें ✓

- साबुन से बार-बार हाथ धोएं
- बाहर निकलें तो मास्क जरूर पहनें
- बुखार/खांसी/सांस की तकलीफ पर अस्पताल जाएं
- एक-दूसरे से 2 गज दूरी बनाएं रखें
- रोगी एवं जरूरतमंदों की सहायता करें
- होम/संस्थागत क्वारंटीन सलाह का पालन करें

क्या नहीं करें ✗

- सोशल मीडिया के भ्रामक संदेशों पर ध्यान न दें
- हाथ नहीं मिलाएं, नमस्ते अपनाएं
- अनावश्यक यात्रा नहीं करें
- सार्वजनिक स्थानों पर नहीं थूकें
- भीड़ व समारोह से बचें
- बुजुर्ग/बच्चे/गर्भवती/गंभीर रोगी घर से न निकलें

कोरोना खत्म नहीं हुआ है – बचाव के लिए आपकी सावधानी व सहयोग जरूरी है

मेडिकल हैल्पलाइन 104/108 | कोरोना वॉर रूम 181 | सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

#राजस्थान_सतर्क_है

दूरदर्शी
सोच के धनी...

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

कोरोना महामारी से प्रभावी मुकाबले में संचार तकनीक की बड़ी भूमिका रही। यह देश में संचार क्रांति की नींव रखने वाले स्व. श्री राजीव गांधी के कारण ही संभव हो पाया। देश का पंचायतीराज तंत्र भी उनकी व्यापक सोच से ही मजबूत हुआ है। आईये, इस सद्भावना दिवस पर हम 21वीं सदी के स्वप्नदृष्टा स्व.श्री राजीव गांधी जी की दूरगामी सोच को नमन करें।

भारत रत्न एवं भारत के पूर्व प्रधानमंत्री

स्व. श्री राजीव गांधी

जन्मदिवस-20 अगस्त (1944-1991)

सद्भावना दिवस पर शत्-शत् नमन

राजस्थान संवाद

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

Postal Regd. No. Jaipur City/413/2020-22
Registered with Registrar of Newspapers of India under R. No. 56175/1991

अमर जवान ज्योति पर शहीदों को श्रद्धांजलि

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त को अमर जवान ज्योति पर पुष्पचक्र अर्पित कर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर सेना के अधिकारी, पूर्व सैनिक तथा शहीदों के परिजन एवं वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित थे।

अमर जवान ज्योति का निर्माण उन सैनिकों की शहादत और बहादुरी को याद करने के लिए किया गया था, जिन्होंने देश की खातिर अपनी जान की बाजी लगा दी। सवाई मानसिंह स्टेडियम के प्रवेशद्वार के पास अमर जवान ज्योति स्वाधीनता सेनानियों के बलिदान के प्रति स्वयमेव हमें नतमस्तक करता है।

#DIPRRajasthan

प्रकाशक व मुद्रक - सूचना एवं जनसम्पर्क आयुक्त, महेन्द्र सोनी द्वारा सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग के लिए, शासन सचिवालय, जयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित
सम्पादक- डॉ. राजेश कुमार व्यास • मैसर्स रेनबो ऑफसेट प्रिन्टर्स, बी-3, सुदर्शनपुरा, जयपुर से मुद्रित, 'राजस्थान सुजस'-पृष्ठ संख्या 60, मूल्य 20 रुपये/ 60,000 प्रतियां